॥ओ३म्॥ ● प्रत्येक माह दिनांक २५ को प्रकाशित एवं २८ को प्रेषित

वैदिक संसार

हिन्दी मासिक

● वर्ष : १० ● अंक : ४ ● २५ फरवरी २०२१, इन्दौर (म.प्र.) ● मूल्य : २५/- ● कुल पृष्ठ : ४०

उस देश की, उन व्यक्तियों की अत्यन्त दुर्दशा क्यों नहीं होगी जो एक परमात्मा को छोड़कर इतर की उपासना करते हैं। -महर्षि दयानन्द सरस्वती

प्रभु! तेरी अद्भुत विलक्षण न्यायकारी व्यवस्था है...

मुस्लिम परिवार में जन्मे, पले-बढ़े तथा अशिक्षित होने के उपरान्त भी ईश्वर तथा ईश्वरीय वाणी वेद के सच्चे भक्त, वेदानुकूल दर्शन शास्त्रों के प्रकाण्ड विद्वान, दर्शन योग महाविद्यालय- आर्यवन के जन्मदाता तथा आचार्य ज्ञानेश्वरजी, स्वामी विवेकानन्दजी, स्वामी ऋतस्पतिजी, स्वामी मुक्तानन्दजी, स्वामी ब्रह्मविद्यानन्दजी, स्वामी शान्तानन्दजी, आचार्य वीरेन्द्र गुरुजी, आचार्य सत्यजीतजी, आचार्य सोमदेवजी, आचार्य सन्दीपजी, आचार्य दिनेशजी, आचार्य नवानन्दजी, आचार्य शीतलजी जैसी अनेक राष्ट्रीय-अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त महान् विभूतियों से वैदिक धर्म का अलंकृत कर हजारों-लाखों मनुष्यों के जीवन में 'क्रियात्मक योग' का प्रकाश प्रकाशित कर आर्य जगत् पर महान उपकार करने वाली पुण्यात्मा का

महा प्रयाण

महाशोक!
अपूरणीय क्षति

विनम्र
श्रद्धांजलि

स्वामी सत्यपति सरस्वती, दर्शनाचार्य

दर्शन योग महाविद्यालय, आर्यवन, रोजड़, जिला अरवल्ली (गुजरात)

निधन : ४ फरवरी २०२१

वैदिक संसार के सम्माननीय संरक्षक महानुभाव

श्री मोहनलालजी भाट
वेद ज्ञान पिपासु
लस्सानी दोयम, अजमेर

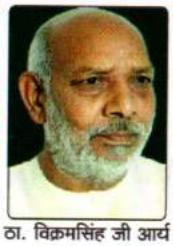
ठा. विक्रमसिंह जी आर्य
अध्यक्ष
राष्ट्र निर्माण पार्टी, दिल्ली

श्री नेमीचन्द जी शर्मा
भामाशाह-राज सरकार
गान्धीधाम (गुजरात)

श्री सुरेशचन्द्र जी आर्य
प्रधान सा.आ.प्र. सभा
अहमदाबाद (गुजरात)

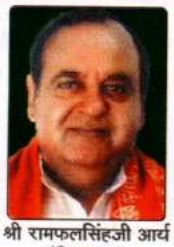
श्री रामफलसिंहजी आर्य
वैदिक प्रवक्ता
दिल्ली

अधि.रतनलाल जी राजौरा
उपमन्त्री- आर्य समाज
निम्बाहेड़ा (राज.)

श्री नरेश जी जांगिड
वरिष्ठ समाजसेवी
जोधपुर (राजस्थान)

आ. आनन्द जी पुरुषार्थी
अ. वैदिक प्रवक्ता
होशंगाबाद (म.प्र.)

आचार्य वाचोनिधिजी आर्य
वरिष्ठ समाज सेवी
गान्धीधाम, गुजरात

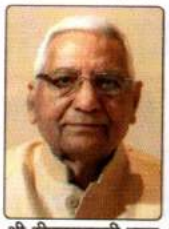
श्री दीनदयालजी गुप्ता
वरिष्ठ समाज सेवी
कोलकाता (प. बंगाल)

श्री विनोद जी जायसवाल
वरिष्ठ समाजसेवी
रायपुर (छत्तीसगढ़)

श्री वेदप्रकाश जी आर्य
आई.ओ.सी.एल.
सवाई माधोपुर (राज.)

श्री लेखराज जी शर्मा
टी.पी.टी. कॉन्ट्रेक्टर
भरतपुर (राज.)

श्री अनिल जी शर्मा
युवा समाज चिन्तक
इन्दौर (म.प्र.)

श्री नानूराम जी जांगिड
जा.ब्रा. जिलाध्यक्ष
धुलिया (महाराष्ट्र)

श्री रामभजनजी आर्य
वरिष्ठ समाजसेवी
बूढ़ा, मन्दसौर (म.प्र.)

श्री रमेशचन्द्रजी भाट
वैदिक ज्ञान पिपासु
रावतभाटा (राज.)

कर्नल चन्द्रशेखर शर्मा
वेद ज्ञान पिपासु
उदयपुर (राज.)

श्री ओमप्रकाशजी शर्मा
से.नि. सूबेदार मेजर
आगरा (उ.प्र.)

श्री अर्जुन जी झलोया
वरिष्ठ समाजसेवी
मन्दसौर (म.प्र.)

श्री महेन्द्र जी आर्य
वरिष्ठ समाजसेवी
अहमदाबाद (गुजरात)

श्री समाधान जी पाटिल
वैदिक धर्मनिष्ठ युवा
जलगाँव (महाराष्ट्र)

आचार्य सोमदेवजी आर्य
वैदिक धर्मोपदेशक
गुरुकुल मलारना चौड़

श्रीमती सुमित्रा जी शर्मा
योग प्रशिक्षिका
अहमदाबाद (गुजरात)

श्री पूनाराम जी बरनेला
बरनेला चेरिटेबल ट्रस्ट
जोधपुर (राजस्थान)

श्री सीताराम जी शर्मा
वरिष्ठ समाजसेवी
अहमदाबाद (गुजरात)

सर्वेशजी सिद्धान्ताचार्य
वैदिक शिक्षाविद्
गुरुकुल केहलारी (म.प्र.)

श्री गोविन्दरामजी आर्य
वैदिक धर्म प्रचारक
देपालपुर (इन्दौर)

श्री मोहनलालजी दशोरा
चिन्तनशील साहित्यकार
नारायणगढ़ (म.प्र.)

श्री रमेशचन्द्रजी अग्रवाल
ऋषि भक्त
कोलकाता (प.बंगाल)

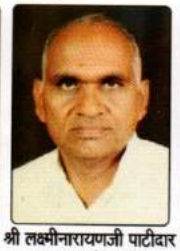
श्री लक्ष्मीनारायणजी पाटीदार
संभाग प्रभारी, उज्जैन
विक्रम नगर (मौलाना), म.प्र.

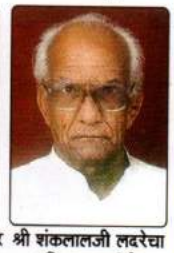
श्री शंकलालजी लदरेचा
वरिष्ठ समाजसेवी
बीकानेर (राज.)

(पंजाब का एकमात्र कन्या गुरुकुल)

महात्मा सत्यानन्द मुंजाल आर्य कन्या गुरुकुल

शास्त्री नगर, लुधियाना (पंजाब) (चलभाष : ९८१४६२९४१०)

प्रवेश सूचना : सत्र २०२१-२२

कक्षा छठी (आयु ९ से ११ वर्ष) एवं कक्षा सातवीं (आयु १० से १२ वर्ष) कक्षा में कन्याओं के प्रवेश हेतु नियमावली एवं पंजीकरण पत्र (मूल्य केवल १०० रु.) भरकर ३१.३.२०२१ तक गुरुकुल के कार्यालय में जमा करवाएँ।
(पंजीकरण पत्र डाक द्वारा भी प्राप्त किये जा सकते हैं।)

कन्याओं की लिखित प्रवेश परीक्षा ४ अप्रैल २०२१ रविवार को प्रातः ८.०० बजे होगी।

मोहनलाल कालड़ा
(मैनेजर)

सफल कन्याओं का साक्षात्कार एवं स्वास्थ्य परीक्षण भी उसी दिन होगा।

जो बगैर भूख के खाते हैं और जो भूख लगने पर भी नहीं खाते, वे रोग सागर में गोता लगाते हैं। –महर्षि दयानन्द सरस्वती

प्राणी मात्र के हितकारी वैदिक धर्म का सजग प्रहरी

वैदिक संसार

आरएनआई–एमपीएचआईएन
२०१२/४५०६९
डाक पंजीयन : एमपी/आईडीसी/२०२१–२३
वर्ष : १०, अंक : ४
अवधि : मासिक, भाषा : हिन्दी
प्रकाशन आंग्ल दिनांक : २५ फरवरी, २०२१
आर्ष तिथि: फाल्गुन मास, शुक्ल पक्ष, त्रयोदशी तिथि
सृष्टि सम्वत् : १,९७,२९,४९,१२२
शक सम्वत् : १९४३
विक्रम सम्वत् : २०७७, दयानन्दाब्द : १९७

- स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक
  सुखदेव शर्मा, इन्दौर
  ०९४२५०६९४९१
- सम्पादक
  गजेश शास्त्री, इन्दौर (म.प्र.)
  (अवैतनिक)
- पत्र व्यवहार का पता
  महर्षि दयानन्द विद्यार्थी आवास आश्रम
  ४७, जांगिड भवन, न्यू साठ मोहल्ला
  कालिका माता रोड, बड़वानी (म.प्र.)
  पिन–४५१५५१

वैदिक संसार का आर्थिक आधार

संरक्षक (१५ वर्ष)	२५,०००/–
आजीवन सहयोग (१५ वर्ष)	२,५००/–
पंचवार्षिक सहयोग :	१,१००/–
त्रैवार्षिक सहयोग	७००/–
वार्षिक सहयोग	३००/–
एक प्रति	२५/–
अन्य सहयोग	स्वैच्छानुसार

बैंक खाता धारक– वैदिक संसार
भारतीय स्टेट बैंक
शाखा : ओल्ड पलासिया, इन्दौर
चालू खाता क्र. ३२८५९५९२४७९
आईएफएससी : एसबीआईएन०००३४३२

अध्यात्म के विषय में व्याप्त अन्धकार को दूर करने एवं वेदोक्त ज्ञान के प्रकाश को प्रकाशमान करने में सहायक ज्योति पुंज : 'वैदिक संसार'

अनुक्रमणिका

विषय	शब्द संग्रहकर्ता	पृष्ठ क्र.
वेदमन्त्र : भावार्थ एवं वैदिक संसार पत्रिका के उद्देश्य	वैदिक संसार	०४
...आर्यावर्त भू–मण्डल के महत्वपूर्ण पर्व एवं दिवस	श्री मोहन कृति आर्ष पत्रकम्	०४
अमृतमयी वेदवाणी : साम–अथर्व वेद शतक पुस्तक से	स्वामी शान्तानन्द सरस्वती	०५
क्या यही स्वतन्त्रता है? स्वतन्त्रता को पुन: परिभाषित...	सम्पादकीय	०५
आज के नेता	देशराज आर्य	०६
महान् विभूतियाँ : ...विराट श्री विश्वकर्मा	सत्यप्रकाश आर्य	०७
...नाथूराम शर्मा 'शंकर'	जगदीश प्रसाद आर्य	०९
...महाशय धर्मपाल	डोंगरलाल पुरुषार्थी	११
वैदिक मर्यादा पुरुषोत्तम– श्री रामचन्द्र	पं. नन्दलाल निर्भय	१३
ऋषि की महिमा गाओ तुम	पं. नन्दलाल निर्भय	१३
सत्यार्थ प्रकाश प्रथम समुल्लास काव्य सुधा (गतांक से आगे)	आ. देवनारायण तिवारी	१५
सत्य सनातन वैदिक धर्म– वेद (उद्भव)	पुरुषोत्तमदास गोठवाल	१६
सत्य	मृदुला अग्रवाल	१७
परनिन्दा से बचें	रोहिताश्व जांगिड	१८
विद्यया अमृतमश्नुते	डॉ. सत्यदेव सिंह	
वो ही सच्ची माता है	आर्य पी.एस. यादव	
भारत वर्ष की नींव गाय और गुरुकुलों पर टिकी है	खुशहालचन्द्र आर्य	
आर्य समाज को जीवन्त बनाइये	डॉ. लक्ष्मी निधि	
टंकारा में उतरा त्राता– भू, भुवन–नाभि संधाता	पं. देवनारायण भारद्वाज	
आदि सृष्टि में परमात्मा प्रदत्त वेद ज्ञान	देवकुमार प्रसाद आर्य	
...चेतना को जगाने वाले प्रेरणा स्रोत : महर्षि दयानन्द	पं. उम्मेदसिंह विशारद	
यम–नियम (अष्टांग योग) सीढ़ी बगैर आध्यात्मिक लक्ष्य...	आर्य मोहनलाल दशोरा	
जल प्रदूषण और निराकरण	पं. शिवनारायण उपाध्याय	
वासन्ती नवान्नयेष्टि (होली)	आ. रामज्ञानी आर्य	
सैद्धान्तिक चर्चा–८ (गतांक से आगे)	पं. कमलेश कुमार अग्निहोत्री	
हम मोदीजी एवं सरकार को झुकाएँगे और झुकाकर ही रहेंगे	गोविन्दराम आर्य	
हिन्दी की वर्ण मंजु मंजरी (गतांक से आगे)	चौधरी बदनसिह	
तम्बाकू : एक विष	शिवकुमार	
नवनिर्वाचित राष्ट्रीय प्रधानजी का स्वागत... अभिनन्दन...	वैदिक संसार	

श्री मोहन कृति आर्ष पत्रकम् अनुसार १० गते, मधु मास से १० गते, माधव मास, शक सम्वत् १९४३ तक तथा फाल्गुन मास, कृष्ण पक्ष, द्वितीया तिथि, विक्रम सम्वत् २०७७ से चैत्र मास, कृष्ण पक्ष, तृतीया तिथि, विक्रम सम्वत् २०७८ तक तदनुसार दिनांक १ मार्च से ३१ मार्च, सन् २०२१ तक के आर्यावर्त भूमण्डल के महत्वपूर्ण पर्व एवं दिवस

भारत के एकमात्र वैदिक पंचांग से

१० गते	मधु मास	फाल्गुन कृष्ण द्वितीया	०१ मार्च	क्षय तिथि तृतीया– २९.५८
११ गते	मधु मास	फाल्गुन कृष्ण चतुर्थी	०२ मार्च	चित्रा– १७.०९
१२ गते	मधु मास	फाल्गुन कृष्ण पंचमी	०३ मार्च	रंगपंचमी
१३ गते	मधु मास	फाल्गुन कृष्ण षष्ठी	०४ मार्च	वीरांगना झलकारी बाई पुण्यतिथि
१४ गते	मधु मास	फाल्गुन कृष्ण सप्तमी	०५ मार्च	अनुराधा– २१:२२
१५ गते	मधु मास	फाल्गुन कृष्ण नवमी	०७ मार्च	पूर्वाषाढ़– ३०:१३, सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्सयायन जयन्ती, परमहंस योगानन्द पुण्यतिथि
१७ गते	मधु मास	फाल्गुन कृष्ण दशमी	०८ मार्च	अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस
१९ गते	मधु मास	फाल्गुन कृष्ण द्वादशी	१० मार्च	पंचक प्रारम्भ– १९:३२, सावित्रीबाई फूले पुण्यतिथि
२० गते	मधु मास	फाल्गुन कृष्ण त्रयोदशी	११ मार्च	महाशिवरात्रि
२३ गते	मधु मास	चैत्र शुक्ल प्रतिपदा	१४ मार्च	युगादि 'राक्षस' संवत्सर/संवत्सरेष्टि, पाई दिवस, केन्द्रीय उत्पाद शुल्क दिवस
२४ गते	मधु मास	चैत्र शुक्ल द्वितीया	१५ मार्च	चैतीचन्द, सन्त झूलेलाल जयन्ती, अन्तर्राष्ट्रीय विकलांग दिवस
२५ गते	मधु मास	चैत्र शुक्ल तृतीया	१६ मार्च	पंचक समाप्त– २५:०४, पं. लेखराम तृतीया
२७ गते	मधु मास	चैत्र शुक्ल पंचमी	१८ मार्च	वसन्त पंचमी
२८ गते	मधु मास	चैत्र शुक्ल षष्ठी	१९ मार्च	गुरु हरगोविन्द पुण्यतिथि
२९ गते	मधु मास	चैत्र शुक्ल सप्तमी	२० मार्च	**मेष संक्रान्ति– १५:०८**, वसन्त सम्पात दिन–रात बराबर, सूर्य भोगांश क्रान्ति, शर व विषुवांश सभी शून्य, सूर्य का गोलार्द्ध परिवर्तन (दक्षिणी गोल से उत्तरी गोल में) वसन्त ऋतु का मध्य बिन्दु, वैशाख संक्रान्ति
३० गते	मधु मास	चैत्र शुक्ल सप्तमी	२१ मार्च	विश्व वानिकी दिवस
०१ गते	माधव मास	चैत्र शुक्ल अष्टमी	२२ मार्च	रामनवमी/श्री राम जयन्ती
०२ गते	माधव मास	चैत्र शुक्ल नवमी	२३ मार्च	राममनोहर लोहिया जयन्ती, सुखदेव, राजगुरु व भगतसिंह बलिदान दिवस
०३ गते	माधव मास	चैत्र शुक्ल दशमी	२४ मार्च	पुष्य– २८:५१
०४ गते	माधव मास	चैत्र शुक्ल एकादशी	२५ मार्च	गणेश शंकर विद्यार्थी पुण्यतिथि
०५ गते	माधव मास	चैत्र शुक्ल द्वादशी	२६ मार्च	क्षय तिथि त्रयोदशी– ३०:१४, मघा– २८:३८
०८ गते	माधव मास	चैत्र कृष्ण प्रतिपदा	२९ मार्च	हस्त– २५:४३, चित्रा– २६:२१, गुरु अंगद देव पुण्यतिथि
०९ गते	माधव मास	चैत्र कृष्ण द्वितीया	३० मार्च	गुरु हरकिशन पुण्यतिथि
१० गते	माधव मास	चैत्र कृष्ण तृतीया	३१ मार्च	गुरु अंगददेव जयन्ती

नवीन पंचांग प्रकाशित हो चुका है। अतिशीघ्र मँगवाएँ, लाभ उठाएँ।

किसी भी शंका–समाधान एवं पंचांग प्राप्ति हेतु आ. दार्शनेय लोकेश, ग्रेटर नोएडा (उ.प्र.) से मो. ०९४१२३५४०३६ पर सम्पर्क करें

अन्य स्त्रोतों से प्राप्त मार्च २०२१ माह के कुछ विशेष दिवस

१. शून्य भेदभाव दिवस, विश्व नागरिक दिवस। ३. विश्व वन्य जीव दिवस, विश्व श्रवण दिवस। ४. राष्ट्रीय सुरक्षा दिवस। ६. **पं. लेखराम बलिदान दिवस** (आंग्ल तिथि अनुसार)। १०. सी.आई.एस.एफ. स्थापना दिवस, विश्व किडनी दिवस (मार्च माह का द्वितीय गुरुवार)। ११. धूम्रपान निषेध दिवस (मार्च माह का द्वितीय बुधवार) १५. विश्व उपभोक्ता अधिकार दिवस। १६. राष्ट्रीय टीकाकरण दिवस। १८. राष्ट्रीय आयुध कारखाना दिवस। १९. विश्व निद्रा दिवस। २०. अन्तर्राष्ट्रीय प्रसन्नता दिवस, विश्व गौरैया दिवस, रानी अवन्तीबाई लोधी बलिदान दिवस। २१. विश्व कविता दिवस। २२. विश्व जल संरक्षण दिवस। २३. विश्व मौसम विज्ञान दिवस, वीर हेमू कालानी जयन्ती। २४. विश्व क्षय रोग (टीबी) दिवस, ग्रामीण डाक जीवन बीमा दिवस। २७. विश्व रंगमंच दिवस। **२९. आर्य समाज स्थापना दिवस।** ३०. राजस्थान दिवस, सन्त तुकाराम जयन्ती। ३१. माँ कर्मादेवी जयन्ती, **पं. श्यामजी कृष्ण वर्मा पुण्यतिथि।**

वैदिक संसार के उद्देश्य

- जगत् नियन्ता परमपिता परमात्मा द्वारा मानव की उत्पत्ति के साथ सम्पूर्ण मानव जाति के कल्याणार्थ दिए गए ज्ञान– वेदों की महत्ता को पुनर्स्थापित करने हेतु वैदिक सिद्धान्तों, ऋषि–मुनियों एवं ऋषि दयानन्द प्रणीत सन्देशों को प्रकाशित करना।
- महान् योगी, संन्यासी, महर्षि, अखण्ड ब्रह्मचारी, वेद प्रतिष्ठापक, तत्वज्ञानी, युगदृष्टा, स्वराष्ट्र–प्रेमी, स्वराज्य के प्रथम उद्घोषक, नवजागरण के सूत्रधार, शोषित–पीड़ित वर्ग एवं महिला उद्धारक, समाज सुधारक, खण्डन–मण्डन के प्रणेता, अन्धविश्वास नाशक, पाखण्ड खण्डनी ध्वजा वाहक, आर्य समाज संस्थापक, अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश एवं वेदानुकूल सद्–साहित्य के रचयिता, दयालु, दिव्य, अमर बलिदानी महर्षि दयानन्द सरस्वती के समस्त मानव जाति पर किये गये उपकारार्थ कार्यों को गतिमान बनाए रखने हेतु प्रयत्न करना।
- आमजन में व्याप्त अज्ञानता, धर्मान्धता, अन्धविश्वास, पाखण्ड, कुरीतियों के विरुद्ध जन जागरण कर उन्मूलन हेतु प्रयास करना।
- आर्य (श्रेष्ठ) विद्वान् महानुभावों के मन्तव्यों, सन्देशों का प्रचार–प्रसार कर प्रतिजन को उपलब्ध करवाना।
- आवश्यक सूचनाओं, गतिविधियों, समाचारों को प्रतिजन तक पहुँचाने का प्रयास करना।

अमृतमयी वेदवाणी

साम-अथर्व वेद शतक पुस्तक से

● स्वामी शान्तानन्द सरस्वती
(एम.ए. दर्शनाचार्य)
प्रभु आश्रित कुटिया, सुन्दर नगर, रोहतक (हरियाणा)
सन्त ओधवराम वैदिक गुरुकुल, भवानीपुर (कच्छ), गुजरात
चलभाष : ९९९८५९४८१०, ९६६४६३०११६

कविमग्निमुप स्तुहि सत्यधर्माणमध्वरे।
देवममीवचातनम्।। (११) –साम. पू. १.१.३.१२

शब्दार्थ– कविम् = सर्वज्ञ, **सत्यधर्माणम्** = सत्यधर्मी अर्थात् जिनके नियम सदा अटल हैं, **देवम्** = सदा प्रकाश स्वरूप और सब सुखों के देने वाले, **अमीव–चातनम्** = रोगों के विनाश करने वाले, **अग्निम्** = तेजोमय परमात्मा की, **अध्वरे** = ब्रह्मयज्ञादि में, **उपस्तुहि** = उपासना और स्तुति कर।

विनय : हे प्रभो! आप अनन्त ज्ञानवान तथा काव्यों में सर्वश्रेष्ठ सभी महाकाव्यों का भी महाकाव्य वेद रूपी काव्य के सृष्टा हैं। सभी महाकवियों में भी आप सर्वोपरी हैं, सर्वज्ञ हैं, आपके नियम विधि–विधान सर्वदा–सर्वथा अटल हैं, सारे जड़–चेतन जगत् के पदार्थ आपके बनाए हुए नियम को कभी भी तोड़ नहीं सकते हैं। अपितु ब्रह्माण्ड के सारे लोक–लोकान्तर भी आपके ही बताए नियम में, व्यवस्था में संचालित हो रहे हैं।

हे प्रभु! आप दिव्य स्वरूप, दिव्य गुणों के दाता सदैव अपने भक्तों को दिव्य सुख देने को तत्पर रहते हैं। हे परमात्मा! आप ही समस्त रोगों, विघ्न–बाधाओं तथा आन्तरिक व बाह्य समस्त दु:ख कष्टों, को विनष्ट करने वाले हैं। हे प्रकाश स्वरूप, तेज स्वरूप, ज्ञान स्वरूप परम देव! हम आपके उपासकगण नित्य प्रति श्रद्धापूर्वक भक्तिभाव से प्रेम में मग्न होकर आपकी स्तुति उपासना करते रहें व आपके सान्निध्य में रहकर अपना कल्याण कर सकें, ऐसी शक्ति, सामर्थ्य, ज्ञान विज्ञान हमें प्रदान करें। ■

पद्यार्थ : ***स्वप्रकाश, सर्वज्ञ, नियन्ता, सुखदायक, हर शोक विनाशक।***
चला रहे सारी जगती को, बनकर सुन्दर अटल नियामक।
शक्तिमान उस विमल ईश के, अति निकट हो करें प्रार्थना।
श्रद्धा, भक्ति, प्रेम, नम्रता के सुन्दर पुष्पों से भरें दामना।।

–श्रीमती विमलेश बंसल 'आर्या', दिल्ली

सम्पादकीय

क्या यही स्वतन्त्रता है?

स्वतन्त्रता को पुनः परिभाषित करने की आवश्यकता है

समूचे विश्व ने २६ जनवरी २०२१ को भारत देश की आत्मा कही जाने वाली दिल्ली पर उस दिन जिस दिन को सैकड़ों वर्षों की पराधीनता और असंख्य बलिदानों के पश्चात् विश्व की सबसे बड़ी आबादी के लोकतान्त्रिक [illegible] के रूप में सभी नागरिकों को बगैर किसी भेदभाव के अपने–अपने धार्मिक–सामाजिक–व्यक्तिगत विचारों और कार्यों की अनुपालना की स्वतन्त्रता निर्बाध रूप से प्रदान करते हुए जिस संविधान में इसका उल्लेख किया गया, उस संविधान की स्थापना का दिवस समारोहपूर्वक **'गणतन्त्र दिवस'** के रूप में मनाया जाता है, के दिन स्वच्छन्दता का नंगा नाच देखा।

वसुधैव कुटुम्बकम् तथा विश्व गुरु की धरोहर को संजोए, लोकतान्त्रिक मूल्यों को समर्पित, विश्व को शान्ति का सन्देश देने वाले, लाख भिन्नता तथा स्वयं की संस्कृति–सभ्यता, जीवन मूल्यों के प्रतिकूल होने के उपरान्त भी विरोध करना तो दूर, उफ् तक नहीं करने वाले सहनशील, प्रतिकूल भाषा–भूषा, आहार–व्यवहार, विचारों और संस्कृति को भी अपने आँचल में समेटकर पल्लवित होने देने के अवसर उपलब्ध करवाने वाली सत्य सनातन वैदिक धर्म संस्कृति की हृदय स्थली भू–भाग पर अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता का दुरुपयोग कर यह शर्मनाक कायराना कृत्य समूचे विश्व ने देखा जिससे यह प्रश्न उपजना स्वाभाविक है कि क्या यही स्वतन्त्रता है? क्या इसी के लिए हमारे नौनिहालों ने अपने गरम–गरम लहू की आहूतियाँ स्वतन्त्रता की यज्ञ वेदी पर दी है?

इन प्रश्नों का उत्तर यही होगा– नहीं। आए दिन कभी नागरिकता संशोधन विधेयक, तो कभी किसान आन्दोलन तो कभी अन्यान्य बारह महीने किसी न किसी मुद्दे पर चलने वाले अथवा चलाए जाने वाले आन्दोलन की आड़ लेकर इस तरह सार्वजनिक अन्यों के जान–माल व शासकीय सम्पत्ति को क्षति पहुँचाना हमारी आन–बान–शान के प्रतीक जिस तरंगे को फहराने के लिए हमें सैकड़ों वर्षों तक तप–त्याग करना पड़ा हो, उस तिरंगे की आन–बान–शान को बनाए रखने के संकल्प दिवस के दिन ही उसकी गरिमा के साथ खिलवाड़ करना यह स्वतन्त्रता नहीं, स्वतन्त्रता के नाम पर स्वच्छन्दता है मात्र और मात्र अमानवीय उपद्रव है। हमारी सहनशीलता पर कुठाराघात है, हमारे लोकतान्त्रिक मूल्यों पर प्रहार है।

प्रधानमन्त्री नरेन्द्र मोदीजी ने १० फरवरी २०२१ को राज्यसभा में दिये गये वक्तव्य में सत्य कहा है कि श्रमजीवी, बुद्धिजीवी वर्ग तो अभी तक होते आए हैं, किन्तु एक नया समुदाय आन्दोलनजीवी भी देश में पैदा हो गया है। इनका काम ही है किसी न किसी विषय का बहाना बनाकर आन्दोलन करना। ऐसे तत्व वकीलों का आन्दोलन हो, छात्रों का आन्दोलन हो या मजदूरों का आन्दोलन हो, ये लोग हर जगह नजर आते हैं। ये एक पूरी टोली है। ये आन्दोलन के बगैर जी नहीं सकते। हमें ऐसे लोगों की पहचान करनी होगी और उनसे राष्ट्र की रक्षा करनी होगी। ये परजीवी हैं।

अधिकारों के लिए संघर्ष करना अच्छी बात है, करना भी चाहिये, किन्तु कर्तव्यों को भुला देना भी अच्छी बात नहीं है। अपने साथ–साथ अन्यों

की सुख-सुविधा का ध्यान रखना, देश तथा देश की आन-बान-शान के प्रतीक तिरंगे, लोकतान्त्रिक मूल्यों को अक्षुण्ण रखते हुए चुनी गई सरकार, उसके निर्णयों और संविधान का सम्मान करना प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य है। यह किसी के भी अधिकार से नीचे नहीं हो सकता, ऊपर है और उपर ही रहेंगे और ऊपर रखने वाला ही सच्चा देशभक्त है।

२६ जनवरी को गणतन्त्र दिवस पर देश की आत्मा दिल्ली के लाल किले पर किये गये कृत्य की जितनी भी भर्त्सना की जाये, कम है। ऐसा करने वाले कैसे देशभक्त हो सकते हैं? ऐसे तत्वों से कड़ाई से निपटना होगा। भारत देश कृषि प्रधान देश है। कोई आज कृषक नए उत्पन्न नहीं हो गए। आज तो सरकार ने कृषि विकास के लिए क्या नहीं किया है? वैज्ञानिकों को पूर्णरूप से सहयोग कर कृषि को उन्नत तथा देश को खाद्यान्न के विषय में आत्मनिर्भर बनाया है, नहीं तो एक दिन वह भी था जब भूखों मरने तक की स्थिति थी। अकाल पड़ने पर, अनाज उत्पन्न नहीं होने की स्थिति में कृषकों को लगान चुकाने के लिए अपनी नंगी पीठ पर विदेशी शासकों और उनके मातहतों के कोड़े खाने पड़ते थे और उपरोक्त जो कृषि कानून अथवा अन्य कानून पास किये जाते हैं वे कोई किसी तानाशाह के द्वारा थोपे गए कानून तो हैं नहीं, जनता के द्वारा निर्वाचित जनप्रतिनिधियों द्वारा लोकतान्त्रिक व्यवस्था में निर्धारित मापदण्डों को पूर्ण करने और राष्ट्रपति के द्वारा हस्ताक्षरित होने के पश्चात् बने कानून हैं। **क्या किसी भी कानून से सभी सहमत-संतुष्ट हो सकते हैं?** असहमति होना अलग बात है, किसी कानून का, व्यवस्था का विरोध करना भी अलग बात है किन्तु मुट्ठी भर तत्वों के द्वारा आम जनमानस को भयाक्रान्त कर देना, व्यवस्थाओं को अस्त-व्यस्त कर देना, स्वतन्त्रता अथवा अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता नहीं हो सकती। यह निरी स्वच्छन्दता है जिस पर समय रहते अंकुश लगाया जाना अत्यन्त आवश्यक है। सर से पानी ऊपर चला जाए, उसके पूर्व स्वतन्त्रता अथवा अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता को पुन: परिभाषित किये जाने की आवश्यकता है और स्वतन्त्रता के नाम पर सीमा लांघकर की गई स्वच्छन्दता को आपराधिक श्रेणी के कृत्यों में शामिल करना होगा, विशेषकर उन कृत्यों को जिससे देश की छवि धूमिल होती हो। अन्यों के जान-माल की क्षति होती हो, देश का संविधान तथा आन-बान-शान के प्रतीक तिरंगे की अवमानना होती हो। लोकतान्त्रिक मूल्यों और लोकतान्त्रिक व्यवस्था से चुनी गई सरकार और उसके द्वारा स्थापित व्यवस्था तथा कार्यों पर प्रहार होता हो, शासकीय व्यवस्था-सम्पत्ति को क्षति पहुँचाई जाती हो, ऐसे कृत्यों को देशद्रोह की श्रेणी में लाया जाना आवश्यक है तथा ऐसे कृत्यों में सम्मिलित प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष चाहे वे किसी राजनीतिक दल के सदस्य ही क्यों न हों, सख्ती से निपटना आवश्यक है।

कहा गया है, दण्ड हमेशा जागता रहता है, दण्ड विहीन व्यवस्था दन्त-नख विहीन सिंह के समान है। ■

आज के नेता

पद पाया, माला पहनी और किया नाश्ता चल दिये।
यह नहीं सोचा समाज हित, कितने मसले हल किये।।

नेता बनना हर कोई चाहे, बेशक उसमें दम नहीं,
जिसको चाहे उसको मारे, जरा भी उसको गम नहीं।
समाज में उसको कोई न पूछे लेकिन उसको शर्म नहीं,
सिर फुटौव्वल न करवा दे, तब तक समझे कर्म नहीं।।

एक-दूजे को बहकाकर, फूट डालकर चल दिये।
पद पाया और माला पहनी और किया नाश्ता चल दिये।।१।।

त्याग नाम की चीज नहीं, वे मुफ्त माल की आस करे,
घर से कौड़ी खर्च करे बिन, पद प्रतिष्ठा की आस करे।
जिसके सहारे पद पाया, उसी का सत्यानाश करे,
रातोंरात पलटी मारे, कौन किसका विश्वास करे।।

पास बैठकर अवसर पाकर, अपनों से ही छल किये।
पद पाया और माला पहनी और किया नाश्ता चल दिये।।२।।

नहीं शिक्षा, नहीं दीक्षा, नैतिक मूल्यों का ज्ञान नहीं,
नेता के कर्तव्य क्या होते, उन्हें जरा भी भान नहीं।
सामाजिक सौहार्द का उनको रहता ध्यान नहीं,
संगठन में ही शक्ति है, उनको इसका ज्ञान नहीं।।

जिस थाली में खाया उसी में छेद करके चल दिये।
पद पाया और माला पहनी और किया नाश्ता चल दिये।।३।।

पद पाने की खातिर अब तो, होड़ लगी रहती है,
जी हुजूरी करने वालों की जोड़ लगी रहती है।
चमचे और चाटूकार होने की दौड़ लगी रहती है,
पत्र अखबार में नाम छपवाने की, होड़ लगी रहती है।।

पद पाने की चाह में, अपना थूक चाटकर चल दिये।
पद पाया और माला पहनी और किया नाश्ता चल दिये।।४।।

भाइयों पद में कुछ नहीं रखा, सेवाभाव से कर्म करो,
प्रेमभाव भी बना रहे, ऐसे तुम सदा कर्म करो।
समाज हित को सोचो, और समाज हित ही कर्म करो,
खण्डित हो चुका सर्व समाज, अब तो जरा कुछ शर्म करो।।

मत काटो उन वृक्षों को, जिन्होंने मीठे फल दिये।
पद पाया और माला पहनी और किया नाश्ता चल दिये।।५।।

पूर्वजों की भाँति तुम, समाज हित सदा विचार करो,
प्रेम भाव रखो आपस में, मत कपट व्यवहार करो।
मदद करो दु:ख-सुख में, किसी को मत लाचार करो,
एक माला के मनके बनें सब, ऐसी जपनी तैयार करो।।

भावी पीढ़ी कोसे नहीं हमको, कि कुछ दिये बिना हम चल दिये।
पद पाया और माला पहनी और किया नाश्ता चल दिये।।६।।

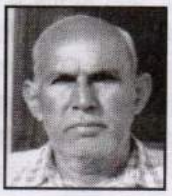

● **देशराज आर्य**
पूर्व प्राचार्य, रेवाड़ी (हरियाणा)
चलभाष : ९४१६३३७६०९

विश्वकर्मा जयन्ति के उपलक्ष्य में

विराट श्री विश्वकर्मा महाराज

● **सत्यप्रकाश आर्य**
प्रदेश प्रवक्ता : प्रादेशिक जांगिड ब्राह्मण सभा, कारोली (नाईड), जनपद : रेवाड़ी, हरियाणा
चलभाष : ९४१६२३१६२७

विराटश्री विश्वकर्मा महाराज को जानने व समझने के लिए व्यापक दृष्टिकोण की आवश्यकता है। श्री विश्वकर्मा महाराज के विषय में समस्त वैदिक साहित्य व लगभग सभी पुराणों में उल्लेख उपलब्ध है। मूर्धन्य वैदिक विद्वान पण्डित हरिकेशदत्त शास्त्री ने विश्वकर्मा पर्व पद्धति नामक पुस्तक में स्कन्द पुराण नागर खण्ड व प्रभास खण्ड में प्रामाणिक जानकारी उपलब्ध करवाई है। प्राचीन साहित्य में अनेक विश्वकर्माओं का वर्णन है और कई आक्षेप सम्मिलित कर शिल्पकर्म को लांछित करने के प्रयास भी किए गए हैं। संकीर्ण विचारधारा से प्रभावित अल्पज्ञजन वर्तमान में भी दुष्प्रचार करते रहते हैं। ऐतिहासिक प्रमाणों के आधार से हम सगर्व कहते हैं कि श्री ब्रह्माजी महाराज के सुपौत्र अष्टम वसु प्रभास का विवाह ब्रह्मऋषि अंगिरा की विदुषी कन्या और बृहस्पति ऋषि की बहन भुवना से सम्पन्न हुआ। मातश्री भुवना की पावन कोख से माघ शुक्ला त्रयोदशी के पुनर्वा नक्षत्र में श्री विश्वकर्मा महाराज का जन्म हुआ। विश्वकर्मा महाराज के मय, मनु, त्वष्टा शिल्पी व विश्वरूप नामक पाँच सुपुत्र और संज्ञा नाम की सुपुत्री ने माता श्री प्राहलादी की कोख से जन्म लिया। माता श्री प्राहलादी हिरण्य कश्यप की सुपौत्री और विरोचन की बहन थी। पाँचों सुपुत्रों का विवाह भी पाँच ऋषि कन्याओं से सम्पन्न हुआ।

शिल्प के आदि देवता श्री विश्वकर्मा महाराज मन्त्रदृष्टा ऋषि थे। सत्य सनातन धर्म का मूल आधार वेद है। चारों वेदों में विश्वकर्मा सूक्त मौजूद है स्पष्ट लिखा हुआ है ऋषि विश्वकर्मा भौवन (अर्थात् भुवना का पुत्र) देवता विश्वकर्मा अथर्ववेद के उपवेद अर्थवेद के कर्त्ता श्री विश्वकर्मा महाराज हैं। अर्थवेद को शिल्प शास्त्र भी कहा गया है। मय मतम और अंशुबोधनी नाम के ग्रन्थ में विमान सम्बन्धी जानकारियाँ हैं। वैदिक काल में ज्ञान-विज्ञान और कला कौशल के १८ आचार्य हुए परन्तु उनमें भौवन-पुत्र विश्वकर्मा मन्त्रदृष्टा ऋषि हुए इसलिए उनको श्रेष्ठतम ऋषि होने का गौरव प्राप्त हुआ। कालान्तर में ज्ञान-विज्ञान के मर्मज्ञ को विश्वकर्मा की उपाधि से सम्मानित किया जाने लगा।

श्री विश्वकर्मा महाराज ने ईश्वर द्वारा रचित सृष्टि में विविध रंगों का संचार कर मानव जीवन के कल्याण के समस्त कार्यों का निस्पादन किया। श्री विश्वकर्मा और उनके वंशज समाज का अतीत बड़ा गौरवमय रहा है। सतयुग-त्रेता व द्वापर काल का इतिहास पुकार-पुकार कर विश्वकर्मा समाज के गौरवमय होने की साक्षी दे रहा है, परन्तु समाज सुषुप्त अवस्था से जागृत होने का प्रयास ही नहीं कर रहा।

सतयुग में इन्द्र महाराज के राजपुरोहित श्री विश्वकर्मा के सुपुत्र विश्वरूप थे। राजपुरोहित विश्वरूप ने अपने पिताश्री से अणु-विज्ञान का ज्ञान प्राप्त किया था और अणु शक्ति सम्पन्न ब्रज यन्त्र का निर्माण कर दिया। इन्द्र महाराज ने विनयपूर्वक यह यन्त्र राजपुरोहित से लेकर बर्फिले पहाड़ों पर विस्फोट कर दिया। असंख्य जलधाराएँ मरुभूमि पर कलोल करने लगी। इन्द्र महाराज को सबने जल के देवता के रूप में स्वीकार कर लिया, परन्तु विश्वरूप की कलियुग में अब कोई पहचान ही नहीं है। त्रेता युग में मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्रजी महाराज को काल नियति ने १४ वर्ष का वनवास प्रदान कर दिया। सीता माता का अपहरण लंकापति कर ले गया। सीता जी की खोज-खबर लेने के लिए वनवासी श्रीराम व्याकुल और अधीर हो गए (वाल्मीकि रामायण बालकाण्ड) श्री राम की व्यथा को जानकर श्री विश्वकर्मा महाराज ने आदित्य ब्रह्मचारी श्री हनुमान को उड़न खटौला और श्री राम को पुष्पक विमान भेंट किया। श्रीलंका पर आक्रमण करने के लिए समुन्दर पर श्री विश्वकर्मा के नाती नल-नील ने रामसेतु का निर्माण कर दिया। यह सेतु आज के वैज्ञानिकों के लिए भी एक अबूझ पहेली बना हुआ है। श्रीलंका और लंकापति का संहार कर सीता माता को सकुशल वापिस ले आए। इस श्रेष्ठ सफल अभियान का कोई मण्डन नहीं हो रहा। द्वापर व कलियुग के सन्धिकाल में महाभारत हुआ। समस्त आग्नेय व अणु अस्त्रों का निर्माण विश्वकर्मा वंशज समाज ने किए। दिव्य दृष्टि (टेलीविजन) द्वारा संजय ने धृतराष्ट्र महाराज को सारा वृतांत बताया। कोई हारा- कोई जीता- कोई महिमा मण्डित हुआ। महाभारत में कितना पशुधन मरा, कितने सैनिक काल गति को प्राप्त हुए सबका वर्णन बताया जाता है, परन्तु व्यवस्था व आयुद्धों के निर्माताओं को कोई स्थान नहीं मिल पा रहा। किसी व्यक्ति विशेष के अभिशाप या वरदान से आग्नेय अस्त्र-शस्त्रों का निर्माण सम्भव नहीं है। सभी अस्त्र-शस्त्रों का निर्माण ज्ञान और विज्ञान के अधिकारी विश्वकर्मा की सन्तानों द्वारा किया गया।

मध्ययुगीन भारत में भाई जस्सासिंह व लाभसिंह रामगढ़िया द्वारा लाल किले पर सफल आक्रमण कर मुगल बादशाहों की ताजपोशी के तख्त का हरण किया गया। भाई रामसिंह ने गौ रक्षा हेतु अपने ८५ कुका बन्धुओं

के साथ बलिदान दिया। स्वतन्त्रता संग्राम में हमारी बराबर की भागीदारी रही, परन्तु राजकाज में प्रतिनिधित्व शून्य है। सर्व विश्वकर्मा समाज को इस पर चिन्तन करना चाहिए।

वर्तमान में एक सुखद अनुभूति का अहसास हो रहा है कि विश्वकर्मा समाज आँखें खोलकर दो राहे पर खड़ा होकर अपने अतीत की ओर झाँक रहा है और भविष्य की ओर निहार रहा है। विश्व के बेजोड़ वैज्ञानिक श्री विश्वकर्मा महाराज के पदचिन्हों का अनुशरण व शिक्षाओं का अनुशीलान कर अतीत के गौरव व गरिमा को पुन: प्राप्त करना है। श्री विश्वकर्मा को समझने के लिए हमें ज्ञान-विज्ञान और अध्यात्म को समझना होगा। हाईड्रोजन और ऑक्सीजन मिलने से पानी बनता है यह विज्ञान है और पानी से प्यास बुझती है यह ज्ञान है। ज्ञान-विज्ञान का आधार है। ज्ञान-विज्ञान के समन्वय को आत्मज्ञान कहा गया है। दार्शनिकों की दृष्टि में आत्मज्ञान ही मूल विज्ञान है। इस मर्म का ज्ञान तो आत्म और परमात्मा के परम-पावन सान्निध्य से ही प्राप्त किया जा सकता है। आकाश में तारे उस समय तक टिमटिमाते हैं जब तक सूर्य उदय नहीं होता। ठीक उसी प्रकार वैज्ञानिक अनुसंधानों में तब तक मानव भटकता रहेगा जब तक उसे पूर्ण आत्मज्ञान नहीं हो जाता।

श्री विश्वकर्मा महाराज की अन्य समकालीन आचार्यों से अलग पहचान इसलिए बन पाई कि वह अणु-विज्ञान के ज्ञाता थे। विज्ञान परमाणु के द्रव्य का सूक्ष्मतम् कण लेकर अध्ययन करता है जबकि अध्यात्म परमाणु को द्रव्य का अंतिम स्थूल कण मानता है। अर्थात् विज्ञान उन्नत की ओर चलता है और अध्यात्म अन्त की ओर यह गूढ़तम रहस्य है जिसे श्री विश्वकर्मा महाराज ने आत्मसात कर लिया था। आधुनिक वैज्ञानिक जब तक अध्यात्म-विज्ञान-ज्ञान का अमृतपान नहीं करेंगे उस समय तक मन्त्रदृष्टा ऋषि पद को प्राप्त नहीं कर पाएँगे।

ध्यान योग में जब आत्मा-परमात्मावत् हो जाती है उस सन्धिकाल में जिस ज्ञान का अवतरण होने लगता है वह परम आनन्द की अनुभूति का काल-खण्ड होता है। अर्जित क्रियात्मक ज्ञान का प्रतिशोधन ध्यान काल-खण्ड में किया जाता है। वह ज्ञान-विज्ञान और अनन्त और अन्त विज्ञान का चरमोत्कर्ष है। विश्वकर्मा महाराज के इस ज्ञान-रहस्य को अपनी धरोहर समझ कर धैर्य-साहस और संयम से अंगीकार करें। ■

उत्तिष्ठत जाग्रत, प्राप्य वरान्निबोधत

कई स्कूल-कॉलेजों की दीवारों पर यह आदर्श वाक्य लिखा हुआ रहता है। इस वाक्य को स्वामी विवेकानन्द का बताया जाता है लेकिन यह वाक्य स्वामी विवेकानन्द का नहीं है। स्वामी विवेकानन्द इस उद्धरण का प्रयोग करते थे। यह वाक्य कठोपनिषद् तृतीया वल्ली के मन्त्र १४ का अंश है। पूरा मन्त्र इस प्रकार है-

उत्तिष्ठत जाग्रत, प्राप्य वरान्निबोधयत।
क्षुरस्य धारा निशिता दुरत्यया, दुर्गंपथस्तत्कवयोवदन्ति।

उतिष्ठत (उठो) **जाग्रत** (जागो) **प्राप्य** (पहुँचकर) **वरान्** (श्रेष्ठ विद्वानों के पास) **निबोधत** ज्ञान प्राप्त करो। इसका अर्थ हुआ- हे लोगों! उठो, जागो और विद्वानों के पास जाकर उनसे 'बोध' ज्ञान प्राप्त करो।

कुछ लोग इस वाक्य का इस तरह गलत अर्थ करते हैं- उठो, जागो और अपना लक्ष्य प्राप्त होने तक न रुको। अपना लक्ष्य प्राप्त होने तक आगे बढ़ते ही जाओ, रुको मत। यह बात इस मन्त्र में नहीं लिखी है।

अगली पंक्ति में इस मन्त्र में लिखा है कि अध्यात्म अथवा ब्रह्मज्ञान का मार्ग छुरे की तरह तीखा तथा कठिनाई से पार किया जाने वाला है। छुरे की धार पर चढ़कर कोई व्यक्ति दूसरी ओर चला जाए यह बहुत कठिन है, किन्तु साहसी लोग यह कार्य कर सकते हैं। दृढ़ संकल्पी लोग ब्रह्म विद्या को भी पा लेते हैं किन्तु इसे कैसे पाया जा सकता है? इसके बारे में कहा गया है कि उठो! जागो और जिन लोगों ने ब्रह्मज्ञान प्राप्त कर लिया है उन लोगों से मिलकर बोध (ज्ञान) प्राप्त करो।

कवय: (विद्वानों ने) इस मार्ग को **दुर्ग** (कठिनाई से पार किया जाने वाला) बताया है किन्तु अगम्य नहीं।

जांगिड वैदिक संस्कृत विद्यालय से शिक्षा प्राप्त
● **आचार्य रामगोपाल सैनी**
फतेहपुर शेखावाटी, जनपद : सीकर (राज.)
चलभाष : ९८८७३९३७१३

प्रवेश प्रारम्भ (सत्र २०२१-२२)

उत्तम शिक्षा, संस्कार एवं स्वास्थ्य के लिए अपने बच्चों को गुरुकुल शिक्षा पद्धति पर आधारित विद्यालयों में प्रवेश कराएँ। इसी आधार पर वेदयोग महाविद्यालय छात्रों के सर्वांगीण विकास हेतु अग्रसर है। गुरुकुल आश्रम खण्डवा-हनुवन्तिया रोड पर खण्डवा से २० कि.मी. दूर केहलारी गाँव के निकट स्थित है। हजारों की संख्या में सभी प्रकार के वृक्षों के मध्य गुरुकुल शिक्षा-स्वास्थ्य-संस्कार एवं वैदिक प्रचार-प्रसार में कार्यरत है।

यह गुरुकुल आश्रम कक्षा १ से १२ तक मध्यप्रदेश बोर्ड से मान्यता प्राप्त एवं शास्त्री से आचार्य पर्यन्त तक महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय, रोहतक (हरियाणा) से मान्यता प्राप्त है। यहाँ से पढ़ने वाले छात्र किसी भी क्षेत्र में आगे की पढ़ाई एवं कार्य कर सकते हैं। यहाँ छात्र नि:शुल्क विद्याध्ययन करते हैं। यहाँ छात्र को पाठ्यक्रम की पढ़ाई के साथ-साथ आयुर्वेद एवं प्राकृतिक चिकित्सा की भी शिक्षा प्रदान की जाती है। कोरोना महामारी के चलते २०२० में किसी भी छात्र का प्रवेश नहीं लिया गया था। पूर्व में उपस्थित छात्र ही अध्ययन कर रहे थे। अब पुन: नवीन प्रवेश प्रक्रिया प्रारम्भ की गई है जिसकी प्रवेश तिथि १ मई २०२१ से प्रारम्भ है।

नोट : छात्र के आने के पूर्व फोन के माध्यम से जानकारी अवश्य भेजें।

मो. ९१६५१६८१५८, ९१७४५२२१६३,
वाट्सएप नं. : ९३९९००७५७०

सम्पर्क करें :

आवासीय वेदयोग संस्कृत उच्च माध्यमिक विद्यालय
वेदयोग महाविद्यालय, गुरुकुल आश्रम मार्ग, केहलारी, जि. खण्डवा (म.प्र.)
चलभाष : ९१७९१८३८३३

दानी महानुभावों से सहयोग अपेक्षित है।

एक उपेक्षित महाकवि : नाथूराम शर्मा 'शंकर'

• जगदीशप्रसाद आर्य
गिरदौड़ा (नीमच) (म.प्र.)
चलभाष : ८९८९६१५३४२

आनन्द सुधा सार दया कर पिला गए।
भारत को दयानन्द दुबारा जिला गए।।

आर्य समाजों में यह भजन ४०-४५ वर्ष पहले तक झूम-झूम कर गाया जाता था, कभीकभार अब भी कानों में पड़ जाता है, पर इसका रचयिता कौन है? कम ही जानते होंगे। कविरत्न पण्डित प्रकाशचन्द्र जी (अजमेर) के भजन आर्य समाजों में अब तक बहुप्रचलित हैं जिसका बड़ा श्रेय उनके शिष्य रहे पं. पन्नालालजी पीयूष को जाता है। अपने आर्य समाजी जीवन के प्रारम्भ से मैं प्रकाशजी के भजनों का पाठक रहा हूँ। प्रकाश गीत द्वितीय भाग पद संख्या ३१-३२ में कवि प्रकाश ने श्री नाथूराम 'शंकर' को गुरु के रूप में स्मरण कर भावभीनी श्रद्धांजलि दी है जिसे पढ़ने के साथ ही कवि शंकर के प्रति मेरा आकर्षण हो गया। आर्य समाजी काव्यधारा के इस भीष्मपितामह का काव्य आज प्राय: दुर्लभ होकर, भजन संग्रहों में संकलित उनकी कुछ रचनाएँ यत्र-तत्र मिल जाती हैं, ऐसे में सत्य प्रकाशन मथुरा ने उनके एक प्रमुख संग्रह **'शंकर सर्वस्व'** को पुन: प्रकाशित कर काव्य रसिकों के अभाव की एक सीमा तक पूर्ति कर दी है। जो महाकवि हिन्दी साहित्य जगत् में इसीलिए तिरस्कृत और बहिष्कृत रहा क्योंकि वह आर्य समाजी था, पर आज वह आर्य समाज के फलक से भी ओझल होकर विस्मृति के गर्भ में जा पहुँचा है। ऐसा अनुभव कर मुझे अत्यन्त पीड़ा हुई और मैंने इस विस्मृत से महाकवि पर कुछ लिखने का मानस बनाया।

नाथूराम शर्मा 'शंकर'

अपने जन्म के विषय में शंकर सर्वस्व में ही कवि निम्नलिखित स्वरचित छन्द देता है-

राग सुधाकर अंक मेदिनी विक्रमाब्द अनुकूल,
शुक्ल पक्ष मधु मास पंचमी शुक्रवार सुख मूल।
चार अंश रस पक्ष मीन के गूँज उठी अलि लग्न,
शंकर के शुभ जन्म काल में हुआ वसन्त निमग्न।

–शंकर सर्वस्व पृष्ठ ४११

चित्रकाव्य शैली में रचित इसमें कवि ने अपनी जन्म कुण्डली दे दी है। राग सुधाकर अंक मेदिनी ये शब्द संख्याओं प्रतीक होकर **'अंकानां वामतो गति:'** के नियम से विक्रम संवत् १९१६, चैत्र शु. ५ (मार्च १८५९) में आपका जन्म हुआ। इस प्रकार आर्य समाज की स्थापना के समय आपकी आयु १६ वर्ष और ऋषि निर्वाण के समय लगभग २५ वर्ष बैठती है। काव्य प्रतिभा आपको प्रकृति प्रदत्त थी जिसका प्रमाण १३ वर्ष की आयु में अपने मित्र के व्यवहार पर रचित उनका यह दोहा-

अरे यार तू रामजी ओछी तेरी जात।
तनक तनक से दूध पे माँ को पकरत हाथ।।

इस प्रकार कवि शंकर निश्चयात्मक रूप से आर्य समाज के प्रथम पीढ़ी के कवि ठहरते हैं।

शंकर सर्वस्व के आरम्भ के लेखों में उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व तथा छन्द शास्त्रीय मूल्यांकन पर महत्वपूर्ण जानकारियाँ प्रामाणिकतापूर्वक दे दी गई हैं। यहाँ पं. श्रीकान्त मिश्र के लेख **'पिंगल परम्परा के अभिनव आचार्य महाकवि शंकर'** से कुछ अंश आवश्यक समझकर उद्धृत करता हूँ, **"कुल मिलाकर कवि ने साठ छन्दों का प्रयोग किया है। द्विवेदीयुग का कोई कवि छन्द प्रयोग में इतना सिद्ध नहीं था। स्वयं राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त उन्हें अपने गुरुजनों में परिगणित करते थे।"** इतना ही नहीं उन्होंने प्राय: १४ सर्वथा नए छन्दों का तथा २० मिश्रित छन्दों का स्वयं आविष्कार कर सफल प्रयोग किया, जिसका विस्तार मूल लेख में ही दृष्टव्य है। मात्रिक छन्दों को वार्णिक छन्दोविधान में बाँधकर उनमें उभयनिष्ठ गुण भर देना तो कवि की अप्रतिम विशेषता है।

आप बहुभाषाविद् होकर बहुभाषी कवि थे। हिन्दी-संस्कृत के साथ-साथ उर्दू-फारसी के भी अच्छे ज्ञाता थे। पहले उर्दू में लिखते थे पश्चात् हिन्दी में आकर हिन्दी के ही हो गए। हिन्दी में आकर युग की रीति के अनुरूप पहले ब्रजभाषा में रचना करते थे फिर खड़ी बोली में भी वही सफलता पाई।

इस महाकवि के मूल्यांकन पर अपनी ओर से कुछ न कहकर उनकी मृत्यु के १९ वर्ष पश्चात् आगरा से निकले **'विशाल भारत'** मासिक में १५ अगस्त १९५१ के अंक में पत्र के तात्कालिक सम्पादक का लेख- **'महाकवि शंकर'** छपा जिसकी कुछ पंक्तियाँ प्रस्तुत हैं, "जो कुछ ऊपर लिखा गया है उसका उद्देश्य उनकी प्रशंसा करना नहीं है। कवि या साहित्यकार की प्रशंसा तो उसकी रचनाओं से होती है... केवल प्रयोजन यह है कि जिस महाकवि ने इतनी महान् साहित्य साधना की, जिसकी काव्य मर्मज्ञों में इतनी प्रतिष्ठा-श्रद्धा है, उसके सम्बन्ध में आधुनिक लेखकों ने न्याय नहीं किया। ...नकलची इतिहास लेखकों ने उन्हीं पुस्तकों के आधार पर मक्खी पर मक्खी मार दी- शंकरजी साम्प्रदायिक कवि थे, उनकी रचनाओं में आर्य समाजीपन है, उनका दृष्टिकोण व्यापक नहीं इत्यादि। इन इतिहासकारों से कोई पूछे तो सही- आपने शंकरजी की कौन-कौनसी पुस्तकें पढ़ी है? जगद्गुरु शंकराचार्य और संस्कृत के सूर्य गुरुवर काशीनाथजी तो शंकरजी की कविता की इतनी प्रशंसा करते हैं। आचार्य द्विवेदीजी ने उन्हें **'प्रतिभा पारावार'** और **'कविता कानन केसरी'** की उपाधि दी है। समझ में नहीं आता नकलची इतिहास लेखक अपनी संकीर्ण सम्मति के लिए क्या आधार रखते हैं?" विशाल भारत के सम्पादक की टिप्पणी जितनी उस काल में सत्य थी उतनी ही आज भी सत्य है। फिर प्रचलित ढर्रे को देखते हुए भविष्य के लिए कुछ आशा नहीं। अस्तु! तो भी जिस आर्य समाज के

कारण वह हिन्दी साहित्य के लिए उपेक्षित रहे, पञ्चों के कोप भाजन बनकर जाति बहिष्कृत रहे, नाना प्रकार के कष्ट उठाकर आर्य समाज और दयानन्द की ध्वजा उन्नत करते रहे, उसी आर्य समाज ने अपनी परम्परागत चुप्पी के साथ उन्हें सहजतया विस्मृत कर दिया। जब हमने ही अपने कवि को नहीं पढ़ा, इसी कारण उनके नौ ग्रन्थों में से तीन तो अप्रकाशित ही रह गए। शेष छ: के बहुत पुराने संस्करण उपलब्ध हैं। (शंकर सर्वस्व में श्रीकान्त मिश्र के लेख का भाव)

अब आर्य समाजी काव्यधारा के प्रथम पीढ़ी के इस महाकवि की लब्ध कृति **'शंकर सर्वस्व'** से स्थाली पुलाकवत् कुछ चयनित काव्यांशों को रसास्वादन और प्रेरणा प्राप्ति के उद्देश्य से यहाँ रखते हैं-

'नैसर्गिक शिक्षा' ३९ पद युक्त एक लम्बी कविता है। मानव के सीखने के लिए प्रकृति में बहुत कुछ है। कवि की दृष्टि से देखिए मानव ने हवन करना किस प्रकार सीखा?-

आतप ताप स्नेह रसों को मेघ रूप कर देता है,
सार सुगन्ध सर्व द्रव्यों के मारुत में भर देता है।
होते हैं जलवायु शुद्ध यों बलवर्धक अनुकूल,
भानुदेव से सीखा हमने हवन कर्म सुखमूल।।

प्रकृति के अनुदानों को भावी पीढ़ियों के लिए भी छोड़ जाएँ, खुद ही समापन न कर बैठें कि शिक्षा-

औषधि अन्न आदि सामग्री सुखदा सबको देती है,
अपने उपजाऊ बीजों को सावधान रख लेती है।
जीव जन्म लेते मरते हैं जिस पर जीवन भोग,
उस वसुन्धरा माता की सी सुगति गहो गुरु लोग।।

अंग्रेजी के व्यामोह ने हमें अपनी भाषा से नफरत सिखा दी। कवि ने इस रोग को इसके शैशव काल में ही पहचान लिया था। **'सम्मुखोद्गार'** कविता में अंग्रेजी ज्ञान पर इठलाने वालों को आइना दिखा दिया कि अपने काले तन को गोरा तो नहीं बना पाए-

कुलभाषण को अनखाय सुने, पर शब्द समूह सुनाय सुने।
जिनको गुरु मान मनाय रहा, जिनकी धज आप बनाय रहा।
पर श्यामल से न सुरंग हुआ, बस भारत का रसभंग हुआ।।

पञ्चतन्त्र कथा के पाँच तन्त्रों में से एक का नाम **'काकोलु कीयम्'** है। इस तन्त्र का कवि ने आल्हा (वीर) छन्द में सुन्दर पद्यानुवाद किया है। इसमें प्रयुक्त एक नीति श्लोक का पद्यानुवाद के साथ मूल श्लोक भी नीचे देते हैं-

जहाँ न आदर है चतुरों का, पूजे जाते हैं मति हीन।
वास विलास वहाँ करते हैं भय दुर्भिक्ष मरण ये तीन।।
मूल- अपूज्या यत्र पूज्यन्ते पूज्यानां च व्यति क्रमः।
त्रीणि तत्र प्रवर्तन्ते दुर्भिक्षं मरणं भयम्।।

ज्योतिष् के नाम पर मुहूर्त, जन्म कुण्डली आदि फलित चल पड़ा, इन्होंने मूल गणित को नष्ट कर डाला। **'हमारा अधःपतन'** कविता में कवि की हार्दिक पीड़ा का अनुभव करें-

ज्योतिष् की ज्योति जगमगाती, भूगोल खगोल को जगाती।
उतरी ग्रह वेध की नली मे, डूबी अब जन्म कुण्डली में।।

सब वर्ण अपने गुण कर्मों को त्याग नौकरी (शुद्रत्व) की ओर अन्धाधुन्ध भाग रहे हैं। पुन: खुद ही उसे कोसते भी जाते हैं। विरोधाभास कवि के शब्दों में-

पढ़ते हैं वेद को न शर्मा, लड़ना जाने न वीर वर्मा।
गिन गिन गाढ़े न गुप्त धन को, कोसें सब दास दासपन को।।

भारतीयों को ख्रीस्त धर्म में दीक्षित होते देख घायल कवि व्यंग्य ही कर सकता था-

गोरे गुरुदेव शिष्य काले, दोनों बन मुक्ति के मसाले।
अपनाय हमें सुधारते हैं, इंजील पढ़ाय तारते हैं।।

'अविद्यानन्द का व्याख्यान' कविता में अन्धविश्वासों पर चोट की है। बहुतेरे अन्धविश्वासों पर न्यूनतम शब्दों में चोट का नमूना देखिए-

महीनों पड़े देव सोते रहें, महादेव डूबें डुबोते रहें।
मरी चेतना हीन गंगा बही, न पूरी कला तीरथों में रही।।

वृद्ध और बेमेल विवाह पर कवि के व्यंग्य देखने योग्य हैं-

बड़ी चाह से ब्याह बूढ़े करो, नकीले कुलों की कुमारी वरो।
न बेटा सगी सास बाला कहे, न माँजी लला साठ साला कहे।।

इसमें भाव यह है कि एक बूढ़ा नवेली बहू ब्याह लाया। बूढ़े के घर में प्रौढ़ पुत्र और पुत्र वधुएँ पहले से मौजूद हैं। नवविवाहिता बाला उनके सम्मुख बच्ची है वह उनकी माता और सास तो बन गई पर उम्र का तकाजा है कि न तो वह उन्हें बेटा पुकार सकती हैं न बेटे उसे माँजी सम्बोधित कर सकते हैं। समाज शैली में भावगम्भीर्य बिहारी की स्मृति करा देने में समर्थ है। ऐसे ही वृद्ध विवाह पर एक बेटी का अपनी माता से प्रश्न सुनिए-

उमगा मौर बाँध चौबारा दस लड़कों का दाऊ।
ओ माँ! वह बूढ़ा शंकर सा मेरा कन्त कि तेरा ताऊ?।।

प्रश्न के बहाने बेटी सम्पूर्ण समाज को अपने हृदय मन्दिर रूपी न्यायालय के कठघरे में खड़ा करती है **'विधवा विलाप'** एक लम्बी कविता है जो अपने शीर्षक को सार्थक करती है, से एक बानगी-

अपने करें अनेक विवाह, हमरे लिए एक ही नाह।
माने या अनीति को नीति, देखो इनकी औंधी रीति।
ये सब लोग पाप के दास, करिहैं घोर नरक में वास।।

भारत की नौकरशाही में रिश्वत का रोग तो पक्का हो गया है। सब प्रकार के जघन्य पापों को धो डालने के लिए तीर्थराज सहज सुलभ है फिर भय शंका का क्या काम? **'पद्य प्रकाश'** कविता से-

जो जगदीश बना दे मुझको अनथक थानेदार।
तो छल छोड़ धर्म सागर में गहरी चूबक मार।
अकड़ के अंग निखारूँगा, किसी से कभी न हारूँगा।।

गरीब अमीर की खाई नित्यप्रति चौड़ी होती जाती है। राजा, महाराजा और अंग्रेजों को ग्रीष्म ऋतु में विवशता मसूरी इत्यादि हिल स्टेशनों पर जाते कवि ने देखा तो गरीबों की विवशता उसके सम्मुख प्रकट हो गई। भू न देने वाली तपन में पेट पापी के पालन में एक ओर कठोर श्रम तो दूसरी ओर प्रजा के धन को स्वाहा करते राजा रईस! विसंगति देखिए-

अकुला कर राजे महाराजे, गिरि शृंगों पर जाय विराजे।
धूलि उड़ाए प्रजा के धन की, रक्षा करते हैं तन मन की।।
गोरे गुरुजन भोग विलासी, बहुधा बने हिमालय वासी।
कातिक तक न यहाँ आते हैं, वहीं प्रचुर वेतन पाते हैं।।
निर्धन घबराते रहते हैं, घोर तप संकट सहते हैं।
दिनभर मूड़ बोझ ढोते हैं, तब कुछ खा पीकर सोते हैं।।

(शेष भाग पृष्ठ १४ पर)

आर्य समाज का कर्मयोगी एवं भामाशाह- महाशय धर्मपाल

सबकोऊ साहब वन्दते, हिन्दू मुसलमान।
साहब तिनको वन्दना, जिनका ठौर ईमान।।

(मलूकदास)

• डोंगरलाल पुरुषार्थी
प्रधान आर्य समाज, कसरावद, जनपद : खरगोन (म.प्र.)
चलभाष : ८९५९०-५९०९९

शेक्यपियर के मतानुसार **''कुछ लोग जन्म से ही महान होते है, कुछ लोग अपने कर्मों से महानता प्राप्त करते हैं और कुछ व्यक्तियों पर महानता लाद दी जाती है।''**

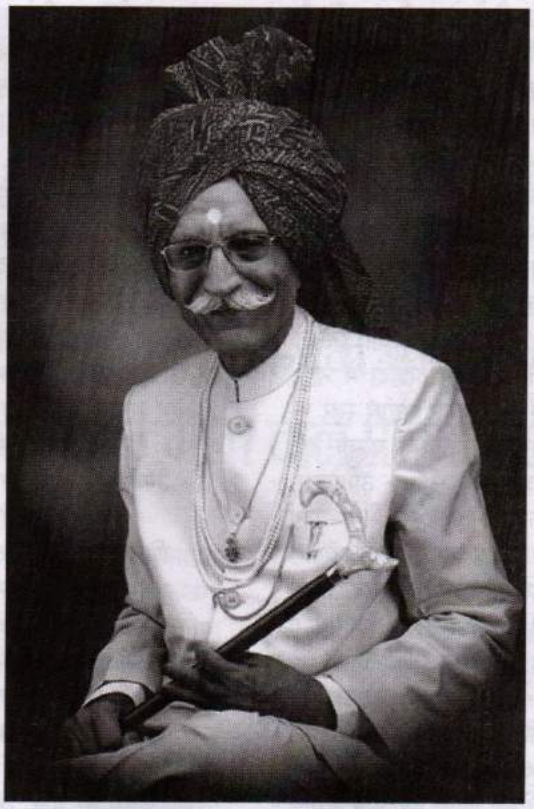

कुछ लोग अपने कर्मों से महानता हासिल करते हैं, इस कथन को सार्थक करने वाले सियालकोट (पाकिस्तान) में जन्में, कक्षा चौथी पास तक पढ़े-लिखे, विश्वविख्यात मसालों के सम्राट एम.डी.एच. (महाशय धर्मपाल गुलाटी) जो कि सन् १९४७ को देश के बँटवारे के कारण सियालकोट अपनी पैतृक भूमि से मात्र १५०० रु. लेकर दिल्ली लाए। जहाँ ६५० रु. में घोड़ा-ताँगा खरीदकर चाँदनी चौक में, बैठो साहब! दो आना सवारी। आओ साहब! पहाड़गंज- दो-दो आना सवारी। ताँगा चलाकर अपनी जीविका चलाते थे। जो आगे चलकर अपने पुरुषार्थ, ईमानदारी और संघर्ष के बलबूते पर विश्व में एम.डी.एच. खुद अपने ब्रांड के एम्बेसडर बने। कर्मयोगी (एम.डी.एच.) के चेयरमेन, विश्व प्रसिद्ध समाजसेवी और अनुपम भामाशाह महाशय धर्मपाल गुलाटी जी का जन्म दि. २७ मार्च १९२३ को सियालकोट में हुआ था। इनके पिता नाम चुन्नीलालजी, माता श्रीमती चन्नन देवी तथा पत्नी का नाम श्रीमती लीलावती था। महाशय धर्मपाल के दो बेटे और छः बेटियाँ, पुत्र राजीव गुलाटी, पुत्र वधू ज्योति गुलाटी, पौत्रियाँ, हिरण्या, वान्या आदि सन्तानों से भरा-पूरा परिवार माता-पिता के प्रति श्रद्धानुसार चंद पंक्तियाँ-

माता-पिता के आशीषों से, पूरा होता हर काम।
मंजिलें बढ़कर गले लगती, जग में होता है नाम।।
माता-पिता की प्रेरणा है, उन्नति का मूल।
इनके आशीषों से खिलते हैं, खुशियों के फूल।।

दिल्ली आने पर दो महीने ताँगा चलाकर महाशय धर्मपाल को यह अहसास हो गया कि यह काम उनके लायक नहीं है। अस्तु सियालकोट में मिर्च-मसालों के काम के अलावा इनके पास कोई दूसरा अनुभव नहीं था। साथ ही शिक्षा का अभाव था, क्योंकि शुरू से इनका मन पढ़ाई के बजाय खेल में लगता था। विशेष बात यह थी कि इनके पिताजी के आर्य समाजी संस्कारों और बड़े अनुशासन के कारण धर्मपाल का चरित्र शुरू से ही बहुत सुदृढ़ था। छोटी उम्र में ही इनको अपने भले-बुरे की अच्छी तरह से समझ थी। धर्मपाल प्राय: पिताजी के साथ प्रतिदिन सुबह-सुबह **'उठ जाग मुसाफिर भोर भई, अब रैन कहाँ जो सोवत है। जो सोवत है सो खोवत है, जो जागत है सो पावन है।'** ऐसे गाते हुए आर्य समाज मन्दिर के यज्ञ और सत्संग में भाग लेते रहते थे। धर्मपाल ने दिल्ली में अपने ताँगे को बेचकर करोल बाग में मिर्च-मसाले की एक छोटी-सी दुकान खरीदी। सन् १९४८ में सरकार ने इनको गफ्फार मार्केट में दुकान नं. ३७ अलाट की। यहाँ इनको कोई ज्यादा फायदा नहीं हुआ। अस्तु सन् १९५० में प्रहलाद मार्केट में इन्होंने दुकान नं. दस किराए पर ली। सन् १९५३ खारी बावली में एक और दुकान भी किराये पर ले ली। शनैः-शनैः इनका कारोबार जोर पकड़ने लगा। इनके मसाले की गुणवत्ता का प्रचार फैला तथा साथ ही जैसे-जैसे लोगों को यह पता चल रहा था कि सियालकोट के मिर्च-मसाले अब दिल्ली में है वैसे-वैसे काम बढ़ता जा रहा था। सन् १९५४ में करोल बाग की रूपक बिल्डिंग खरीद ली। साठ के दशक में इनका नाम सम्मानपूर्वक जाना जाने लगा।

महाशय धर्मपालजी की अच्छी सेहत का राज

अपनी आदत के मुताबिक ये प्रतिदिन सुबह ४.४५ बजे उठकर ताँबे के बर्तन में रखा तीन गिलास पानी पीकर तत्पश्चात् एमडीएच दन्तमंजन मुँह में डालकर सुबह ५.१० से ५.२५ तक पार्क में सैर करते थे। तीस मिनट तक योग करने के बाद पाँच बार ठहाके लगाते थे। नित्य के कार्यों में सुबह-सायं यज्ञ भी करते। दि. २७.३.२०१३ में ९० साल के होने पर भी आपने अपने आपको बूढ़ा नहीं माना- **''चलदा-फिरदा लोहा, बैठ गया तो गोया (गोबर) लेट गया तो मोया।। (मरा हुआ)** तरुणावस्था में जो एक चेतन जानने वाला था, वही आज वृद्धावस्था में

भी है। अपनी बाल्यावस्था की व तरुणावस्था की राम कहानी को याद करके सिर पर हाथ मारता है और कहता है–

कहाँ गई वह शक्ति, कहाँ गया वह रूप।
कहाँ गए वे बाल सखा, अब पड़ा अन्यतम कूप।।

धर्मपालजी नाश्ते में पपीता, लीची, खूरबूज और सेव मौसमानुसार फल लेते। दोपहर के भोजन में सब्जी के साथ दो रोटी खाते। शाम को गाय के दूध में पत्ती डालकर पीते। सात बजे फैक्ट्री से घर लौटने के बाद ३५ मिनट तक सैर करते। रात साढ़े आठ बजे भोजन में दाल या सब्जी के साथ दो रोटी लेते। इसके बाद फिर सैर के लिए निकल जाते। ये बाहर का खाना पसन्द नहीं करते। बहरहाल महाशय जी ने सेहत, स्वास्थ्य और काम के मामले में युवाओं को मात दी। क्योंकि जर्मनी कहावत– **''घोड़ा जब तक दौड़ता रहता है, वह बूढ़ा नहीं होता है। और इन्सान जब तक चलता रहता है, वह बूढ़ा नहीं होता है।। ऐसे ही घोड़े को खुराक और बूढ़े को प्यार मिलता रहे तो ये दोनों कभी बूढ़े नहीं होते।''**

आर्य समाज के साथ अपने सम्बन्धों में धर्मपाल जी कहते हैं– अगर विस्तार से कहने लगूँ, तो हजारों पृष्ठ भी कम पड़ सकते हैं। अत: संक्षेप में जिक्र करूँगा, जब दिल्ली में हमारा काम आगे बढ़ा, तो इसके साथ–साथ आर्य समाज की ओर भी मेरा झुकाव और बढ़ता गया। लोगों ने इस झुकाव को देखते हुए सन् १९८० में आर्य केन्द्रीय सभा, दिल्ली के प्रधान का उत्तरदायित्व मुझे सौंप दिया। हालाँकि मैं ओहदों में नहीं, सेवा–कार्य में विश्वास रखने वाला आदमी हूँ। इस प्रकार राष्ट्रीय स्तर पर भी आर्य समाज की केन्द्रीय संस्थाओं में मेरी जिम्मेदारियाँ बढ़ती गई। विश्व की सबसे बड़ी सभा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान, अंतरंग सदस्य तथा अधिकारी के रूप में भी कार्यरत रहकर मैंने सेवा–कार्य किए। लम्बे समय तक आर्य समाज करोल बाग का प्रधान रहा और संरक्षक की भूमिका निभायी, साथ ही अन्य संस्थाओं से भी स्नेह पूर्ण सम्बन्ध रहे। आर्य समाज के जो बड़े–बड़े ट्रस्ट हैं, लोगों ने कई ट्रस्टों के अधिकारी और प्रधान का उत्तरदायित्व सौंपा, शायद मुझे इस काबिल समझा। स्नेहीजनों को लगा कि धर्मपालजी की देख–रेख में परमार्थ को समर्पित सारी योजनाएँ सही रूप में फलीभूत हो सकेंगी। देश–विदेश में कई बड़े–बड़े आयोजनों में मेरे से जो कुछ बन सका, तन–मन–धन से अपना सब कुछ न्यौछावर कर दिया और यह उसूल बना लिया कि आर्य समाज का सच्चा अनुयायी होने का फर्ज निभाते हुए इसके लिए हमेशा तैयार रहना है। आर्य समाज के विद्वानों से यह उनका विशेष आग्रह रहा कि वे गली–गली, गाँव–गाँव तक पहुँचकर आर्य समाज के सिद्धांतों को अपनाने के लिए लोगों को प्रेरित करें। यहाँ तक व्यावसायिक व्यवस्थाओं के बीच समय निकालकर महर्षि दयानन्दजी के विचारों का प्रकाश चारों ओर फैलाने के लिए खुद भी अपनी फैक्ट्रियों के लोगों को लेकर दूर–दूर तक की गरीब बस्तियों तक पहुँचे। जहाँ लोग जाना भी पसन्द नहीं करते, वहाँ स्टेज लगाकर विद्वानों को लेकर सत्संग–कार्यक्रमों का आयोजन करवाया। संक्षेप में धर्मपालजी द्वारा स्थापित और पोषित संस्थाएँ– (१) माता चन्नन देवी हॉस्पिटल, जनकपुरी दिल्ली, (२) महाशय धर्मपाल हृदय संस्थान, जनकपुरी दिल्ली, (३) महाशय चुन्नीलाल सरस्वती बाल मन्दिर, हरिनगर दिल्ली, (४) महाशय धर्मपाल विद्या मन्दिर, सुभाष नगर, दिल्ली, (५) माता लीलावन्ती सरस्वती बाल विद्यालय, हरिनगर, दिल्ली, (६) एम.डी.एच. इन्टरनेशनल स्कूल, द्वारिका दिल्ली, (७) एम.डी.एच. इन्टरनेशनल स्कूल, जनकपुरी, दिल्ली, (८) एम.डी.एच. शुभ संजोग सेवा, कीर्ति नगर, दिल्ली, (९) महाशय संजीव गुलाटी चिकित्सालय एवं शोध केन्द्र, ऋषिकेश, (१०) महाशय धर्मपाल विद्या मन्दिर, बेडकी कर्नाटक, (११) माता लीलावन्ती श्रीकृष्ण वैदिक कन्या इंटर कॉलेज, खुशीपुरा मथुरा, उ.प्र., (१२) महाशय राजीव पब्लिक स्कूल, उत्तर काशी, उत्तराखण्ड, (१३) महाशय धर्मपाल एम.डी.एच. वानप्रस्थ आश्रम, परली बैजनाथ, महाराष्ट्र, (१४) महाशय धर्मपाल एम.डी.एच. दयानन्द आर्य विद्या निकेतन, धनश्री आसाम, (१५) महाशय धर्मपाल एम.डी.एच. दयानन्द आर्य विद्या निकेतन, बामनिया, म.प्र., (१६) एम.डी.एच. गौशाला ऋषि उद्यान, अजमेर, राजस्थान, (१७) एम.डी.एच. गौशाला, गाँधीधाम, गुजरात, (१८) महर्षि दयानन्द निर्वाण न्यास, एम.डी.एच. परिसर, अजमेर, राजस्थान, (१९) महाशय धर्मपाल कन्या छात्रावास, गुरुकुल चोटीपुरा, उ.प्र., (२०) माता लीलावन्ती वैदिक संस्कृति प्रशिक्षण केन्द्र, उदयपुर, राजस्थान, (२१) महाशय धर्मपाल एम.डी.एच. आरोग्य मन्दिर से.७६, फरीदाबाद, हरियाणा। उपर्युक्त संस्थाओं के अतिरिक्त कालीकट केरल आदि संस्थाएँ सन् २०१८ के बाद स्थापित की गई। महाशयजी के निधन पर एवं श्रद्धांजलि स्वरूप लख–लख नमन–अभिनन्दन।

आर्य समाज श्रीनिवास पुरी द्वारा निम्न कविता सप्रेम भेंट–

''सियालकोट में रहते थे, श्री लाला चुन्नीलाल।
उनके घर में जन्मा था, भारत माता का एक लाल।।
बड़े प्यार से रखा, उनका नाम धर्मपाल।
जिसने धर्म पर चलकर, आज दिखा दिया कमाल।।
कर्म ही पूजा, धर्म ही पूजा, कर्मयोगी ही करते हैं।
नित्य प्रातः हवन, संध्या करके, ये दान पुण्य भी करते हैं।
माता चनन देवी धर्मार्थ अस्पताल ये चलाते हैं।
जहाँ निःशुल्क इलाज करके, मुफ्त दवाई ये दिलाते हैं।
अनेक विद्यालय खोले, विद्या प्रचार कराते हैं।
आदिवासी क्षेत्रों में भी, ज्ञान का दीप जलाते हैं।।
एम.डी.एच. के नाम से, व्यापार ये चलाते हैं।
शुद्ध, पवित्र और जायकेदार, मसाले हमें खिलाते हैं।
भारत की शान बढ़ाते हैं, विदेशों में निर्यात कराते हैं।
धन्य हम हो जाते हैं, जब टी.व्ही. में आप नजर आते हैं।।
दयानन्द के वीर सिपाही, हर जगह ये जाते हैं।
श्रद्धानन्द जैसे शेर बहादुर, बिल्कुल नहीं घबराते हैं।।
लेखराम–सा जज्बा इनमें, धर्म प्रचार कराते हैं।
९० वर्ष की आयु में भी, कच्चे चने चबाते हैं।।
आर्य समाज श्रीनिवास पुरी में, करते हम सम्मान हैं।
राजवीर तँवर सच्चे मन से, करते आपको प्रणाम हैं।।
''देश के गौरव देश की शान, तुमसे है भारत की आन।
वैदिक संस्कृति की मशाल, धन्य–धन्य महाशय धर्मपाल।।''

जय भारतीय ■

वैदिक मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र

वैदिक मर्यादा पुरुषोत्तम, ईश्वर भक्त महान, राम थे युग निर्माता।
प्रजा पालक, धर्म-धुरन्धर, आर्य वर्त की शान, राम थे युग निर्माता।।

शाम-सवेरे, ब्रह्मयज्ञ अरु देव यज्ञ नित करते थे।
सच्चे ईश्वर विश्वासी थे, दुष्टों से ना डरते थे।।
निर्बलों-विकलों के साथी थे, धीर-वीर बलवान, राम थे युग निर्माता।
प्रजा पालक, धर्म-धुरन्धर, आर्य वर्त की शान, राम थे युग निर्माता।।१।।

मात-पिता, गुरुओं के सेवक, सतवादी न्यायकारी थे।
सन्त जनों के रक्षक थे वे, श्री राम तपधारी थे।।
सती-साध्वी अबलाओं का, करते थे सम्मान, राम थे युग निर्माता।
प्रजा पालक, धर्म-धुरन्धर, आर्य वर्त की शान, राम थे युग निर्माता।।२।।

सत्य, अहिंसा, सदाचार के रामचन्द्रजी पालक थे।
वेद, शास्त्रों के ज्ञाता थे, धर्म राज्य संचालक थे।।
पुण्य-पाप की, भले-बुरे की, रखते थे पहचान, राम थे युग निर्माता।
प्रजा पालक, धर्म-धुरन्धर, आर्य वर्त की शान, राम थे युग निर्माता।।३।।

श्री राम ने पिता आज्ञा पा, राज-पाट को छोड़ा था।
चौदह वर्ष रहे थे वन में, त्याग नहीं यह थोड़ा था।।
भूखों-नंगों, विकलांगों का, रखते थे वे ध्यान, राम थे युग निर्माता।
प्रजा पालक, धर्म-धुरन्धर, आर्य वर्त की शान, राम थे युग निर्माता।।४।।

वेद विरोधी नास्तिकों ने, भूमण्डल को घेरा था।
सारी दुनिया आतंकित थी, छाया घोर अन्धेरा था।।
श्री राम ने नष्ट किये थे, महानीच शैतान, राम थे युग निर्माता।
प्रजा पालक, धर्म-धुरन्धर, आर्य वर्त की शान, राम थे युग निर्माता।।५।।

बाली, रावण, कम्भकरण को, श्री राम ने मारा था।
सज्जन थे सुग्रीव, विभीषण, उनको दिया सहारा था।।
दैत्यों के वे महाकाल थे, सन्तों के थे प्राण, राम थे युग निर्माता।
प्रजा पालक, धर्म-धुरन्धर, आर्य वर्त की शान, राम थे युग निर्माता।।६।।

उग्रवाद आतंकवाद का, जोर जगत में भारी है।
आपा-धापी मची हुई है, व्याकुल दुनिया सारी है।।
धर्म-कर्म को भूल गया जग, बना नर्क की खान, राम थे युग निर्माता।
प्रजा पालक, धर्म-धुरन्धर, आर्य वर्त की शान, राम थे युग निर्माता।।७।।

श्री राम के पुत्र-पुत्रियों! जागो अच्छे काम करो।
राम बनो असुरों को मारो, वीरों! मत विश्राम करो।।
जग को स्वर्ग बनाना है अब, लो हृदय में ठान, राम थे युग निर्माता।
प्रजा पालक, धर्म-धुरन्धर, आर्य वर्त की शान, राम थे युग निर्माता।।८।।

सकल जगत् के नेताओं! अब, वैदिक पथ अपनाओ तुम।
श्री राम से त्यागी बनकर, जीवन सफल बनाओ तुम।।
'नन्दलाल' निर्भय रघुनन्दन के गाओ गुणगान, राम थे युग निर्माता।
प्रजा पालक, धर्म-धुरन्धर, आर्य वर्त की शान, राम थे युग निर्माता।।९।।

ऋषि की महिमा गाओ तुम

जगत गुरु ऋषि दयानन्द के, वीर सैनिकों! आओ तुम।
करो वेद प्रचार आर्यों!, सोया देश जगाओ तुम।।

जगत गुरु ऋषि दयानन्दजी, ईश्वर भक्त निराले थे।
मानवता के महापुंज थे, देश-भक्त मतवाले थे।।
मात-पिता, चाची-चाचा ने, बड़े प्यार से पाले थे।
स्वामी विरजानन्द गुरु के, परखे-देखे भाले थे।।
जीवन चरित्र पढ़ो ऋषिवर का, मनन करो सुख पाओ तुम।
करो वेद प्रचार आर्यों! सोया देश जगाओ तुम।।१।।

पावन वैदिक पथ तज करके, व्याकुल थी जनता सारी।
अविद्या रूपी अन्धकार में, भटक रहे थे नर-नारी।।
चेतन की पूजा तज दी थी, पत्थर पूजा थी जारी।
जन्म-जाति की, ऊँच-नीच की, पनप गई थी बीमारी।।
कबरों की पूजा करते थे, समझो अरु समझाओ तुम।
करो वेद प्रचार आर्यों!सोया देश जगाओ तुम।।२।।

ऋषियों की सन्तान भारती, निश-दिन यहाँ झगड़ते थे।
द्वेष-ईर्ष्या घृणा के कारण, जो व्यर्थ अकड़ते थे।।
भाई का भाई दुश्मन था, पनप गई थी फूट यहाँ।
वेद-विरोधी, दुष्ट विदेशी, मचा रहे थे लूट यहाँ।।
भारत था परतन्त्र, पढ़ो इतिहास न देर लगाओ तुम।
करो वेद प्रचार आर्यों! सोया देश जगाओ तुम।।३।।

ब्रज भूमि मथुरा नगरी से, देव दयानन्द आया था।
किया वेद प्रचार रात-दिन, कभी नहीं दहलाया था।।
कर्म प्रधान बताया ऋषि ने, धर्म-कर्म समझाया था।
पोप, पुजारी, मुल्लाओं से, निर्भय हो टकराया था।।
स्वतन्त्रता का पाठ पढ़ाया, ऋषि की महिमा गाओ तुम।
करो वेद प्रचार आर्यों! सोया देश जगाओ तुम।।४।।

पहले से भी ज्यादा अब, पाखण्ड गया बढ़ भारत में।
उच्च शिखर पाखण्डी टोला, आज गया चढ़ भारत में।।
ऋषियों के सुत-सुता करोड़ों, भूखे नित सो जाते है।
जिनके तन पर वस्त्र नहीं हैं, दर-दर धक्के खाते हैं।।
धूर्त विधर्मी नित हँसते हैं, मिटता देश बचाओ तुम।
करो वेद प्रचार आर्यों! सोया देश जगाओ तुम।।५।।

बन्द करो आपस में लड़ना, वीर आर्यों! जागो तुम।
त्यागी-तपधारी बन जाओ, अहंकार को त्यागो तुम।।
लेखराम श्रद्धानन्द बनकर, कर्म क्षेत्र में कूद पड़ो।
वीर लाजपत, बिस्मिल बनकर, दानव दल से अभी अड़ो।।
'नन्दलाल' ऋषि दयानन्द का, वीरों! कर्ज चुकाओ तुम।
करो वेद प्रचार आर्यों! सोया देश जगाओ तुम।।६।।

विश्वकर्मा कुल गौरव
• पं. नन्दलाल निर्भय सिद्धान्ताचार्य
आर्य सदन बहीन, जनपद पलवल (हरियाणा)
चलभाष : ९८१३८४५७७४

(पृष्ठ १० का शेष भाग)

समस्यापूर्ति एक काव्य विधा है। वर्तमान में तो इसके दर्शन नहीं होते पर विगत युग में कवियों की रुचिकर शैली थी। **'रसिक मित्र'** (मासिक) समस्या पूर्ति का पत्र कानपुर से निकलता था। स्वामी दयानन्द के समकालीन संस्कृत साहित्यकार एवं अम्बिकादत्त व्यास हिन्दी के भी कवि थे और शंकर कवि के मित्र थे। व्यासजी के निधन पर समस्या पूर्ति का वाक्यांश **'पतिया पठानी है'** निर्धारित था। कवि शंकर ने बारह पदों में इस शैली में लम्बी कविता लिखी जो रसिक मित्र में छपी थी, से एक पद-

जीवन बिताय जाय बैठत हैं जीव जहाँ,
शंकर तहाँ की अति अकथ कहानी है।
रेल की न रैल पैल तार तड़िया के नहि,
डाक डाकियान की न आनी है न जानी है।
भेजत हो अन्न पट पानी भूत प्रेतन कों,
ऐसी रीति आपने पुरोहित जी जानी है।
सोई विधि हमको बताओ महाराज आज,
व्यास जू के पास एक पतिया पठानी है।।

यहाँ समस्या पूर्ति के कौशल के साथ पुरोहितों पर किया कटाक्ष दर्शनीय है। आर्य समाज के धुरन्धर शास्त्रार्थ महारथी पण्डित गणपति शर्मा जिन्होंने पादरी जानसन के साथ शास्त्रार्थ कर काश्मीर नरेश की लाज रखी थी, के निधन पर कवि ने १४ पदों में मार्मिक श्रद्धांजलि दी, का एक पद दृष्टव्य है-

मानव समाज में निरीश्वरता नाचती है,
आधे से अधिक बौद्ध जैन युक्त पौन हैं।
चूकें चारवाक न बृहस्पति जी गाज रहे,
ऊलें युक्ति बाद ब्राडलादि का न मौन है।
स्वामी दयानन्द कहाँ, हा! न गणपति यहाँ,
बोलो ब्रह्म विद्या का बचाने वाला कौन है?।।

कवि नास्तिकता के खुले नर्तन से चिन्तित हैं। विभिन्न मतों के कुल नास्तिक, मानव समाज के आधे से अधिक, बौद्ध जैनों को सम्मिलित करके तो पौना भाग है। अन्तिम पंक्ति बड़ी मार्मिक है। महर्षि ने सत्यार्थ प्रकाश में गया सुल्लुगात के प्रमाण से हिन्दू के घृणित अर्थ प्रकट कर आर्य शब्द अपनाने की प्रेरणा दी है। हिन्दू शब्द के प्रवक्ता आज भी ताल ठोक कर उसके समर्थन में खड़े हैं। उनकी हठधर्मी पर **'तागड़ दिन्ना नागर बेल'** कविता में व्यंग्य देखिए-

भूले भूतपूर्व कवि लोग, करना हिन्दू शब्द प्रयोग।
प्यारे तुलसी केशव सूर, हा! चल बसे हिन्द से दूर।
डाल गए हिन्दी पर डेल, तागड़ दिन्ना नागर बेल।।

'सदुपालम्भ' कविता में भी इस ओर संकेत हैं। भारत को उलाहने के बहाने इसमें भारतीयों उपालम्भ है। शृंगार के नाम पर अश्लीलता परोसने वालों पर कवि का आक्रोश देखिए-

बन हिन्द हिन्दुओं का अब इण्डिया कहाया।
देखा न नाम पर भी अभिमान प्यार तेरा।
तुक्कड़ गितक्कड़ों को कविरत्न मानता है,
उगलें गढ़न्त गन्दी कविता प्रसार तेरा।।

'पुरानी पाठ-शाला' में पुरातन और नूतन शिक्षा व्यवस्था की तुलना की है। शुल्क लेने वाले गुरुकुलों से भी कवि असन्तुष्ट है। उद्योग व्यवसाय बनती शिक्षा के दोषों को कवि ने तभी पहचान लिया था, अयोग्य शिक्षक भी कवि की दृष्टि से ओझल नहीं-

जब थे गरिमागारवरद विद्यालय जैसे।
अब न अशुल्काधार बनेंगे गुरुकुल वैसे।।
अबुध विवेकाभास विवेक न बो सकता है।
क्या टीचर धन दास कुटीचर हो सकता है।।

हिन्दुओं के कच्छ मच्छ बराह अवतार विरोधियों को हँसी का मसाला प्रदान करते हैं। अत: कवि श्रीकृष्ण को नेता के रूप में अवतरित होने का परामर्श देता है। **'आर्य पंच की आल्हा'** से-

बनिये गौर श्याम सुन्दरजी ताक रहे हैं दर्शन दीन।
हमको नहीं हँसाना बनके बाघ, वितुण्डी कछुआ मीन।।
धार सामयिक नेता पन को दूर करो भूतल का भार।
निष्कलंक अवतार कहेंगे शंकर सेवक बारम्बार।

पाखण्ड, अन्धविश्वास, हिंसा, अत्याचार आदि पर कवि ने चुटीले व्यंग्य किए हैं और व्यंग्य में इन पाप कर्मों को धर्म, पुण्य और दया किस चातुर्य से कहा है। **'भारत का भट्ट'** से एक बानगी-

बेच बेच बूचड़ों के हाथ पोच पशुओं को,
जीवन की नाथ काट नाक में नचाओ रे।
छागी मृग मीन कुक्कुटादि को कुयोनियों के,
जाल से छुड़ाय खाय पेट में पचाओ रे।
छीन छीन दाम धरा धाम रंक ऋणियों के,
चोर ठग डाकुओं के डर से बचाओ रे।
आओ रे कृतज्ञ कारुणिक दया दान वीरों,
भारत के भट्ट धूम धर्म की मचाओ रे।।

शंकर के काव्य में इतिहास भी स्थान-स्थान पर मुखर हुआ है। हिन्दू-मुस्लिम ऐक्य के रट्टा बन चुके अकबर जोधा विवाह और मानसिंह का मुगल दरबार में सम्मान को लक्ष्य कर चुभता व्यंग्य देखें-

दे जोधाबाई अकबर को उपजा मियाँ मिलान।
धन्य बने मामा सलीम के मान बढ़ा कर मान।।

यहाँ मान शब्द के दोहरे प्रयोग में यमक की छटा दर्शनीय है। परंपरागत उद्योग नष्ट हो जाने से बढ़ते रोजगार संकट पर कवि की करुण कराहना सुनिए, आज तो यह संकट कई गुणा अधिक गहरा चुका है-

लागू टेक्स नहीं घटते हैं, घटते नहीं लगान।
घटते हैं कंगाल प्रजा के उद्यम वारि वहान।।

आर्य समाज ने व्यक्ति को ही आर्य बनाया, समाज को नहीं। परिवारों में आर्य पति के साथ रूढ़िवादी पत्नी सामान्य बात है। गुण कर्म स्वभाव मिलाते नहीं। परिणाम- टकराव सह शाश्वत दु:ख। **'कजली कलाप'** से-

पति पूजें श्रीपति को पत्नी पूजे मियाँ मदार।
दो मत जुड़े एक जोड़ी में ठनी रहे तकरार।।

महापुरुषों के चित्र देखकर और चरित्रों का जोर-शोर से पाठ करके भी अपना आचरण नहीं सुधारते। परिणाम-दुर्दशा। कजली कलाप से-

देखें चित्र चरित्र बड़ों के पढ़ें पुकार पुकार।
तो भी हा न दुर्दशा अपनी निरखें आँख उघार।।

(शेष फिर) ■

गतांक पृष्ठ ३१ से आगे

सत्यार्थ प्रकाश

प्रथम समुल्लास काव्य सुधा

१०१. महत् शब्द पूर्वक **'देव'** शब्द से महादेव शब्द सिद्ध होता है।
यो महतां देवः स महादेवः

छन्द : वह ब्रह्म सर्व महान्, देवों का महत्तम देव है।
उससे न विद्यावान कोई, वह सदा ही सेव्य है।।
रवि, चन्द्र, पावक और विद्युत, आदि की वह ज्योति है।
सारे पदार्थों का प्रकाशक, वह विलक्षण द्योत है।।
परमाणु से द्यौ लोक तक महिमा उसी की है घनी।
सारा जगत् करगत उसी के, वह विराट् महा घनी।।
उसके नियम में ही चलें जड़ और चेतन देव सब।
वह **'महादेव'** महान् है, इस हेतु माने उसे सब।।
(चेतन उसे मानें सदा, चित से करें आराधना।
पूजें नहीं जड़ देव बदले में, करें यह साधना।।)

१०२. **(प्रीञ् तर्पणे कान्तौच)** इस धातु से **'प्रिय'** शब्द सिद्ध होता है।
यः पृणादि प्रीयते वा स प्रियः।।

छन्द : धर्मात्म और मुमुक्षुओं को वह मुदित करता सदा।
जो शिष्ट उसको मानते, उनके हृदय-भरता मुदा।।
वह सर्व पूरक देव है,उसकी ही करें सब कामना।
प्रिय है सदा सब काल में, करता मुदित सब क्षण मना।।
उससे आपर दूजा कोई सेव्य है संसार में।
इस हेतु उसका नाम **'प्रिय'** है, शास्त्र आगार में।।

१०३. **(भू सत्तायाम्)** स्वयं पूर्वक इस धातु से **'स्वयंभू'** शब्द सिद्ध होता है।
यः स्वयं भवति स स्वयं भूरीश्वरः।

छन्द : जो निज स्वयं ही सिद्ध है, उसका न है माता-पिता।
इससे **'स्वयंभू'** नाम उसका है पड़ा, वह जग जिता।।

१०४. **(कु शब्दे)** इस धातु से **'कवि'** शब्द सिद्ध होता है।
यः कौति शब्दयति सर्वा विद्या स कविरीश्वरः।

छन्द : जो वेद द्वारा सकल विद्या का किया उपदेश है।
जो विश्व वेत्ता है, सकल ब्रह्माण्ड जिसका देश है।।
जो क्रान्त दृष्टा है जगत् का काव्य जिसका दास है।
है इसलिए परमात्मा का नाम **'कवि'**, प्रतिक्षण पास है।।

१०५. **(शिवु कल्याणे)** इस धातु से **'शिव'** शब्द सिद्ध होता है।
बहुलमेतन्निर्दशनम्। व्याकरण महाभाष्य- ३/३/१
इससे शिवु धातु माना जाता है।
जो है स्वयं कल्याण रूप, अनन्त सुख-भण्डार है।
देता परम पद (मोक्ष), भक्तों का करे उद्धार है।।
इस हेतु उसका नाम **'शिव'** है, वह दया का सिन्धु है।
शुभ शान्त प्रियदर्शी प्रभो है, व्योम में ज्यों इन्दु है।।

१०६. परमात्मा के एक सौ ये नाम हैं मैंने लिखे।
गुण, कर्म और स्वभाव से जो सब प्रमाणिक हैं दिखे।।
वैसे असंख्यों नाम उस परमात्मा के हैं कहे।
क्योंकि असंख्यों कर्म-गुण उसके सदा भीतर रहें।।
प्रत्येक गुण औ कर्म के हैं नाम भिन्न लिखे हुए।
तद्वत् स्वभावऽपि भी असंख्यों, इस प्रकार कहे हुए।।
वर्णन सभी के हैं असम्भव, क्योंकि वह प्रभु सिन्धु है।
लेखन हमारा उस महत्तम के समक्ष इक बिन्दु है।।
वेदादि शास्त्रों में असंख्यों कर्म और स्वभाव हैं।
गुण भी असंख्यों हैं लिखे जिनके अलौकिक भाव हैं।।
उनको पढ़ें बुधजन उसी से बोध होगा पूर्णतः।
भौतिक पदार्थों का वहीं से ज्ञान भी हो पूर्णतः।।

१०७. **प्रश्न : शंका**
यह ठीक है, मुझको उचित कहना लगा सब आपका।
पर अन्य इक व्यवहार अटपट सा है आपका।।
इस ग्रन्थ के प्रारम्भ में कुछ स्वस्ति पाठ नहीं लिखा।
अर्थात् मङ्गल आचरण का वाक्य नहीं अंकित दिखा।।
ज्यों अन्य लेखक लोग लिखते ग्रन्थ के आरम्भ में।
वैसा कथन कुछ भी लिखा नहिं, आपने इस ग्रन्थ में।।

उत्तर : समाधान
ऐसा उचित मैंने न समझा, क्योंकि सारे ग्रन्थ में।
है वाक्य मङ्गल ही लिखा मैं सर्वतः इस ग्रन्थ में।।
होवे अमङ्गल यदि कहीं, तब है उचित मङ्गल लिखूँ।
जब सर्वथा सब सत्य ही है, तब कहाँ मङ्गल लिखूँ।।
।।मङ्गलाचरणं शिष्टाचारात् फलदर्शनाच्छ्रुतितश्चेति।।
-सांख्य शास्त्र अ.१/१
का वचन है। इसका अभिप्राय है कि जो न्याय, पक्षपात रहित सत्य, वेदोक्त ईश्वर की आज्ञा है, उसी का यथावत् सर्वत्र और सदा आचरण करना मङ्गलाचरण कहाता है।

(क्रमशः आगामी अंक में) ■

● **पं. देवनारायण तिवारी**
धर्माचार्य आर्य समाज, कलकत्ता
विधान सरणी, कोलकाता, प. बंगाल
चलभाष : ९८३०४२०४९६

सत्य-सनातन वैदिक धर्म-वेद (उद्भव)

● पुरुषोत्तमदास गोठवाल
एस-८/बी, कबीर मार्ग, बनीपार्क, जयपुर (राज.)
का. प्रधान : आर्य समाज कृष्ण, पोल बाजार, जयपुर
दूरभाष : ०१४१-२२०५९९१

धर्म परायण भारत की अशिक्षित जनता को धर्म के तथाकथित ठेकेदारों ने खूब लूट-लूट कर अपना स्वार्थ सिद्ध करते रहे और आज भी करते आ रहे हैं। जबकि स्मरण रहे **'वेदोऽखिलो धर्म मूलम्'** स्पष्ट वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक मानते हैं। यही धर्म का मूल है। महर्षि दयानन्द सरस्वती अपने सम्पूर्ण जीवन पर्यन्त पाखण्ड-खण्डन एवं वैदिक सत्य सिद्धान्तों के मण्डन में समर्पित योद्धा रहे। ५९ वर्ष के जीवनकाल में सत्य सनातन वैदिक धर्म को समझाने में लगा दिए, तथा महान् ग्रन्थ सत्यार्थ- प्रकाश की रचना कर खण्डन-मण्डन की अनुपम धार्मिक, मार्मिक रचना की और जनसाधारण को अन्ध-परम्पराओं व अन्ध-विश्वासों से सचेत कराया। मूर्ति पूजा को असत्य व रूढ़ीवादी ढोंग बताया। हरिद्वार जो रूढ़ीवादियों की सबसे बड़ी दुकान थी वहाँ पर कुम्भ मेले के अवसर पर पाखण्ड खण्डनी पताका गाड़कर दुनिया में फैले हुए अन्ध विश्वासों को ललकारा। काशी नगर जो उस समय की धार्मिक राजधानी हुआ करती थी आकर अनेकों शास्त्रार्थ महारथियों से शास्त्रार्थ कर, वेद में मूर्ति पूजा का विधान की समझ, समझाने में वे सब असमर्थ रहे और हार का मुँह देखना पड़ा। यही सत्य विद्याओं का वेद का चमत्कार दर्शाकर जनता को लाभान्वित कराया। क्या यह **'असतो मा ज्योतिर्गमय'** नहीं है?

महर्षि द्वारा स्थापित आर्य समाज ईश्वर द्वारा पाप क्षमा करने की बात को नहीं मानता। क्योंकि ईश्वर दयालु है और न्यायकारी है। आर्य समाज का नियम जानता व मानता है **ईश्वर सच्चिदानन्द स्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक और अर्न्तयामी, अजर, अमर, अभय, नित्य पवित्र और सृष्टिकर्ता है। उसी की उपासना करने योग्य है।** वे मूर्ति पूजा व अवतारवाद को नहीं मानते थे।

ऐतिहासिक वैदिक धर्म के मूल स्वरूप की पुनर्स्थापना का अभियान

महाभारत युद्ध के एक सहस्त्र वर्ष पहले वैदिक धर्म के स्वरूप में विकारों का प्रारम्भ ऋषि दयानन्द जी ने स्वीकारा है। नास्तिक चारवाक की महाभारत से उपस्थिति इसका प्रमाण है। विजय के बाद महाराज युधिष्ठर के हस्तिनापुर प्रवेश के समय ब्राह्मणों के वेश में भीड़ के मध्य संन्यासी वेश में चारवाक पहुँच गया। बस धीरे-धीरे यहीं से ह्रास शुरू कर दिया। शांति पर्व ३८/२२ यहाँ चारवाक को राक्षस कहा है। इसी युग में आगे म.भा. वन पर्व १२७, १२८ में राजा सोमक द्वारा अपने शिशु पुत्र का बलिदान देकर उसकी चर्बी से यज्ञ करके १०० पुत्रों की प्राप्ति की कथा है और देखिए रतिदेव द्वारा हजारों गायों की बलि देकर यज्ञ का वर्णन। यहाँ चार्वाक को राक्षस शब्द से सम्बोधन किया, उसी को धर्म को कलंकित करने, असत्य बातों की महामण्डित कर-कर जनता का माल मारते रहे और 'भजकल-दारम् २' आदि की माला फिरा कर अपनी प्रतिष्ठा बढ़ाई। माँस, मदिरा, मैथुन का प्रचार-प्रसार कर जनता को माँस से जीभ का स्वाद चखाया और प्रतिष्ठित होकर खुश हुए। दुर्भाग्य हमारे इस आर्यावृत्त देश का। ऐसे दुष्ट (राक्षस) योनि जो असंख्य दूध देने वाली गायों का वध कर खून की नदियाँ बहाई।

ऐसे हुए लम्बे काल खण्ड में घोर अंधकार फैलाता रहा। सौभाग्य से टंकारा गुजरात प्रान्त में जन्में एक लंगोटधारी संन्यासी देव दयानन्द का आगमन और आर्य समाज का प्रादुर्भाव हुआ। वे स्वयं गुजराती होते हुए भी जन समुदाय की प्रचलित हिन्दी भाषा को अपनाकर सरल सत्यार्थ प्रकाश महाग्रन्थ की रचना की और आज तक यही अन्धकार को चीरता प्रकाश फैलाता आ रहा है। इस महान ग्रन्थ के प्रभाव स्वरूप यह देश वापस अपने वैभव की ओर आ रहा है।

यह चमत्कार कोई माने तो ठीक और न माने तो ठीक, परन्तु आज परम सौभाग्यशाली प्रधानमंत्री जी श्री नरेन्द्र मोदी जी रूपी प्रधानसेवक यह करके दिखा रहा है। सारा संसार शान्ति और समृद्धशाली भारत की ओर देख रहा है। मुस्लिम आक्रान्ताओं का रक्त रंजित काल और भारत गोरे अंग्रेजों के चंगुल से निकल कर स्वयं के बल-बूते पर ऊपर उठता दिखाई दिया। देश लोकतांत्रिक होकर उठ खड़ा हो गया।

समझ लीजिए यही भगवान कृष्णचन्द्रजी महाराज का गीता का वचन सत्य प्रतीत हुआ है अर्थात् मैं समय-समय में देश को गर्त में जाने से पहले किसी रूप में ऐसे महामानव के रूप में आकर अवतरित हुआ। आर्य समाज मूर्ति पूजा का विरोधी रहा, उस महानायक राम के आदर्श और मर्यादाओं को छोड़कर लाखों-करोड़ों रुपयों से शानदार राम मन्दिर को बनता देख रहा है। अवतारवाद कहाँ रह गया समझ से परे है। अवतारवाद कौनसे युग की खोज करता रहा है आश्चर्य?

जिस दयानन्द को अँग्रेज सरकार बागी फकीर कहती रही, वहीं महात्मा गाँधी कहलाए जो राष्ट्रपिता भी कहलाते हैं, तो स्वामी दयानन्द जी सरस्वती को पितामह कहला कर प्रशंसित किया। आगामी दीपमालिका के दिन ही उनका निर्वाण भिणाय कोठी अजमेर में हो गया था। आर्य समाज संसार का प्रकाश स्तम्भ बना हमें प्रकाश देकर अमावस्या की गहन अन्धेरी रात में विधाता ने स्तम्भ छीन लिया। ऐसे देश के महान् सन्त को कोटिश: नमन और बधाई का सन्देश कृतज्ञ आर्य-जन प्रकट करते हैं। देश को जगाने वाला स्वयं जाग कर हमें- **'वयम् राष्ट्रे जाग्रयाम्'** का नारा दे गया। ध्यान रहे- **'ओल्ड इज गोल्ड'**। ■

ऋत-'सत्य' ही मानव धर्म

● मृदुला अगवाल
११-सी, सरत बोस रोड, कोलकाता (प. बंगाल)
चलभाष : ९८३६८४१०५१

मानव-धर्म तो ऋत (**'सत्य'**) की अर्चना है। **'सत्य'** पर डटे रहना ही साधुधर्म है। मानव-जीवन सरल, शान्त, स्वस्थ, सन्तुष्ट एवं प्रसन्न रहे, यही मनुष्य का आभूषण है। यही सच्चा सौन्दर्य है। **'सत्य'** को आध्यात्मिक आनन्द में प्रतिष्ठित करना ही जीवन का आकर्षण है। **'सत्य'** ही आत्मा है। सनातन **'सत्य'** सदा चिर-नूतन रहता है। **'सत्य'** ही भलाई है। **'सत्य'** का अनुसरण करना ही भलाई करना है। **'सत्य'** ही हमें दृढ़ बनाता है। **'सत्य'** से ही हम स्वतन्त्र होते हैं। अटल **'सत्य-निष्ठा'** हमारी भूमि व राष्ट्र के प्रति पूर्णतया समर्पित होती है। सत्य-ज्ञान क पा लेना ही विद्या है, शेष सब अविद्या है, अज्ञान है, माया है, मोह-जाल है। जीवात्मा-परमात्मा का सत्य स्वरूप और सम्बन्धों का सत्य-ज्ञान होना आवश्यक है। जीवात्मा **'सत्'** पदार्थ है और **'सत्'** वस्तु कभी **'असत्'** नहीं होती, शरीर नष्ट होने पर भी जीवात्मा का नाश नहीं होता। यही तत्त्वज्ञान है-ज्ञान का सार है। मनुष्य ही संसार का ऐसा प्राणी है जो अपने विवेक से (सत्य-असत्य का निर्णय विवेक से होता है) तत्त्वज्ञान और योग के द्वारा तमोगुण और रजोगुण को त्यागकर, स्वयं सद्गुणों को अपनाकर किसी भी परिस्थिति में प्रसन्न रह सकता है।

''नासतों विद्यते भावो ना भावो विद्यते सतः।
उभयोरपि दृष्टोऽन्तस्त्वनयो स्तत्त्वदर्शिभि।।''

-भगवद् गीता, अध्याय-२, श्लोक-१६।।

अर्थात्- असत् वस्तु का अस्तित्व नहीं है और सत् का अभाव नहीं है। इन दोनों के अन्तर को तत्त्वदर्शी दार्शनिक ज्ञानी पुरुषों ने देख लिया है।

जो सत्- असत् को विवेक से जानते हैं, ऐसा धर्मात्मा, सत्यप्रिय, विद्वान और सबका हितकारी हो, उसी को **'पंडित'** कहते हैं। **'सत्य'** का ज्ञान वही है जो किसी का तिरस्कार नहीं करता। परमात्मा ही **'सत्य'** है और **'सत्य'** ही परमात्मा है।

''परिमाग्ने दुश्चरिताद्बाधस्वा मा सुचरिते भज।
उदायुषा स्वायुषोदस्थाममृताँरऽअनु।।''

-यजुर्वेद, अध्याय-४, मन्त्र-२८।।

अर्थात्- मनुष्यों को योग्य हैं कि **'सत्य'** प्रेम से अगर हम प्रार्थना करते हैं, तो प्रार्थना किया हुआ परमात्मा शीघ्र ही अधर्म से छुड़ाकर धर्म में प्रवृत्त कर देता है। जब तक हम मनुष्यों का जीवन है तब तक धर्माचरण में रखकर हमें संसार वा मोक्षरूपी सुख देता है।

परमेश्वर सदा **'सत्य'** पालनकर्ता है। परम् **'सत्य'** एक ही है। सभी धर्म एक ही ईश्वर की ओर ले जाने वाले हैं। मन्तव्य एक ही है।

''य एतं देवमेकवृतम् वेद''

-अथर्ववेद, काण्ड-१३, सूक्त-४, मन्त्र-१५।।

अर्थात्- जो अकेले इस प्रकाशमान वर्तमान परमात्मा को जानता है वही **'सत्य'** जानता है।

भावार्थ- जो पुरुष सर्वशक्तिमान अद्वितीय परमात्मा के प्रकाशमय स्वरूप को साक्षात् करता है, वह संसार में उन्नति करके सब प्रकार के आनन्द पाता है।

''ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या जीवो ब्रह्मेव नादर''- उपनिषदों में लिखा है कि ब्रह्म **'सत्य'** है, जगत् मिथ्या है, जीव और ब्रह्म दो नहीं है। जो जीवन-मरण में केवल **'सत्य'** को प्राथमिकता देता है, वही अपनी अन्तरात्मा के प्रति सच्चा रहता है। **''ऐ सत्य! मैं तुमसे प्रेम करता हूँ, ऐ प्रेम! मैं तेरे प्रति सच्चा हूँ।''** **'सत्य'** कभी लाभ-हानि का रास्ता नहीं चुनता। प्रेम मार्ग ही सच्चा मार्ग है। सच्चा व्यक्तिवाद ही एकमात्र परोपकार वृत्ति है। **'सत्य'** स्वयं ही फैलता है, जिस तरह सूर्य का प्रकाश। **'सत्य'** प्रकाश स्वरूप है, 'असत्य' अन्धकार स्वरूप। **'सत्य'** की तरफ निष्ठा होने से वैज्ञानिक आविष्कार करता है। वह **'सत्य'** के निकट आता है और 'असत्य' से दूर होता जाता है। वैज्ञानिक ज्ञान पारस्परिक सहाय, सहयोग व एकता से प्रकट होता है। वैदिक आस्था से उसका आविष्कार होता है। 'सत्य' क्या है? वेदों ने बताया क्योंकि वेद सब सत्य-विद्याओं का पुस्तक है। 'सत्यार्थ प्रकाश' में स्वामी दयानन्दजी ने लिखा है कि जितना ज्ञान मनुष्य के जीवन में आवश्यक है वह वेदादि शास्त्रों में उपलब्ध है। उनके ग्रहण से ही **'सत्य'** का ग्रहण है। मानव के आचरण से उसके **'सत्य'** और **'ज्ञान'** का प्राकट्य होता है। सदाचार व सत्यभाषण मानव-समाज को सभ्य, सुसंस्कृत व सम्मान का अधिकारी बनाता है। 'सत्य' ही व्यवहार की आधार-शिला है। जो **'सत्य'** है, उसको **'सत्य'**, जो मिथ्या है उसको मिथ्या बोलना ही **'सत्य'** अर्थ का प्रकाश करना है। **'सत्य'** व सदाचार के मार्ग पर चलकर जीवन को सार्थक बनाया जा सकता है। **'सत्य'** ही व्यवहार की आधारशिला है। जो **'सत्य'** है, उसको **'सत्य'**, जो मिथ्या है उसको मिथ्या बोलना ही **'सत्य'** अर्थ का प्रकाश करना है। **'सत्य'** व सदाचार के मार्ग पर चलकर जीवन को सार्थक बनाया जा सकता है। सामवेद १४६१ मन्त्र के अनुसार परमात्मा की स्तुति के लिए जो लोग सब ओर से शुद्धि करने वाली **'सत्यवाणी'** को जानते हैं- वे ही प्रशंसा करने योग्य है।

चरित्र-निर्माण भी शुद्ध-प्रेम और स्वार्थ-त्याग कर 'सत्य' में ही स्थित रहता है। **'सत्य'** ही नैतिकता का मार्ग प्रशस्त करता है। नैतिकता की दृष्टि से कहा गया है- **'सत्यं वदः'**- तैत्तरीय उपनिषद्।

'सत्यमेव जयते नानृम'- सत्य की ही जीत होती है। हम भारतीयों का दृढ़ विश्वास है और उपनिषद् भी कहते हैं कि हम सदैव सत्य ही बोलें क्योंकि असत्य की जीत नहीं होती। गौतम बुद्ध ने भी कहा है कि **'झूठ को सत्य से जीता जा सकता है।'** ऋग्वेद, मंडल-१०, सूक्त-५३, मन्त्र-६ में कहा भी है कि **'मनुर्भव जनया दैव्यं जनम्'** अर्थात् हम सच्चेरूप से मननशील मानव बनें और अपनी सन्तान को देवता (विद्वान्) के रूप में जन्म दें। श्रेष्ठ सन्तान और शिष्य का विस्तार करना मानव के लिए अभीष्ट है। **'सत्य'** दुर्भेद्य है। जो **'सत्य'** पर स्थिर रहता है वही सर्वशक्तिमान परमात्मा पर विजय प्राप्त कर लेता है। परमात्मा का

सत्यशील एवं धर्मयुक्त विद्या धन धार्मिक मनुष्य को समस्त सुख देता है। वह काम, क्रोध, लोभ, मोह, भय, शोक रूपी शत्रुओं को निवृत्त कर जितेन्द्रियपन आदि गुणों को देता है। जैसे मल्लाह मनुष्य आदि को सुखपूर्वक नाव से समुद्र पार करता है वैसे ही परमेश्वर भी विशेष ज्ञान से मानव को दु:खसागर से पार कराता है। ईश्वर के सत्यरूप स्वरूप को जानकर उसकी उपासना, स्तुति एवं प्रार्थना करनी चाहिए। **'सत्य'** से अगर हम भयभीत न हों अर्थात् तनिक भी न डिगे तो हम पूर्ण अन्त:करण से कह सकते हैं कि **'अहं ब्रह्मास्मि'** अर्थात् **''मैं ही ईश्वर हूँ''**। जैसे कि श्रीकृष्ण महाभारत में स्वयं को परमात्मा ही समझते थे, वे उसी परमात्मा में इतना लीन हो चुके थे कि उनका अपना अलग कोई अस्तित्व ही नहीं था। उन्होंने अपने योगबल से अर्जुन के हृदय में **'दिव्य-चक्षु'** रूप ज्ञानभर दिया, जिसे अर्जुन ने जब ज्ञान की आँखों से देखा तो ब्रह्म व परमात्मा को सर्वत्र पाया। यही श्रीकृष्ण का **'विश्वरूप दर्शन'** है। इसका अभिप्राय यही है कि मनुष्य परमात्मा को प्रत्येक वस्तु में सर्वव्यापक व अन्तर्यामी समझे। तभी वह **'सत्य'** समझ पाएगा।

'सत्यधर्म' को मानने वाले व्यक्ति को दु:ख, कष्ट, अपमान, आरोप आदि सहन करने की शक्ति मिलती है। जैसे 'वायु' का धर्म है प्राणियों को श्वास लेने में सहायक हो, वैसे ही प्रत्येक मनुष्य का धर्म है **'सत्यज्ञान'** और उस पर आधारित कर्म। इसी से मनुष्य का कल्याण होता है। **'भगवद्- गीता'** मानव-जाति के लिए एक अमूल्य निधि है। उसने मानव-समाज की सारी समस्याओं को सुलझाकर मानव-जीवन को **'सत्यं-शिवं-सुन्दरम्'** बना दिया। आधुनिक कठोरता को समाप्त कर पारस्परिक करुणा, स्नेह और सम्मान की धारा को बहा दिया है। मनुष्यों को चाहिए कि जिस परमेश्वर के सामर्थ्य से प्रकाशमय विद्या, पृथ्वी के समान सहनशीलता, चन्द्रमा के तुल्य शान्ति, सूर्य के सदृश नीति का प्रकाश, समुद्र के समान गम्भीरता हो, उसी परमेश्वर को ही 'सत्यधर्म' से अपना मित्र मानें।

सत्य-असत्य, नित्य-अनित्य, जड़-चेतन, जो कि विवेक से जाना जाता है, विवेक जो झूठ और सच में फर्क बताता है, आत्म-अनात्म वस्तु में अन्तर बताता है, उसी विवेक को हम प्रयोग में लाएँ। ■

परनिन्दा से बचें

● रोहिताश्व जांगिड
से.नि. वरिष्ठ अध्यापक
डाबला रोड, कोटपूतली, जयपुर (राज.)
चलभाष : ७७२७८३८९९९

कोई भी व्यक्ति अपनी निन्दा पसन्द नहीं करता है। परन्तु वह दूसरों की निन्दा करने से नहीं चूकता है। हर व्यक्ति चाहता है कि उसकी सदा प्रशंसा हो। जब व्यक्ति स्वयं की प्रशंसा चाहता है तो उसे दूसरों की भी प्रशंसा करने से परहेज नहीं करना चाहिये। पर निन्दा नहीं करनी चाहिये। पर निन्दा से बचना चाहिये। **'आत्मनः प्रतिकूलानी परेषां न समाचरेत्'** अर्थात् इसवाक्य का तात्पर्य है कि मनुष्य को वैसा व्यवहार दूसरों के साथ नहीं करना चाहिये, जैसा व्यवहार वह अपने साथ नहीं चाहता है। जब हम दूसरों के द्वारा की गई निन्दा को सहन नहीं कर सकते तो हमें भी दूसरों की निन्दा नहीं करनी चाहिये। जैन आगमों में निन्दक के लिए कहा गया है कि वह पीठ का मांस खाने वाले हैं अर्थात् पीठ पीछे दूसरों की बुराइयों को कहकर वह उनके दिल दुखाने वाले हैं। अत: निन्दा करना एक प्रकार से हिंसा ही है। किसी भी तरह से दिल दुखाना, दिल को चोट पहुँचाना हिंसा ही है। संसार में जितने भी प्राणी हैं, सभी में कुछ गुण तथा कुछ दोष पाए जाते हैं। सर्वथा निर्दोष तो परमात्मा है। शेष सभी में गुणों के साथ दोषों का समावेश होता है। किसी में गुणों का आधिक्य है तो किसी में दोषों का आधिक्य है। इसलिए ज्ञानियों ने कहा है कि निन्दा या आलोचना करनी हो तो अपने दोषों की करो जिससे वे दोष कम हो जाएँ या नष्ट हो जाएँ।

दोष पराये देखकर, चल्या हसंत हसंत।
अपनी च्येति न आवई, जिसका आदि न अन्त।।

अर्थात् दूसरों के दोष देखते हुए मनुष्य हँसता है पर अपने दोषों की तरफ तनिक भी ध्यान नहीं देता, जिन दोषों का आदि अन्त ही नहीं है।

जै कोउ निन्दे सधु कूँ, संकट आवे सोय।
नरक मायँ जामे मरे, मुक्ति बहु न होय।।

अर्थात् जो व्यक्ति सत्पुरुष की निन्दा करता है, उसे अवश्य ही संकट का सामना करना पड़ता है। वह नरक में जन्मेगा, मरेगा, उसे मुक्ति कभी नहीं मिलेगी।

कबीर घास न निदिय, जो पाव तलि होइ।
उड़ि पड़ी जब आँख में खरी दुलेहा होइ।।

अर्थात् कबीर दासजी कहते हैं कि कभी पैरों तले जो घास है उसकी भी निन्दा नहीं करनी चाहिये। यदि छोटा सा टुकड़ा उड़कर आँख में गिर जाएगा तो अत्यन्त दु:ख उठाना पड़ेगा।

निन्दक नियरे राखियो, आंगन कुटि छबाय।
बिन साबुन बिन पानी के, निरमल करे सुवाय।।

कबीरजी ने तो यहाँ तक कहा है कि जो हमारी निन्दा करते हैं उनको भी अपने पास ही रखना चाहिये क्योंकि वे हमारे दोषों को बताएँगे तो हम उन दोषों को दूर कर लेंगे और निर्दोष बन जाएँगे।

महात्मा बुद्ध ने कहा है कि **'जो दूसरों के दु:ख बखानता है वह अपने दु:ख बखानता है।'** महाभारत में भी कहा गया है कि **'दुर्जनों को निन्दा में ही आनन्द आता है। जिस तरह कौआ सारे रसों को चखकर गन्दगी से ही तृप्त होता है।'** तमिल में कहा गया है कि **'निंदक और जहरीले साँप दोनों के दो–दो जीभें होती हैं।'** निन्दा एक जघन्य और भयंकर पाप है। निन्दा से जितनी हानि स्वयं को होती है, उतनी हानि जिसकी निन्दा करते हैं उसकी नहीं होती है। निन्दा कभी भी सहायता या सुधार के भाव से नहीं की जाती है। यह बदनामी करने की दृष्टि से की जाती है। निन्दक की दृष्टि किसी के गुणों पर नहीं पड़ती है बल्कि दूसरों के अवगुणों पर पड़ती है। हमारे लिखने का सार यही है कि हम आलोचना अपने दोषों की करें, दूसरों के तो गुण ही ग्रहण करें परनिन्दा से बचना चाहिये। इस वाक्य को सदा ध्यान में रखें। ■

पंच महायज्ञ

- ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका

1. ब्रह्मयज्ञ

2. देवयज्ञ

3. पितृयज्ञ

ध्यातव्य

जीवित पितरों की सेवा करना 'श्राद्ध' और उन्हें सुखयुक्त करना 'तर्पण' कहलाता है।

4. अतिथियज्ञ

5. बलिवैश्वदेवयज्ञ (भूतयज्ञ)

सौजन्य : मोहन लाल, आर्य समाज रावतभाटा वाया कोटा, पिन-323307 (राज.) मो. 07688806844

कल्पना-चित्रण : ओम प्रकाश आर्य, आर्य समाज रावतभाटा वाया कोटा (राज.) मो. 09462313797

तत्वावधान : अर्जुन देव चड्ढा (प्रधान) मो. 09414187428, नरदेव आर्य (उपप्रधान क्षेत्र रावतभाटा) मो. 09460742642, जिला आर्य प्रतिनिधि सभा कोटा (राज.)

वैदिक सिद्धान्तों पर आधारित इस प्रकार के ५० चित्र प्राप्त करने एवं वैदिक संसार मासिक पत्रिका की सदस्यता के लिए सम्पर्क करें : ९४२५०६९४९१

अ.भा. जांगिड ब्राह्मण महासभा, दिल्ली के प्रधान श्री नेमीचन्दजी शर्मा का प्रथम मध्यप्रदेश आगमन

महासभा प्रधान श्री नेमीचन्दजी शर्मा के करकमलों द्वारा इन्दौर की धरा पर ध्वजारोहण।

महासभा प्रधान श्री नेमीचन्दजी शर्मा ने प्रतिनिधिमण्डल के साथ जाकर इन्दौर संसदीय क्षेत्र के सांसद महोदय श्रीमान शंकर लालवानीजी से भेंट की। इस अवसर पर सांसद महोदय ने 'वैदिक संसार' के जनवरी २०२१ के ऐतिहासिक अंक का विमोचन किया।

महासभा प्रधान श्री नेमीचन्दजी शर्मा इन्दौर के सांसद श्रीमान शंकर लालवानीजी के साथ प्रसन्न मुद्रा में। साथ हैं नरेश दम्मीवाल जोधपुर व वैदिक संसार के प्रकाशक सुखदेव शर्मा।

इन्दौर के सांसद महोदय श्रीमान शंकर लालवानीजी से सामाजिक विषयों पर वार्ता करते हुए महासभा प्रधान श्री नेमीचन्दजी शर्मा।

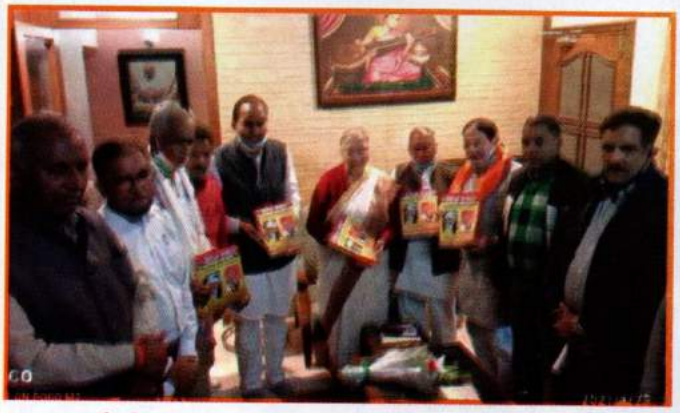

पूर्व लोकसभा अध्यक्ष श्रीमती सुमित्रा महाजन ताई तथा इन्दौर नगर के पूर्व महापौर कृष्णमुरारी मोघेजी के साथ महासभा प्रधान श्री नेमीचन्दजी शर्मा और साथीगण।

ध्वजारोहण पश्चात् महासभा प्रधान श्री नेमीचन्दजी शर्मा के साथ राष्ट्रगान का गायन करते समाज बन्धु।

महासभा प्रधान श्री नेमीचन्दजी शर्मा की अध्यक्षता में वैदिक संसार द्वारा आयोजन सम्पन्न

(विस्तृत विवरण देखें पृष्ठ ३८ पर)

महासभा प्रधान श्री नेमीचन्दजी शर्मा तथा आयोजन में पधारे अतिथि महानुभावों के साथ वैदिक संसार के प्रकाशक सुखदेव शर्मा एवं परिवार के सदस्यगण।

सुश्री अंजलि आर्या के ब्रह्मत्व में मुख्य यजमान श्री नेमीचन्दजी शर्मा अतिथि महानुभावों के साथ यज्ञ करते हुए।

'वैदिक संसार' के जनवरी २०२१ के ऐतिहासिक अंक का विमोचन करते महासभा प्रधान श्री नेमीचन्दजी शर्मा, सुश्री अंजलि आर्या एवं अतिथि महानुभाव।

आर्य जगत् की सुविख्यात भजनोपदेशिका सुश्री अंजलि आर्या वैदिक ज्ञान गंगा अमृत वर्षा करती हुईं।

महासभा प्रधान श्री नेमीचन्दजी शर्मा एवं अतिथि महानुभावों के साथ वैदिक संसार के प्रकाशक सुखदेव शर्मा व धर्मपत्नी श्रीमती दुर्गा शर्मा व सुपुत्र नितिन शर्मा।

महासभा प्रधान श्री नेमीचन्दजी के साथ श्री नन्दलालजी जांगिड, सुखदेव शर्मा एवं श्री नारायणजी विश्वकर्मा (चार शरीर होते हुए भी एक जान हैं हम)

महासभा प्रधान श्री नेमीचन्दजी के करकमलों से मध्यप्रदेश निवासी वरिष्ठ कार्यकर्ताओं का सम्मान

महासभा प्रधान श्री नेमीचन्दजी शर्मा एवं अतिथि महानुभावों के साथ इन्दौर महानगर के समाज बन्धु।

महासभा प्रधान श्री नेमीचन्दजी शर्मा एवं अतिथि महानुभावों
के साथ जिला हरदा एवं खातेगाँव (देवास) क्षेत्र के समाज बन्धु।

महासभा प्रधान श्री नेमीचन्दजी शर्मा एवं अतिथि महानुभावों
के साथ ग्वालियर और शाजापुर के समाज बन्धु।

महासभा प्रधान श्री नेमीचन्दजी शर्मा एवं अतिथि महानुभावों
के साथ राजधानी भोपाल के समाज बन्धु

महासभा प्रधान श्री नेमीचन्दजी शर्मा एवं अतिथि महानुभावों
के साथ रतलाम के समाज बन्धु

महासभा प्रधान श्री नेमीचन्दजी शर्मा एवं अतिथि महानुभावों
के साथ बुरहानपुर और नीमच के समाज बन्धु

महासभा प्रधान श्री नेमीचन्दजी शर्मा के साथ उज्जैन के समाज बन्धु
एवं श्री रमेशचन्द्रजी खरनालिया, औरंगाबाद।

विद्यया अमृतमश्नुते

• डॉ. सत्यदेव सिंह
५०७, गोदावरी ब्लॉक, अशोका सिटी,
गोवर्धन चौक, कृष्णा नगर,
मथुरा-३८१००४ (उ.प्र.)
चलभाष : ९९९७९८९९६३, ८६३०५०६१०५

इस जन्म में मनुष्य को भोग और अपवर्ग की सिद्धि के लिए यह मानव-योनि परमात्मा द्वारा प्रदान की गई है। भोग संसार-समाज की सेवा के लिए और सतत् ईश्वर का स्मरण कर अपवर्ग-मोक्ष प्राप्त करने के लिए यह मानव-जन्म हमें मिला है।

यह संसार अपवर्ग (मोक्ष) प्राप्ति की सीढ़ी है। बुद्धिमान मनुष्य मोक्ष का चयन करते हैं।

सामान्य जन ईश्वर से संसार के पदार्थ की माँग करते हैं और समय-समय पर दु:ख उठाते रहते हैं। जो मेधावी बुद्धिवाले हैं, वे ईश्वर की ओर मुड़ते हैं और उनसे केवल जन्म-मरण से मुक्ति मोक्ष माँगते हैं।

संसार के मेले में भोगी व्यक्ति खो जाता है और परमात्मा में योगी खो जाता है। एक को पुनर्जन्म मिलता है और दूसरे को मोक्ष मिलता है। इन्द्रियों में सुख लेने वाला **'शार्ट कट'** अपनाने वाला संसारी सदा दु:खी तथा भयभीत बना रहता है। परमात्मा को प्रेम करने वाला योगी तप-स्वाध्याय-ईश्वर प्रणिधान करता हुआ, आन्तर युद्ध करके विजय को प्राप्त कर लेता है।

प्रेय-पथ पर सदाभीड़ बनी रहती है किन्तु श्रेय-पथ पर साधक अकेला होकर भी निर्भयी बनकर आगे बढ़ता जाता है। रोग-भोग, वियोग रूपी यह संसार है, उसमें बने रहना बुद्धिमानी नहीं है। संसार एक कंटक शैया हैं, उनमें अविद्याग्रस्त ही रहते हैं। तत्वज्ञानियों के लिए यह संसार नहीं है। तत्वज्ञानी जन प्रीतिपूर्वक न्याय-धर्म का आचरण तथा ईश्वर प्रणिधान का साधन अपनाते हुए, आवागमन की शृंखला को तोड़ देते हैं। संक्षेपत: कहें तो सकाम कर्म से जाति-आयु-भोग (शरीर) प्राप्त होता है और निष्काम कर्म से मोक्ष प्राप्त होता है। अपने कर्म अनुसार हमें माता-पिता, भाई-बहन आदि प्राप्त होते हैं, संस्कार अनुसार नहीं। मनुष्य में कर्म शून्य नहीं होते। कर्म प्रवाह से अनादि है। उनका कभी प्रारम्भ नहीं हुआ, अन्त भी नहीं होगा। अविद्याजन्य वासनाओं का भस्मीकरण होते ही मोक्ष प्राप्त हो जाता है। आत्मा निमित्त से अशुद्ध होता है निमित्त से ही वह शुद्ध होगा। आत्मा से विद्या नहीं है और अविद्या भी नहीं है। निमित्त कारण से अविद्या आती है और निमित्त कारण से ही जाएगी। मृत्यु काल के समय जिन संस्कारों वाला मन था, वैसे संस्कारों वाला नया मन जन्म के प्रारम्भ में जीवात्मा को प्राप्त होता है। यही नैसर्गिक न्याय है।

शुभ संस्कारों का वर्धन करना और अशुभ संस्कारों का क्षय करना ही साधना है। सत्य की जय और असत्य की पराजय हमें इसी जन्म में करना होगी, तभी हम अविद्या से दूर हो जाएँगे और विद्यावान बन पाएँगे। जिसमें अविद्या है, वह विश्वसनीय नहीं है। उल्टा-पुल्टा काम अविद्या से रंजित मनुष्य करते हैं। योग साधना विद्या के पिपासु लोग करते हैं। योग साधना विश्वास और सत्य की साधना है। वहाँ छल-कपट-धोखेबाजी चल नहीं सकती। अविद्या में जीने वाले व अपने को श्रेयमार्गी बताने वाले लोग स्वयं बड़े धोखे में जीते हैं। उन लोगों का सर्वनाश निश्चित है, उसे कोई बचा नहीं सकता। रावण, कंस, दुर्योधन आदि इसके प्रत्यक्ष उदाहरण हैं। स्वयं को धीर, वीर, ज्ञानी सिद्ध करने वाले प्रेयमार्गी नरक गामी होते हैं। रावण को मारने वाला आज कहाँ राम मिलता है? इसीलिए तो उसे प्रतिवर्ष जलाना पड़ता है, फिर भी वह पुन: खड़ा हो जाता है। रावण बाहर नहीं है, हमारे अन्दर है। मन में अविद्या जन्म कुत्सित वासनाएँ ही तो रावण हैं। उन्हें निर्बीज समाधि में परमात्मा-अग्नि से जलाना होगा। निर्बीज समाधि में परमात्मा अपनी निज शक्ति से योगी की राक्षसी कुटिल वासनाओं को कूटकर-पीसकर चाट जाते हैं, जैसे गाय अपने नवजात बछड़े को चाटकर शुद्ध कर देती है और अपना दुग्ध रूपी अमृतपान करवाती है। शुद्ध निर्मल बुद्धि वाले ईश्वर की ओर दौड़ते हैं और चंचल वृत्ति वाले संसार के विषयों में लालायित रहते हैं, जो प्रकरण अनुसार विवेक पूर्ण व्यवहार करता है, वह सुखी हो जाता है और जो बिना सोच-विचार अपनी मनमानी करता है, वह दु:खी हो जाता है। अविद्या वाले मनुष्य स्वार्थी, हठग्राही, दुराग्रही होते हैं। अपनी बात मनमाने के लिए वे कुछ भी करते हैं, किन्तु विद्यावान धीर, गम्भीर और विवेकी होते हैं, वे करने योग्य कार्य ही करते हैं। अपना कल्याण और अन्य पर उपकार श्रेय पथवाला साधक करता है। वह किसी का दु:ख नहीं देख सकता। तप-स्वाध्याय और ईश्वर समर्पण का अनुष्ठान करने वाले श्रेय मार्गी होते हैं।

इस विषय पर प्रकाश डालते हुए यजुर्वेद के ४०वें अध्याय के १४वें मन्त्र में इस प्रकार कहा गया है कि जो मनुष्य इस संसार में रहकर विद्या और अविद्या के मर्म को जान लेता है, वह **'विद्यया मृत्युं तीर्त्वा'** अविद्या स्वरूप जड़-पदार्थों का भौतिक पदार्थों का सदुपयोग करते हुए अमर पद मोक्ष को प्राप्त कर लेता है-

विद्यां च अविद्यां च यस्तद्वेदोभयं सह।
अविद्यया मृत्युं तीर्त्वा विद्ययामृतमश्नुते।।

-(यजु. ४०/१४)

संसार में तीन पदार्थ अनादि हैं और अनादि पदार्थ नित्य होते हैं। सत, रज, तम के संयोग से त्रिगुणात्मक संसार की उत्पत्ति होती है। संसार जड़ होते हुए सतत् गतिशील है, इस गतिशीलता का निमित्त कारण ब्रह्म (परमात्मा) है। वह अपनी अनन्त शक्ति में जगत् की क्रियाओं का ज्ञानपूर्वक संचालन करता है।

मनुष्य संसार में रहते हुए जड़-जगत् का उपभोग करता है, किन्तु सदा ही अतृप्त बना रहता है। मनुष्य चेतन जगत् के साथ सम्बन्धों व व्यवहारों से जो-जो अनुभव प्राप्त करता है, उसके बाद वह सुख और शान्ति प्राप्त करने में असफल हो जाता है, आखिर वह सांसारिक दु:ख

का पारखी बन जाता है और सांसारिक दु:ख से त्रस्त होकर पुकार उठता है- **'अथातो ब्रह्म जिज्ञासा'**। सांसारिक अनुभव में कोरा दु:ख पीड़ा, अन्याय ही प्राप्त हुआ और मनुष्य समझ जाता है कि इस प्रकार संसार में और सांसारिक सम्बन्धों में कोई सार्थकता नहीं है, क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति अन्दर से दु:खी है, पीड़ित है व त्रस्त है। जिस वस्तु से सुखी नहीं, सुरक्षित नहीं,उसके अपनाने से क्या लाभ?

इस चराचर जगत् के स्वामी परम तत्व को जानने के लिए साधक मनुष्य में तीव्र-इच्छा- अभीप्सा, जिज्ञासा का होना परम आवश्यक है, उसके बाद ही ब्रह्म- ईश्वर की प्राप्ति हो सकती है। अब प्रश्न आता है कि वह ब्रह्म कैसा है? उसका स्वरूप क्या है? वह क्या करता है? उसे किस प्रकार प्राप्त किया जा सकता है?

ब्रह्म सूत्र का बीज सूत्र **'जन्मादि अस्य यतः'** के अनुसार परमात्मा ब्रह्म ने अपनी इच्छा से इस जगत् को उत्पन्न किया और परमात्मा ही अपने सामर्थ्य-शक्ति से जगत् को धारण, पालन और पोषण करता है, समय आने पर इसका विनाश (प्रलय) करता है। इस महान् कार्य को परमात्मा-ईश्वर व ब्रह्म के अलावा कोई दूसरा कर ही नहीं सकता।

जीवात्मा अल्पज्ञ, सीमित सामर्थ्य-शक्ति वाला है। जीवात्मा परमात्मा की सहायता के बिना कोई छोटा या बड़ा कार्य कर ही नहीं सकता।

अत: संक्षेपत: यह कहना उचित ही है कि वेद-उपनिषद् व आर्ष-ग्रन्थों के पढ़ने-पढ़ाने, सन्ध्या-उपासना, पंचमहायज्ञों के करने और होम-मन्त्रों के स्वाध्याय करने में साधक मनुष्य को कभी भी प्रमाद नहीं करना चाहिए। जैसे- श्वास, प्रश्वास सदा लिए जाते हैं कभी बन्द नहीं किए जाते। ठीक वैसे ही प्रत्येक साधक मनुष्य को नित्यकर्म प्रतिदिन करना चाहिए। जिस प्रकार झूठ बोलने से सदा पाप और सत्कर्मों के करने में सदा तत्पर रहना चाहिए। एतदर्थ सजग-सावधान रहकर मनुष्य मात्र को सतत स्वाध्यायशील बने रहना चाहिए, आत्म-निरीक्षण करते रहना चाहिए। ■

वो ही सच्ची माता है...

जन्म देने के बाद जिसे, संस्कार देना आता है।
वह जननी ही कहलाती, सच्ची माता है।।
श्रेष्ठ संस्कार देने को, चाहिये ज्ञान सही।
ऋषि–मुनियों और पूर्वजों ने ये बात कही।।
बड़े महत्व का इस तरह दायित्व निभाया जाता है।
तब ही तो मनुष्यों की प्रथम गुरु माता है।।
क्या बनें मेरी सन्तान? वो अपने जीवन में कैसी हो?
इसकी पूर्व योजना बनाए माता ऐसी हो।।
बड़े तप का कार्य महान ये होता है।
जिसका परिणाम श्रेष्ठ सन्तान होता है।।
जिसने इस दायित्व को, ठीक निभाया है।
जगत ने उन माताओं को, शीश नवाया है।।
संस्कृतियों में महान, भारत ही ये बात बताता है।
और यहीं के इतिहास में, ऐसी माता है।।
कहीं कौशल्या, कहीं सुमित्रा और यशोदा माता है।
यहीं गर्भ में देती ज्ञान, अभिमन्यु की माता है।।
इतिहास सुनहरे पन्नों का, यूँ भरा पड़ा है।
पर आज प्रश्न भविष्य का, सामने खड़ा है।।
क्या आज की जननी, सचमुच माता है?
माता बनने का ज्ञान भी, उसको आता है?
श्रेष्ठ सन्तान बनाने का, क्या उसने किया है काम?
या उसकी सन्तान है, संयोग का परिणाम।।
क्या माता–पिता ने उसको, इसका ज्ञान सिखाया है?
या शिक्षा में उसने, संस्कृति–संस्कारों को पाया है।।
या केवल भौतिक उन्नति का, साधन सीख गई है।
रूप बनाना, स्वांग बनाना, मोबाइल चलाना,फैशन आदि सीख गई है।।
वेदों की जगह उपन्यास जहाँ, माताएँ बाँच रही हैं।
बच्चों के सामने फिल्मी धुन पर, सड़कों पर नाच रही हैं।।
भारतीय संस्कृति का पुट, दिखने में नहीं आता है।
बच्चा क्रिकेट व फिल्में देखे, सत्संग में नहीं जाता है।।
आज नहीं बच्चों को माता, लोरी यहाँ सुनाती है।
टीवी देखते–देखते, वो तो खुद सो जाती है।।
माता देती ध्यान कि बच्चे ने, होमवर्क किया है।
पर स्कूली शिक्षा ने कहाँ, संस्कृति का ज्ञान दिया है।।
कई शिक्षा संस्थान तो, इसीलिए यहाँ खुले हैं।
संस्कृति सिखाने की तो बात दूर, भाषा भुलाने पे तुले हैं।।
स्कूली शिक्षा से बच्चा, बनता नहीं अपना।
श्रेष्ठ सन्तान बनाने का, रह जाता है अपूर्ण सपना।।
संस्कृति बढ़ा करती है, आगे जिस सीढ़ी से।
दूर रह गई वह सीढ़ी, आज उसी पीढ़ी से।।
ध्यान दिया न आज तो, पछताना हाथ रहेगा।
अगली पीढ़ी तो रहेगी, पर ना अपना साथ रहेगा।।
कमी देख हमारे कर्मों की, भविष्य क्या कहेगा।
कोसेगा हमको केवल, अभाव ही सहेगा।।
भविष्य हमें ना मार सके, ऐसा ताना।
तो अगली पीढ़ी को अपनी, संस्कृति बतलाना।।
सब बतलाते हम भी बतलाएँ, इसमें क्या जाता है।
जो ऐसा करती है, वो ही सच्ची माता है।।

• **आर्य पी.एस. यादव**
प्रधान आर्य, समाज, मण्डीदीप
जनपद : रायसेन (म.प्र.)
चलभाष : ९४२५००४३७९

भारत वर्ष की नींव गाय और गुरुकुलों पर टिकी है

● **खुशहालचन्द्र आर्य**
द्वारा- गोविन्दराम आर्य एण्ड सन्स
१८०, महात्मा गान्धी मार्ग, कोलकाता
चलभाष : ९८३०१३५७९४

किसी भी व्यक्ति, परिवार, समाज, राष्ट्र व विश्व को तीन गुणों की सबसे अधिक आवश्यकता होती है– पहला बल, दूसरा बुद्धि और तीसरा चरित्र। गाय और गुरुकुल इन तीनों गुणों को बढ़ाने वाले होते हैं। इसीलिए प्राचीन भारत में गऊओं का पालन और गुरुकुल शिक्षा पद्धति ही अधिक प्रचलित थी। तभी भारत **'विश्व गुरु'** तथा **'सोने की चिड़िया'** कहलाता था। अंग्रेजों के आने से पहले तक भी गाय का पालन तथा गुरुकुलों की शिक्षा काफी मात्रा में थी। तभी अंग्रेजों ने समझ लिया था कि यदि हमको भारत पर शासन करना है तो गौ–हत्या चालू करनी पड़ेगी और गुरुकुलीय शिक्षा पद्धति समाप्त करनी पड़ेगी। इसीलिए उन्होंने गाय की हत्या के लिए हिन्दू–मुसलमानों में फूट डाली और गुरुकुलीय शिक्षा पद्धति को समाप्त करने के लिए इंग्लिश स्कूलों का प्रचलन बढ़ाया। गुरुकुलों के महत्व को हटाकर इंग्लिश स्कूलों का महत्व बढ़ाया, जिससे जन साधारण अपने बच्चों को गुरुकुलों में न भेजकर इंग्लिश मीडियम के स्कूलों में पढ़ाना आरम्भ कर दे। इसी से गौ–हत्या आरम्भ हो गई और गुरुकुलों की संख्या कम होने लगी।

हमें अफसोस है कि भारत को स्वतन्त्र हुए सत्तर साल हो गए लेकिन कांग्रेस सरकार ने इन दोनों की तरफ कोई ध्यान नहीं दिया। अब देश का सौभाग्य उदय हुआ है, भारत का शासन भाजपा के हाथों में आ गया और देश का प्रधानमन्त्री नरेन्द्र मोदी जैसा त्यागी, तपस्वी, ईमानदार व परिश्रमी व्यक्ति जो हिन्दुत्व की भावना से ओतप्रोत है, साथ ही पूज्य योगाचार्य स्वामी रामदेवजी महाराज जो गुरुकुलों में पढ़े हुए हैं और महर्षि दयानन्द के अनन्य भक्त हैं। वे मोदीजी के मार्गदर्शक हैं। अब हमें पूरी उम्मीद है कि इन दोनों की तरफ सरकार पूरा ध्यान देगी और देश पुनः उन्नत व समृद्धशाली बनेगा।

अब प्रश्न उठता है कि गाय और गुरुकुलों से देश उन्नत और समृद्धशाली कैसे बनेगा? इसका हम ऊपर लिख चुके हैं कि देश को उन्नत और समृद्धशाली बनाने के लिए तीन गुण बल, बुद्धि और चरित्र की आवश्यकता होती है। यह तीनों गुण गाय और गुरुकुलों में विद्यमान है। गाय केवल घास खाकर, उसके बदले में दूध, घी, दही, मक्खन व छाछ आदि पौष्टिक व उपयोगी चीज देती है। जिनके खाने से शरीर बलिष्ठ तथा हृष्ट–पुष्ट होने के साथ सुन्दर व आकर्षक भी बनता है। गाय का दूध पीने से बुद्धि पवित्र व सात्विक बनती है। साथ ही बुद्धि की वृद्धि भी होती है जिससे मनुष्य के विचार सात्विक होने से वह चारित्रवान भी बनता है। इसी प्रकार गुरुकुलों में विद्यार्थी संस्कृत और वेद पढ़ने से उसकी शुद्धि निर्मल व सात्विक बनती है। पच्चीस वर्ष तक पूर्ण ब्रह्मचारी रहने से विद्यार्थी बलिष्ठ व चरित्रवान बनता है। बुद्धि पवित्र और सात्विक होने से उसमें मानवता के सभी गुण जैसे दया, करुणा, सहृदयता, परोपकारिता, निष्पक्षता, सच्चाई, ईमानदारी, साहस आदि गुण स्वमेव ही आ जाते हैं और वह एक पूर्ण मानव बन जाता है। इस प्रकार हम देखते हैं कि मानवीय गुण आने के गाय और गुरुकुल दो ही माध्यम हैं। इनके ऊपर हम और अधिक विशेष चर्चा करते हैं–

गाय : गाय मनुष्य की सर्वोत्तम सहयोगी है। मानव को पूर्ण मानव बनाने में गाय का सबसे अधिक योगदान होता है। वैसे तो ईश्वर ने सृष्टि के आदि में प्रकृति की सब चीजें तैयार करके यानी पृथ्वी, सूर्य, चन्द्रमा, तारे, नदी, नाले, पहाड़, वन, पशु–पक्षी, कीट–पतंग, सब मनुष्यों के लिए बनाए। इन सभी का मनुष्य किसी का प्रयोग, किसी का सहयोग, किसी का उपभोग करता है। जैसे गाय, भैंस, बकरी, दूध के लिए, घोड़ा, हाथी, ऊँट सवारी के लिए, सोना, चाँदी लोहा, लकड़ी प्रयोग के लिए और अन्न, फल, वनस्पति आदिउपभोग के लिए बनाए हैं। हमें इसी प्रकार प्रयोग, सहयोग व उपभोग करना चाहिये। इसी में मानव की मानवता है।

ईश्वर ने जीव की दो किस्म की योनियाँ बनाई हैं। एक भोग योनि और एक कर्म योनि। पशु–पक्षी, कीट–पतंगे आदि केवल भोग योनि हैं। इसमें जीव जो कर्म करता है उसको स्वाभाविक कर्म कहते हैं। जैसे खाना–पीना, सोना–जागना, उठना–बैठना तथा सन्तान पैदा करना आदि। इन कर्मो का जीव को कोई फल नहीं मिलता। परन्तु मनुष्य भोग योनि के साथ–साथ कर्म योनि भी है। साधारण भोग जैसे पशु–पक्षी करते हैं वैसे ही मनुष्य भी भोग योनि होने से साधारण कर्म करता है। उसका फल मनुष्य को भी नहीं मिलता। मनुष्य कर्म योनि भी है इसलिए उसको उसके लिए अच्छे व शुभ कर्मों का फल सुख के रूप में और बुरे व अशुभ कर्मों का फल उसे दुःख के रूप में ईश्वर अपनी न्याय व्यवस्था के अनुसार देता है।

मनुष्य जो कर्म करता है, उन्हें नैमित्तिक कर्म कहते हैं। नैमित्तिक कर्म वह होते हैं जो सिखाने से सीखा जाए। माता–पिता बच्चे को चलना सिखाते हैं और बोलना सिखाते हैं, तभी बच्चा चलना व बोलना सीखता है। पशु–पक्षी के बच्चे स्वयं ही चलना, बोलना सीख लेते हैं। उनके लिए यह कर्म स्वाभाविक है और मनुष्य के लिए नैमित्तिक है। इसीलिए सृष्टि के आरम्भ में जब माता–पिता व गुरु कोई नहीं थे, तब ईश्वर ही सबका माता–पिता व गुरु था। इसलिए ईश्वर ने सृष्टि के आरम्भ में मनुष्यों को क्या काम करने चाहिये और क्या काम नहीं करने चाहिये, इसको जानने के लिए चार ऋषियों, जिनके नाम अग्नि, वायु, आदित्य और अंगिरा थे, उनके मुख से चार वेद जिनके नाम ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद हैं, क्रमशः उच्चारित करवाए जिनको पढ़कर और उनके अनुसार आचरण करके अच्छे कर्मों को करे और बुरे कर्मों को छोड़े, जिससे मनुष्य अपने अन्तिम लक्ष्य मोक्ष को प्राप्त कर सके जिसके लिए ईश्वर जीव को उसके कर्मानुसार मनुष्य योनि में भेजता है। इसलिए मनुष्य का कर्तव्य हो जाता है कि वह मनुष्यता के गुण, परोपकार, दया, करुणा, सहृदयता, साहस, निष्पक्षता, मृदुभाषिता, अहिंसा आदि गुणों को अपनाए और अवगुण, काम, क्रोध, मद, लोभ, मोह, लालच, झूठ, बेईमानी, हिंसा आदि को छोड़कर अपना उत्तम व श्रेष्ठ जीवन बनाकर मोक्ष प्राप्ति का

अधिकारी बने। मनुष्य योनि ही कर्म योनि होने के कारण मोक्ष प्राप्ति का मार्ग है। इसीलिए मनुष्य योनि को ही मोक्ष का द्वार माना गया है। अन्य योनियाँ भोग योनियाँ होने से वे केवल भोग, भोगकर ही अगली योनि में चली जाती हैं। फिर जीव सब भोगों को अनेक योनियों में भोगकर फिर मनुष्य योनि में आता है और अच्छे कर्मों द्वारा मोक्ष को प्राप्त होता है। सब अच्छे कर्मों को करना और सब बुरे कर्मों को छोड़ना हमें वेद जो ईश्वर की वाणी है, सिखाता है। इसके लिए वेद में एक मन्त्र आया है–

ओ३म् विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव।
यद्भद्रं तन्न आ सुव।।

अर्थ : हे सकल जगत के उत्पत्ति कर्ता, समग्र ऐश्वर्य युक्त, युद्ध स्वरूप, सब सुखों के दाता परमेश्वर! आप कृपा करके हमारे सम्पूर्ण दुर्गुण, दुर्व्यसन और दु:खों को दूर कीजिये और जो कल्याण कारक गुण, कर्म, स्वभाव और पदार्थ हैं, वह सब हमको प्राप्त कीजिये।

इन सब शुभ कर्मों का करना और अशुभ कर्मों को छोड़ना विशेषत: हमें गौपालन और गुरुकुल शिक्षा पद्धति ही सिखलाती है। गौ के दूध, घी, दही, मलाई, छाछ से हमारी बुद्धि पवित्र और सात्विक बनती है जिससे हम बुरे कर्मों को छोड़ते हैं और अच्छे कार्यों को करते हैं। इसी प्रकार गुरुकुलों में बच्चे पच्चीस वर्षों तक ब्रह्मचारी रहकर वेदों को पढ़कर अपने जीवन को पवित्र के साथ–साथ बलवान व पुष्ट भी बनाते हैं। इसलिए इन दोनों की ओर मनुष्य को अधिक ध्यान देना चाहिये। गायों के सम्बन्ध में भी वेदों में मन्त्र आए हैं–

गावो विश्वस्य मातर:। गाय विश्व की माता है।
गावो यत्र तत: सुखम्। जहाँ गाय है वहीं सुख है।

वेदों ने भी गाय को माता कहा है। माता तो बच्चे को केवल तीन या चार वर्ष ही दूध पिलाती है। परन्तु गाय तो उम्र भर मनुष्यों को दूध पिलाती है। इसलिए गाय को माता मानना उचित है। साथ ही गाय मनुष्य पर अनेक उपकार करती है। वह अपने गोबर, गौमूत्र से उत्तम श्रेणी की खाद बनाती है जिससे जमीन की उर्वरा शक्ति बढ़ती है। गाय के गोबर, गौमूत्र व दूध, घी, दही से अनेक किस्म की दवाइयाँ बनती हैं जो मनुष्य के लिए बहुत लाभदायक है। यहाँ तक कि गौमूत्र से तो कैन्सर तक की दवाइयाँ बनती है जो काफी लाभदायक सिद्ध हो रही है। गाय के बछड़े हल जोतते हैं और गाड़ी खींचते हैं। इस प्रकार गाय मनुष्य के लिए बड़ी लाभदायक है। भारत एक कृषि प्रधान देश है और गाय का कृषि से विशेष सम्बन्ध है। इसलिए गाय भारत के लिए विशेष लाभदायक है। अत: भारत की उन्नति व समृद्धि के लिए गुरुकुलों को अधिक से अधिक खोलकर वेद प्रचार करना और गौशालाओं को अधिक से अधिक खोलकर गौरक्षा करना आज की सबसे अधिक आवश्यकता है। कारण इन्हीं दो कार्यों पर भारत की उन्नति व समृद्धि टिकी हुई है। इसलिए हमें इन दोनों कामों पर विशेष ध्यान रखना चाहिये। ■

आह्वान : आर्य समाज को जीवन्त बनाइये

● डॉ. लक्ष्मी निधि
'निधि विहार', १७२, न्यू बाराद्वारी, ह्यूम पाइप रोड
नया कोर्ट रोड, पो. साकची, जमशेदपुर–१ (झारखंड)
चलभाष : ९९३४५२१९५४

सामाजिक संस्था बूढ़ी माँ के समान होती है। वृद्ध का सहारा उसके हाथ की लाठी होती है। इसी तरह संस्था का सहारा उसका सदस्य होता है। देश–विदेश के कोने–कोने में 'आर्य समाज' की शाखाएँ फैली हुई है। उसके संचालन करने वाले नेतृत्व का पहला दायित्व है कि वे अपने सदस्यों को सक्रिय करें। किसी भी संस्था को सक्रिय बनाता है उसका प्रोग्राम, उसका कार्यक्रम। स्वामी दयानन्द सरस्वती ने अपने कार्यकर्ताओं को आर्यवीर बनने का निर्देश दिया। वीर का अर्थ यह नहीं है कि हमेशा तीर मारता रहे। वीरता नाम है– किसी भी समस्या के समाधान के लिए संघर्ष करने का, साहस का, हिम्मत का, किसी काम में हार नहीं मानने का। **स्वामीजी का जीवन स्वयं वीरता का आदर्श था। उनका ग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश' उनकी वीरता का प्रतीक है। जिस साहस और हिम्मत से उन्होंने कठमुल्लों तथा पोंगा पण्डितों को लताड़ा है, वही साहस और वही हिम्मत आर्य वीरों को 'आर्य समाज' में दिखाना है।** भारत के संविधान में छुआछूत को अपराध माना गया है। मगर आज का समाज आज भी इस मानसिकता का शिकार है। क्या आर्यवीर का यह फर्ज नहीं है कि समाज में उपेक्षितों के प्रति जो यह अनादर का भाव है, उसको दूर करने के लिए सामाजिक अभियान चलाए? समाज में डायन प्रथा, भूत–प्रेत का भय तथा ओझा–गुणी का प्रपंच प्रचलित है। क्या आर्यवीरों के लिए समाज को इन प्रपंचों से मुक्त कराना कोई फर्ज नहीं है?

समाज में नारी उत्पीड़न के हजारों मामले हैं। दहेज हत्या, तलाक, पत्नी त्याग, लड़कियों की खरीद–बिक्री, वेश्यावृत्ति, बलात्कार आदि क्या आर्य समाज को इस दिशा में कुछ करना चाहिये या नहीं? भारतीय सभ्यता और संस्कृति के आधुनिकीकरण के नाम पर हम अपने पारम्परिक अतिथि सत्कार, माता–पिता का भरण–पोषण, नाते–रिश्तों से सरोकार तथा संयुक्त परिवार आज टूटने लगे है। परिवार इतना छोटा होता है कि आज भारत की वह महान् आर्य संस्कृति धूमिल पड़ गई है।

आर्य संस्कृति की रक्षा और संवर्द्धन का दायित्व आर्य समाज के ऊपर है, जो खुद ही **'कच्छप गति और कच्छप नीति'** का शिकार बन गया है। कच्छप गति ऐसी है कि वह अगल–बगल कुछ नहीं देखता। उसकी चाल इतनी मन्थर है कि वह सबसे पीछे छूट जाता है। कच्छप नीति ऐसी है कि चलते समय राह में थोड़ी सी बाधा आ जाए तो उस बाधा को पार कर आगे बढ़ने के बजाय वह पीठ के बल चितंग होकर अपने पैरों को अपने अंग में समेट लेता है और आँखें बन्द कर निष्प्राण की तरह भूमि पर पड़ा रहता है। आर्य समाज को इस **'कच्छप गति और कच्छप नीति'** को त्यागकर शेरों की भाँति सीना तानकर समाज में आर्य वीर बनकर स्वामी दयानन्द सरस्वती के आह्वान को पूरा करें– **विश्वम आर्यम कुरु,** सारे संसार को आर्य बनाओ और तुम आर्य वीर बनो। ■

टंकारा में उतरा त्राता-भू, भुवन-नाभि संधाता

• देवनारायण भारद्वाज 'देवातिथि'
'वरेण्यम' अवंतिका (प्रथम),
रामघाट मार्ग, अलीगढ़ (उ.प्र.)
दूरभाष : ५७१-२७४२०६१

शीर्षक आपको कठिन लगता है, तो इसे पहले सरल करते हैं। भारत के गुजरात प्रान्त स्थित ग्राम टंकारा में एक ऐसे अद्भुत बालक का जन्म हुआ, जिसने पृथ्वी के ओर-छोर के साथ-साथ इस लोक की नाभि (मध्य केन्द्र बिन्दु) अथवा सृजन, पोषक स्रोत का संधान किया, पता लगाया। यद्यपि उसका यह अनुसन्धान नया नहीं था। जहाँ इसका लिखित प्रसंग अंकित है, उस ग्रन्थ वेद को ही लोग भूल चुके थे। उसका नाम तो याद रह गया, किन्तु ज्ञान नहीं। दशकों पूर्व लेखक उत्तराखण्ड ऋषिकेश भ्रमण पर गया तो वहाँ कल-कल करती पवित्र गंगा के कूल पर अनेक आश्रमों का सन्दर्श किया। प्रथम देखा **'परमार्थ निकेतन'** जहाँ ऋषि-मुनि देवताओं के साथ महर्षि दयानन्द की प्रतिमा आकर्षक पारदर्शी मंजूषा में थी। प्रसन्न मन के साथ आगे बढ़ा तो उतना ही विस्तृत आश्रम देखा **'वेद निकेतन'**। शिष्यों से नहीं संस्थापक गुरुजी से पूछा- कृपया वेदों के भी दर्शन करा दीजिये। उन्होंने सीधा सा समाधान कर दिया- यहाँ वेद ग्रन्थ नहीं, आश्रम है। उन्होंने बताया कि अनेक प्रकाशक हैं जहाँ से मँगाकर उन्हें यहाँ स्थापित करके इसे आप साक्षात वेद निकेतन बना सकते हैं। केरल- कलाडी के आदिशंकर ने लुप्तप्राय वेदों का उद्धार किया, भारत भूमि की चारों दिशाओं में वेद पीठ भी बनाए, किन्तु **'स्त्रीशूद्रोनाधीयताम्'** कहकर उनके पठन-पाठन को अवरुद्ध कर दिया, परन्तु टंकारा के मूलशंकर ने स्वामी दयानन्द बनकर चारों वेदों को जर्मन देश से मँगाकर घोषणा कर दी- **'वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है, वेदों का पढ़ना-पढ़ाना, सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।'** शीर्षक वाक्य का स्रोत वेद ग्रन्थ से ही प्रकट हुआ है, जो आगे की पंक्तियों में दृष्टव्य है।

वहाँ एक प्रश्न और उसका उत्तर यों प्रकट होता है-

पृच्छामि त्वा परमन्तं पृथिव्याः पृच्छामि यत्र भुवनस्य नाभिः।
इयं वेदिः परो अन्तः पृथिव्या अथं यज्ञो भुवनस्य नाभिः।।

(प्रश्नोत्तर यजुर्वेद मन्त्र सं. २३.६१ एवं ६२ की प्रथम पंक्ति)

अर्थात् तुझसे मैं पृथ्वी के दूर वाले दूसरे सिरे अन्त (End) को पूछता हूँ और यह भी पूछता हूँ कि इस लोक की नाभि (केन्द्र) क्या है। दृष्टा के प्रश्न का समाधाता ने सटीक उत्तर देते हुए बताया कि यह वेदी पृथ्वी का दूर वाला परला सिरा अन्त (End) है और यह यज्ञ लोक (संसार) की नाभि (केन्द्र) है। भूमि का वह स्थल विशेष जो वेद के बताए धर्म-संस्कार- उपासना अनुष्ठान के लिए निर्धारित किया जाता है, वही वेदी है। पृथ्वी चूँकि गोलाकार है, इसलिए उसका एक सिरा जहाँ से प्रारम्भ होता है तो दूसरा सिरा वहीं पर आकर मिल जाता है। इसी बिन्दु विशिष्ट को यज्ञ वेदी की संज्ञा मिल जाती है। अपने शरीर पर दृष्टिपात करते हैं तो नाभि भी लगभग मध्य स्थल पर पाते हैं। यहीं से परा-पश्यन्ती-मध्यमा-वैरनरी रूप में हमारी वाणी प्रस्फुटित होती है। यथोचित रूप में स्वाहा का उच्चारण करने से यहाँ पर जो यज्ञ आरम्भ होता है उससे नस-नाड़ियों में संचित अपान वायु प्रादुर्भूत प्राणवायु से भस्म होकर मनुष्य को स्वास्थ्य प्रदान करता है। **'जनः पुनातु नाभ्याम्'** (मार्जन मन्त्र) जननशीलता ही नाभि की पवित्रता की द्योतक है। गर्भस्थ शिशु का पोषण यहीं से होता है, अर्थात् माता की नाभि-नाल से।

पृथ्वी का लघु स्थल जब वेदी के रूप में अलंकृत होता है तो यजमान को प्रतिष्ठा-सम्पन्न बना देता है। यथा-

विश्वम्भरा वसुधानी प्रतिष्ठा हिरण्यवक्षा जगतो निवेशनी।
वैश्वानरं बिभ्रती भूमिरग्नि मिन्द्रऋषभा द्रविणो नो दधातु।।

(अथर्व १२.१.६)

संभरण सुपोषण सबको भू, धन धान्य प्रतिष्ठा वरती है।
तव वक्ष स्वर्ण से भरा रहे, सुख जगत निवेशन करती है।।
सब नर-नारी की हितकारी, रवि-ज्ञानवान पर वारी है।
हे भूमि हमें ऐश्वर्य वरो, तू माता मही हमारी है।।

(अथर्व प्रभा)

पृथ्वी माता की इस वेदी या गोदी पर आसीन होकर जब देवपूजा-संगतीकरण- दान की धाराएँ बहती हैं तो वही जयशील ज्योतियाँ बनकर यज्ञ-यज्ञ भावना का विस्तार यों कर देती है-

पयः पृथिव्या पयऽओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयोधाः।
पयस्वतीः प्रदिशस सन्तु मह्यम्।। -यजु. १८.३६
पृथिवी औषधियाँ दिव्य लोक,
नभ मण्डल पय-रस पूरित हो।
सभी दिशाएँ रस बरसाएँ,
ऐसा यह यज्ञ विभूषित हो।। -देवातिथि

यज्ञ-योग मर्मज्ञ आप्त पुरुष श्रीकृष्ण ने उपरोक्त वेद सार को अत्यन्त स्पष्ट रूप से समझाया है। देखिये-

अन्नाद् भवन्ति भूतानि पर्जन्यादन्नसम्भवः।
यज्ञाद् भवति पर्जन्यो यज्ञः कर्म समुद्भवः।।
कर्म ब्रह्मोद्भवं विद्धि ब्रह्माक्षर समुद्भवम्।
तस्मात्सर्वगतं ब्रह्म नित्यं यज्ञे प्रतिष्ठितम्।।

-श्रीमद् भगवद् गीता ३.१४-१५

प्राणी मात्र अन्न से सत्ता प्राप्त करते हैं। अन्न की सत्ता मेघ से होती है। मेघ यज्ञ अर्थात् नाना शक्तियों के परस्पर सहयोग से अस्तित्व में आते हैं और यज्ञ एक लक्ष्य को सामने रखकर किये जाने वाले भिन्न-भिन्न कर्मों से उत्पन्न होते हैं। कर्म वेद से उत्पन्न होता है और वेद अक्षरों से उत्पन्न होता है। इस प्रकार सर्व व्यापक वेद नित्य यज्ञ के सहारे खड़ा है। ब्रह्म

नाम इस प्रकरण में मन्त्र का है। मन्त्र दो प्रकार के हैं- एक **'पुस्तकगत'** दूसरा **'सर्वगत'**। ऋक्, यजु: साम, अथर्ववेद के मन्त्र **'ग्रन्थगत'** मन्त्र हैं किन्तु इनके अनुसार जो कार्य ब्रह्माण्ड के जिस क्षेत्र में हो रहा है, वह सर्वगत मन्त्र है। संसार का हर क्षेत्र कोई न कोई अन्न अर्थात् उत्पादन कर रहा है। स्वामी समर्पणानन्दजी ने ऐसी ही व्याख्या की है, जो पृथ्वी रूपी वेदी और यज्ञ रूपी नाभि का निदर्शन कराती है।

ब्रह्मयज्ञ-सन्ध्या के समय जब हम अपनी वेदी के आसन पर बैठे-बैठे ही मनसा परिक्रमा करते हुए ब्रह्माण्ड की सभी दिशाओं का परिभ्रमण कर लेते हैं, तब अग्नि, आदित्य, इन्द्र, पितर, वरुण, अन्न, सोम, शनि, विष्णु, वरुण, बृहस्पति आदि दिव्य शक्तियों का सान्निध्य भी प्राप्त कर लेते हैं। अब तो सचल भाष-संजाल के माध्यम से एक बटन दबाते ही सारा विश्व हमारे सामने प्रत्यक्ष दिग्दर्शित हो जाता है। पौराणिक कथाओं में यह कल्पनाएँ आश्चर्य की बात नहीं रह गई हैं। सृष्टि निर्माता ब्रह्माजी ने देवताओं की एक लम्बी पंक्ति देखी। उन्होंने सोचा कि वरीयता के लिए इनमें कोई विवाद न हो, इसलिए किस देवता का प्रथम पूजन होना चाहिये? इसका निर्णय कर दिया जाए।

ब्रह्माजी ने घोषणा की- जो देवता पृथ्वी की परिक्रमा सबसे पहले करके आ जाएगा, सदा-सर्वदा के लिए उसी का सर्वप्रथम पूजन किया जाया करेगा। सभी देवता अपने-अपने वाहनों पर दौड़ चले। कोई गरुड़ पर, कोई सिंह पर, कोई मयूर पर, कोई अश्व पर आदि-आदि। एक देवता गणपति जहाँ के तहाँ खड़े रह गए और उनका वाहन चूहा भी अपनी गर्दन इधर-उधर घुमाते हुए अपने स्वामी गणपति को ताकता रह गया। गणपति ने संकेत समझ लिया। प्रतियोगिता स्थल पर उपस्थित माता-पिता गिरिजा-शंकर के समक्ष ओ३म् लिखकर उनकी ही प्रदक्षिणा कर ली, और बैठकर अन्य देवताओं के प्रत्यागमन की प्रतीक्षा करने लगे। जब सभी देवता आ गए, तब गणपति गणेश ने अपनी बुद्धिमत्ता का परिचय देते हुए सर्वप्रथम स्थान की पात्रता प्राप्त कर ली। हो भी क्यों न, कण-कण अन्तर्यामी ओ३म् जो यहाँ वह वहाँ भरपूर जिससे सारा जहाँ और माता-पिता जीवन दाता महा। इनकी परिक्रमा पृथ्वी की प्रदक्षिणा मान ली गई। गणपति लम्बोदर हैं- बड़ी से बड़ी बात को पानी की भाँति पी जाते हैं और अविचल रहते हैं और उनका सिर भी बड़ा है, अर्थात् बुद्धि के देवता हैं। चूहा तर्क-वितर्क-कुतर्क अर्थात् कुतरने में दक्ष है, इस पर बुद्धि ही नियन्त्रण कर सकती है। यों कहें सवारी कर सकती है। यह भी समझिये कैसे?

ऊपरीकथित भूमि-वेदी की परिक्रमा एवं गणेश-मूषक का आख्यान भले ही मिथक (मिथ्यक) मात्र हो, किन्तु आधुनिक मेघ-मंजुषा-संगणक (कम्प्यूटर) की ज्ञान शृंखलाएँ माउस (Mouse) मूसे या मूषक के संकेत से ही संचालित होती है। दशाब्दियों पूर्व गुजरात प्रान्त के टंकारा ग्राम स्थित शिव-मन्दिर में इन्हीं मूषकों के उत्पाद ने एक चौदह वर्षीय बालक मूलशंकर के मस्तिष्क में ऐसी बोध क्रान्ति जागृत कर दी, जिससे न केवल भारत ही, प्रत्युत सम्पूर्ण विश्व ही वेदवाणी के आलोक से आलोड़ित हो उठा। मौरवी राज्य के क्षेत्रीय अधिपति कर्षणजी तिवारी ने १४ वर्ष की प्रतीक्षा के बाद उत्कट अभिलाषा स्वरूप प्राप्त पुत्र मूलशंकर को जन्म से लेकर किशोर वय आते-आते न केवल धार्मिक रीति-नीति व संस्कारों में ढाल दिया था, प्रत्युत यजुर्वेद-पारायण-पाठी के साथ-साथ शैव मत की परिपाटी की ओर अग्रसर कर दिया था। पिता ने अपने चौदह वर्षीय किशोर मूलशंकर को माता के असहमत होते हुए भी व्रत-उपवास पूर्वक स्थानीय शिव मन्दिर में रात्रि-जागरण के लिए तैयार कर लिया था। पूजा-कीर्तन के बाद मन्दिर में उपस्थित भक्त-पुजारी यहाँ तक पिता भी निन्द्रा देवी की गोदी में पहुँच गए थे, किन्तु मूलशंकर मात्र महादेव के आगमन व दर्शन के लिए जागते रहे थे। महादेव तो आए नहीं, उनके नाम से निमित्त पाहन-पिण्डी पर चढ़ाए गए मिष्ठान्न के भोग का भक्षण करने हेतु मूषक आ गए। जो भोग-भक्षण के साथ-साथ मलमूत्र से उसे दूषित भी करने लगे। इस दुर्दशा को देखकर मूलशंकर ने पिताजी को जगाया और सच्चे शिव के प्रति उठी शंका का समाधान चाहा, जो सम्भव नहीं हुआ। फलत: रात्रि में ही सिपाही के साथ घर आ गए और माता से आहार प्राप्त कर भूख को शान्त किया। मूल की इक्कीस वर्षीय आयु आते-आते पिता-पुत्र में एक सजग प्रतियोगिता चलती रही। पिता उन्हें गृह-राग की ओर ले जाने हेतु प्रयत्नशील रहे, जबकि युवा मूल गृह-त्याग की दौड़ में लगे रहे। अन्तत: मूल की स्पर्धा सफलीभूत हुई।

सिद्धपुर के मेले में ब्रह्मचारी शुद्ध चैतन्य को सन्त महात्माओं की भीड़ में पिता और उनके सिपाहियों ने खोज भी लिया, किन्तु रात्रि के अन्धकार में एक मन्दिर की चोटी पर स्वयं को छिपाकर उनकी खोज निष्फल कर दी, फिर कभी वे टंकारा की भौतिक सुख-सुविधाओं की ओर नहीं लौटे। वे अपने तपश्चर्यापूर्ण सतत वेदोद्धार, मानव कल्याण, वेद-वरदान के महाभियान में पर्वत की चोटी ही नहीं सबसे ऊँची चोटी के महापुरुष के रूप में मान्य हुए। महर्षि दयानन्द द्वारा किये गये वेद भाष्य का विश्व स्तर पर प्रचार हुआ, तभी तो अमेरिकन विदुषी श्रीमती विल्लौक्स ने लिखा है- **''भारत उन महान वेदों की भूमि है जो अद्‌भुत ग्रन्थ है, जिनमें न केवल पूर्ण जीवन के लिए उपयोगी सिद्धान्त बताए गए हैं, अपितु उन तथ्यों का भी प्रतिपादन किया गया है जिन्हें विज्ञान ने सत्य प्रमाणित किया है।''** बिजली, रेडियम, इलेक्ट्रॉन, विमान आदि सभी कुछ वेदों के दृष्टा ऋषियों को ज्ञात प्रतीत होता है। (स्वा. विद्यानन्द सरस्वती कृत विषवृक्ष) महान वैज्ञानिक थॉमस अल्वा एडीसन ने सन् १८७७ के आसपास ग्रामोफोन का आविष्कार किया था, प्रथम रिकॉर्ड भरने के लिए यूरोप के दार्शनिक विद्वान मैक्समूलर से अनुरोध किया गया, जो महर्षि कृत वेद भाष्य के ग्राहक थे। उस समय उन्होंने कुछ और नहीं **'ऋग्वेद के प्रथम अग्निसूक्त'** का उच्चारण करके देव दयानन्द के अवदान का सम्मान किया था। वह रिकॉर्ड बताते हैं आज तक ब्रिटिश संग्रहालय में प्रदर्शित है। जो प्रतियोगिता तथाकथित मूषक वाहन पति गणपति ने बुद्धि के बल पर विजित की थी, वही वेदोद्धारक देव दयानन्द ने **'माता भूमिः पुत्रो अहं पृथिव्याः'** (अथर्व. १२:१:१२) को टंकारा की जन्मभूमि पर उदय होकर सम्पूर्ण पृथ्वी लोक के रक्षक सपूत की प्रतिष्ठा से पूर्ण कर दी और गुंजित कर दिया घोष **'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्'**। ■

आदि सृष्टि में परमात्मा प्रदत्त 'वेदज्ञान'

समय-समय पर विशेष पुरुषों द्वारा विशेष पुस्तकों के रूप में **'ईश्वरीय ज्ञान'** का प्रादुर्भाव होता रहा है। ऐसा विचार ईसाई, मुसलमान, यहूदी, पारसी आदि सम्प्रदाय के लोग मानते हैं। परन्तु इसका फल बड़ा भयंकर, खतरनाक, संसार में उथल-पुथल मचा देने तथा बेचैनी पैदा करने वाला होता है। और वह यह कि दूसरा ज्ञान आने पर वे पहले को रद्दी बताता है और तीसरा आने पर पहले वाले दोनों त्रुटिपूर्ण बताता है। बस इन सबमें परस्पर युद्ध आरम्भ हो जाता है और युद्ध लड़ाई-झगड़ा सदैव बढ़ता जाएगा। समाप्ति कभी नहीं होगी। जिसे आजकल आप प्रत्यक्ष देख रहे हैं। मन्दिर तोड़े जाते हैं, मस्जिदें ढहाई जाती हैं, गिरजों में आग लगाई जाती है। देश की स्वतन्त्रता में बाधा होती है।

अपने-अपने सम्प्रदाय का पक्ष करते हैं। बस, देशों में आए दिन बगावत होती है। कत्लेआम होता है। पुस्तकालय जलाए जाते हैं, साम्प्रदायिक पार्टियों से देश देशान्तर में अत्याचार-अनाचार-भ्रष्टाचार, लूटपाट बढ़ती है। यह प्रत्यक्ष है। अत: वह परमात्मा तो दया का सागर रहमान और रहीम है, करुणानिधि है जिसने संसार की रचना सब प्राणियों की सुख-शान्ति के लिए की है। वह बीच में ऐसी लड़ाई-झगड़े की पुस्तकें भेजकर क्यों संसार को दु:ख सागर बनाएगा?

यह सब कुछ स्वार्थी विषयलोलुप धर्मध्वजी लोगों ने अपने लूटने के लिए जाल रचे हैं और अब स्वयं ही जाल में फँस गए हैं। निकलना चाहते हैं परन्तु निकल नहीं पाते। ईश्वर इनको सुमति दे, आपस में झगड़ों को छोड़कर जैसे सूर्य, चन्द्र, वायु, पृथ्वी, आदि सुन्दर पदार्थों को बिना बैर विरोध के एकमत होकर मानते हैं वैसे ही आदि रचित 'वेदज्ञान' को एकमत होकर जानें और मानें, तभी कल्याण होगा अन्यथा नहीं। ■

● **देवकुमार प्रसाद आर्य**
भूतपूर्व प्रधान : आर्य समाज,
५०, फैजा बजाज, वारीडीह, जमशेदपुर (झारखण्ड)
चलभाष : ८९६९५४२३३९

अठारहवीं और उन्नीसवीं शताब्दी में भारत की सुषुप्त चेतना को जगाने वाले प्रेरणास्रोत : महर्षि दयानन्द

● **पं. उम्मेदसिंह विशारद**
गढ़ निवास मोहकमपुर, देहरादून (उत्तराखण्ड)
चलभाष : ९४११५१२०१९, ९५५७६४१८००

स्वतन्त्रता संग्राम के सूत्रधार

१८५७ ई. में जो स्वतन्त्रता संग्राम लड़ा गया, उसके जन्मदाता महर्षि स्वामी विरजानन्दजी थे क्योंकि जिन राजाओं ने उस स्वतन्त्रता संग्राम यज्ञ में भाग लिया वे सब स्वामी विरजानन्दजी महाराज के शिष्य थे और स्वामी विरजानन्दजी को इस पवित्र कार्य की प्रेरणा देने वाले उनके गुरु श्री स्वामी पूर्णानन्द सरस्वती भी थे। उस स्वतन्त्रता आन्दोलन को जन-जन तक पहुँचाने वाले महर्षि स्वामी विरजानन्दजी के परम शिष्य महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वतीजी थे।

सच्चे साधु व संन्यासी जन संसार की दुर्दशा को देख नहीं सकते। उनमें सदा **'आत्मवत् सर्वभूतेषु'** की भावना अहर्निश कार्य करती रहती है। वो प्राणीमात्र के क्लेशों को अपना क्लेश एवं दु:ख समझते हैं। वास्तव में वो ही सच्चे मानवता के पुजारी होते हैं। स्वामी विरजानन्दजी का एकमात्र ध्येय सारे भूमण्डल में वैदिक धर्म को फैलाना था। वह किस प्रकार से अपनी जन्मभूमि को म्लेच्छों के हाथ में देख सकते थे। अत: स्वतन्त्रता संग्राम यज्ञ के सर्वप्रथम जन्मदाता एवं सूत्रधार महर्षि स्वामी विरजानन्दजी महाराज थे। उनके परम शिष्य स्वामी दयानन्दजी ने उनके कार्य को पूरा किया।

समग्र वैचारिक क्रान्ति को जन-जन तक पहुँचाने वाले महर्षि दयानन्द सरस्वती

संवत् १९१७ वि. तदनुसार १८६० ई. में स्वामी दयानन्दजी गुरु विरजानन्दजी की पाठशाला में पहुँचे। स्वामी विरजानन्दजी से दयानन्दजी ने महाभाष्य, निरुक्त आदि आर्ष ग्रन्थों का गम्भीर अध्ययन किया और अपनी ज्ञान पिपासा को पूर्णत: शान्त किया। स्वामी विरजानन्दजी ने स्वामी दयानन्द सरस्वती जी को अपने तुल्य विद्यासागर बनाया और गुरु दक्षिणा में आर्ष ग्रन्थों का प्रचार एवं वैदिक धर्म का प्रचार, भारत स्वातन्त्र्य योजना और सामाजिक कुरीतियों के उन्मूलन कार्यभार अपने कन्धों से उतार कर स्वामी दयानन्द सरस्वतीजी को सौंप दिया।

स्वतन्त्रता आन्दोलन के प्रचारक मार्च १८५७ स्वामी दयानन्द सरस्वतीजी गंगा के साथ-साथ गंगोत्री और बद्रीनाथ से बनारस तक गढ़वाल, दोआब और काशी के प्रदेश में घूमते रहे। उस समय भारत स्वतन्त्रता प्राप्ति की क्रान्ति के लिए तैयारियाँ जनता में गुप्त रूप से जोरों पर की जा रही थी। सन् १८५६ में स्वामी दयानन्दजी नाना साहब के नगर कानपुर में भी गए। पाँच मास पर्यन्त कानपुर और इलाहाबाद के मध्य में भ्रमण करते रहे। सन् १८५७ में क्रान्ति की पूर्ण तैयारियाँ हो गई। तब नाना साहब के अनेक सन्देश वाहक साधु क्रान्ति फैलाने के लिए पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण देश के सभी कोनों में फैल गए।

स्वयं नाना साहब और उनके साथी अजीमुल्ला भी क्रान्ति की तिथि निश्चित कर यह सब कार्य अपनी आँखों से देखने के लिए तीर्थयात्रा के माध्यम से भ्रमणार्थ चले। तब स्वामी दयानन्दजी भी बनारस से मिर्जापुर आदि स्थानों में होते हुए क्रान्ति का सन्देश फैलाने के लिए दक्षिण की ओर चल दिये।

सन् १८५७ से १८६० तक तीन वर्ष का स्वामी दयानन्दजी के जीवन का कोई इतिहास नहीं मिलता। इससे प्रकट होता है कि स्वामी दयानन्दजी ने १८५७ की क्रान्ति में बढ़-चढ़कर कार्य किया और अपने हस्तलिखित जीवन में भी इस सम्बन्ध में उन्होंने कुछ लिखना किसी कारणवश उचित नहीं समझा।

उन्नीसवीं शताब्दी का जन जागरण दर्पण

उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य तथा अन्तिम चरण में भारत का भविष्य एक नया मोड़ ले रहा था। सदियों से सुप्त पड़ी इस देश की चेतना अव्यक्त से व्यक्त की तरफ सुषुप्ति से जागृति की तरफ अग्रसर हो रही थी। सदियों से सोई पड़ी यह चेतना जब भारत के नवप्रभात में अंगड़ाई लेकर आँख खोलने लगी थी, तब १७७२ में बंगाल के राजा राममोहन राय ने और १८३४ में रामकृष्ण परमहंस तथा उसी काल के आसपास स्वामी विवेकानन्द ने जन्म लिया। १८२४ में गुजरात में महर्षि दयानन्द ने जन्म लिया। १८९३ में मद्रास में थियोसॉफिकल सोसायटी ने जन्म लिया और इसी काल में मुसलमानों में चेतना के संचार के लिए सर सैय्यद अहमद ने जन्म लिया। ये सब भारत की विभूतियाँ थी और इस देश के नवनिर्माण का सपना लेकर गंगा और हिमालय की इस देश भूमि का सदियों का संकट काटने के लिए प्रकट हुई थी। (सत्य की खोज प्रो. सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार ग्रंथ से)

गुरु विरजानन्द के सपनों को साकार करने रणक्षेत्र में उतरे महर्षि दयानन्द सरस्वतीजी

महर्षि दयानन्दजी जब देश के रण क्षेत्र में उतरे तो चारों तरफ ललकार ही ललकार सुनाई दी। चैलेंज ही चैलेंज नजर आए। वह थे विदेशी राज्य को बर्बाद करना तथा ऋषि दयानन्दजी ने समाज के शरीर की पीड़ा को और उसके रोग का अनुभव किया। उन्हें तो उस समय का सारा समाज चैलेंज के रूप में दिखा। साधारण पुरुषों और महापुरुषों में अन्तर यह होता है कि साधारण पुरुष चैलेंज को देखते हुए भी नहीं देखते, ललकार को सुनते हुए भी नहीं सुनते। महापुरुष समाज की पीड़ा को समझते हैं और अपने प्राणों की परवाह न करते हुए समर भूमि में उतर पड़ते हैं। महर्षि दयानन्दजी ने भी समग्र चुनौतियों को स्वीकार किया। उनके सामने हिन्दुओं का रूढ़ीवाद एक महान चैलेंज था। जहाँ देखो वहाँ प्रथा की दासता सतीप्रथा, बाल विवाह कुप्रथा, मूर्ति पूजा, जाति-पाति छुआछूत, दासप्रथा, मृतक भोज, मन्दिरों में देवी-देवताओं के नाम से पशु बलि, नारी व शूद्रों को वेद न पढ़ने देने की कुप्रथा व मन्दिरों में छोटी जाति को प्रवेश न करने की कुप्रथा, वैदिक धर्म को छोड़कर कल्पित देवी-देवताओं की कुप्रथा, मत-मतान्तरों के चलन की कुप्रथा, फलित ज्योतिष की मान्यता की कुप्रथा, इस प्रकार अनेक कुप्रथाओं का जीता-जागता चैलेंज था। महर्षि दयानन्द सरस्वतीजी ने सभी कुप्रथाओं को समाप्त करने का बीड़ा उठाया।

यद्यपि महर्षि दयानन्दजी के समय अन्य सुधारक भी हुए थे, किन्तु महर्षि दयानन्दजी व उन समकालीन महापुरुषों में अन्तर यह था कि वे महापुरुष समाज की बुराइयों में से एक-एक बुराई के खिलाफ आवाज उठाई। ऋषि के अतिरिक्त उन महापुरुषों ने माना कि वेदों में मूर्तिपूजा है, उन्होंने माना कि वेदों में नारी व शूद्रों को पढ़ाना मना है, उन्होंने माना कि वेदों में ईश्वर का अवतार होता है, ऐसा लिखा है। उन्होंने माना कि वेदों में नर बलि, पशु बलि करके देवताओं को खुश किया जा सकता है क्योंकि तत्कालीन विद्वानों ने वेद मन्त्रों के अर्थ के अनर्थ किये थे।

महर्षि दयानन्दजी ने सर्वप्रथम वेदों के रूढ़ी अर्थों पर जोरदार प्रहार किया और संसार के सामने सिद्ध कर दिया कि जो तुम वेदों के अर्थ लगाते हो वह इतिहास परक अर्थ तो हो सकते हैं किन्तु ईश्वर परक, सृष्टि क्रमानुसार अर्थ व विज्ञान के अनुसार अर्थ नहीं है। और निरुक्त, अष्टाध्यायी, महाभाष्य आदि आर्ष ग्रन्थों के अनुसार अर्थ करके संसार के धर्माचार्यों की चूलें हिला के रख दी। और उन्नीसवीं सदी में एक नई आर्ष वैचारिक क्रान्ति को जन्म दिया और संसार को वेदों की ओर लौटाया।

आर्यों अर्थात् भारत के श्रेष्ठ पुरुषों- निद्रा त्यागो अंगड़ाई लो आइये, हम अपने पूर्वजों का इतिहास पढ़कर अपना इतिहास भी बनाएँ

१८५७ की स्वतन्त्रता क्रान्ति के असफल होने का कारण भितरघात तथा राष्ट्र के प्रति अनुराग न होना और राष्ट्र विरोधी गतिविधियों में स्वार्थ हेतु साथ देना, तभी देशद्रोहियों के कारण असफलता मिली। अंग्रेजों ने इस क्रान्ति को बुरी तरह कुचल दिया था। देशवासी को स्वाधीनता का नाम लेना भी भयानक था। ऐसी विषम परिस्थितियों में महर्षि दयानन्दजी ने स्वतन्त्रता का नवजागरण किया। १८५७ से १९४७ तक महर्षि की प्रेरणा से लाखों नवयुवकों ने स्वतन्त्रता आन्दोलन में अपने प्राणों की आहूति दी थी, केवल आर्य समाजी अस्सी प्रतिशत आर्यों ने ही अपने गरम-गरम रक्त से जीवन बलिदान किये थे।

दुनिया बदलने वाले महापुरुषों के साथ अदूरदर्शी समाज की भी यह एक रीति है

युग प्रवर्तक, समाज सुधारक महापुरुष अपने ज्ञान कर्म से जमाने को बदल देते हैं, जमाने को अपने पीछे चलाते हैं। समय की धारा बदल देते हैं, समाज की विचारधारा और दृष्टिकोण बदल देते हैं। एक नई धारा बहा देते हैं। किन्तु जड़वाद समाज उन्हें बर्दाश्त नहीं कर सकता है। जड़ समाज उनके लिए जहर व आग उगलते हैं, किन्तु वह महापुरुष उसके लिए भी तैयार रहते हैं। सुकरात जमाने को बदलने आए थे, उन्हें जहर पीना पड़ा। ईसा मसीह नई दुनिया का सपना लेकर आए थे, उन्हें जिन्दा सूली पर लटकना पड़ा। दयानन्दजी समाज की समग्र कुरीतियों को समाप्त करने व समाज को नए साँचे में ढालने आए थे, उन्हें भी षडयन्त्रकारियों द्वारा दूध में जहर देकर प्राणों का बलिदान देना पड़ा। महात्मा गाँधी, नया संसार बनाने आए थे, उन्हें गोली का शिकार होना पड़ा। यह निर्दयी समाज उन महापुरुषों को ज्यादा देर बर्दाश्त नहीं कर सकता है। किन्तु यह बलिदान देने वाले महापुरुष अपने पीछे एक व्यापक विचार शक्ति छोड़ जाते हैं, एक नवीन संसार का निर्माण कर जाते हैं। महर्षि दयानन्द सरस्वतीजी ने भी समाज की तमाम समग्र बुराइयों को दूर करके दुनिया की विचारधारा ही बदल डाली है। ■

जल प्रदूषण और निराकरण

● शिवनारायण उपाध्याय
१३, शास्त्री नगर, दादावाड़ी, कोटा (राज.)
दूरभाष : ०७४४-२५०१७८५

जल मनुष्य तथा अन्य जीवधारियों एवं पेड़-पौधों की एक आधारभूत आवश्यकता है। मनुष्य बिना भोजन के तो ३० दिन तक भी जीवित रह सकता है। स्वामी विवेकानन्द ने अपने भाष्य में लिखा है कि सृष्टि में जीवात्मा की उत्पत्ति जल से ही होती है, जल ही जीवन है।

जैसे-जैसे मानव सभ्यता विकसित हुई है वैसे-वैसे प्रकृति द्वारा शुद्ध जल प्रदूषित होता गया है। **जल प्रदूषण की परिभाषा-** जल में आवश्यकता से अधिक खनिज, लवण, कार्बनिक तथा अकार्बनिक पदार्थ तथा औद्योगिक यंत्रों से निकले रासायनिक पदार्थ, अपशिष्ट पदार्थ तथा मृत जन्तु नदियों, झीलों, सागरों तथा अन्य जलीय क्षेत्रों में विसर्जित किए जाने से ये पदार्थ जल के प्राकृतिक व वास्तविक रूप को नष्ट करके उसे प्रदूषित कर देते हैं। जिसका मनुष्य और अन्य जीवों पर घातक प्रभाव पड़ता है। इस प्रकार जल का प्रदूषित होना जल प्रदूषण कहलाता है। गिलपिन १९७८

पृथ्वी तल पर लगभग २/३ भाग जल से ढँका हुआ है। जल की उपयोगिता को देखकर मनुष्य ने अपने रहने के लिए सदैव किसी नदी, तालाब अथवा झील का किनारा चुना है। संसार की सभी सभ्यताओं में सबसे प्राचीन सभ्यता नदी घाटी की सभ्यता मानी जाती है।

वेद में भी इसी बात को ध्यान में रखते हुए वर्णन किया है कि मकान के समीप ही जलाशय भी होना चाहिए।

इमा आपः प्रभाराम्य यक्ष्मा यक्ष्मानाशनीः।
गृहा नृप प्र सीदाम्य मृतेन सहाग्निना।। –अथर्व. ३.१२.९

अर्थ- (इमा) इस **(अयक्ष्माः)** रोग रहित **(यक्ष्मानाशनी)** रोग नाशक **(आपः)** जल को **(प्र)** अच्छी प्रकार **(आभराभि)** मैं लाता हूँ। **(अमृतेन)** मृत्यु से बचाने वाले अन्न, घृत, दुग्ध आदि सामग्री **(अग्निनासह)** अग्नि के सहित **(गृहान्)** घरों में **(उप-उपेत्य)** आकर **(प्र)** अच्छे प्रकार **(सीदामि)** मैं बैठता हूँ।

चेहरे पर कांति तथा शरीर की कोमलता में भी जल का भाग होता है। हमारे भोजन को पचाने में भी शरीर को जल सहायता देता है। तरल पदार्थ शरीर में जल्दी पच जाते हैं।

आपो भद्रा घृत मिदाप आसन्नग्नी षोमो विभ्रत्याम इत् ताः।
तीव्रो रसो मधु पृचामरंगम आ प्राणेन सह वर्चसागमत्।।
–अथर्व. ३.१३.५

अर्थ- (आपः) जल **(भद्राः)** मंगलमय और **(आपः)** जल **(इत्)** ही **(वृतम्)** घृत **(आसन्)** था। **(ताः)** वह **(इत्)** ही **(आपः)** जल **(अग्नीषोमो)** मधुरता से भरी जलधाराओं का **(अरंगमः)** परिपूर्ण मिलने वाला **(तीव्र)** तीव्र **(रसः)** रस **(मा)** मुझको **(प्राणेन)** प्राण और **(वर्चसा सह)** कान्ति अथवा बल के साथ **(आ गमेत)** आगे ले चले।

भावार्थ- जल से घृत सारमय पदार्थ उत्पन्न होते हैं। जल अग्नि अर्थात् जठराग्नि, विद्युत, बड़वानल आदि में प्रयुक्त होकर अन्नादि उत्पन्न करें तथा प्राणियों के बल और तेज को बढ़ाता है। जल के यथा योग्य प्रयोग से प्राणी में दर्शन शक्ति और श्रवण शक्ति और घोष धन्यवाद शब्द और **'वाक्'** वर्णात्मक शब्द बोलने की शक्ति आती है और तभी वह इष्ट स्वर्णादि धन की प्राप्ति से भूख आदि से मृत्यु दुःख का त्याग करके अमृत अर्थात् आनन्द भोगता है। जल ही जीवन है। इस विचार को ध्यान में रखकर ही वेद का ऋषि जलधाराओं को अपने समीप बुलाता है।

इदं व आवो हृदयमयं वत्स ऋतावरीः।
इहेत्थमेत शक्वरीर्यत्रेदं वेश्यामि वः।। –अथर्व. ३.१३.७

अर्थ- (आपः) हे प्राप्ति योग्य जल धाराओं **(इदम्)** यह **(वः)** तुम्हारा **(हृदयम्)** स्वीकार करने योग्य कर्म है। **(ऋतावरी)** हे सत्यशील जलधाराओं **(अयम्)** यह **(वत्सः)** निवास देने वाला आश्रय है। **(शक्वरीः)** हे शक्ति वालियों। **(इत्थम्)** इस प्रकार से **(इह)** यहाँ पर **(आ इत्)** आओ। **(यत्र)** यहाँ **(वः)** तुम्हारे **(इदम्)** जल में **(वेश्यामि)** प्रवेश करूँ।

कृषि की पैदावार जल पर ही निर्भर है।

आपो हिष्ठा मयोभुवस्ता न ऊर्जे दधातन।
महे रणाय चक्षसे। –ऋ. १०.९.१

अर्थ– (हि) यतः **(आपः)** जल **(मयोभुवः)** सुख राता **(स्थ)** हैं। **(ताः)** वे **(नः)** हमें **(ऊर्जे)** अन्न **(दधातन)** प्रदान करें। हमारे लिए **(रणाय)** रमणीय **(चक्षसे)** ज्ञान का **(दधातन)** साधन बनें।

वस्मा अरङ् गमाय ये यस्य क्षयाय जिन्वथ।
आपो जनयथा च नः।। –ऋ. १०.९.३

अर्थ- (वः) ये जल **(यस्य)** जिन अन्न की **(क्षयाय)** प्राप्ति के लिए **(जिन्वथ)** उपयोगी हैं **(तस्मे)** उसके प्राप्तार्थ हम **(अरम्)** पर्याप्त **(गमन)** प्रयत्न करें। ये **(आपः)** जल **(नः)** हमें **(जनयथ)** वह अन्न प्राप्त करावें।

आप इद्वा उ भेषजी रापो अमीवचातनीः।
आपः सर्वस्य भेषजी स्तास्ते कृण्वन्तु भेषजम्।।
–ऋ. १०.१३७.६

अर्थ- (आपः इत् वा उ) जल ही **(भेषजी)** सकल रोगहर्ता और **(अमीव चातनीः)** रोगों के कारणों को मिटाने वाले हैं। **(आपः सर्वस्य, भेषजीः)** जल ही रोगों की औषधि है। **(ताः ते भेषजं कृण्वन्तु)** वे तेरे सभी रोगों को दूर करें।

ता अपः शिवा अपोयक्ष्यं करणीपः।
यथैव तप्तते मयस्तास्त आदत्त भेषजीः।। –अथर्व. १९.२.५

अर्थ- हे मनुष्य। **(ताः)** उन **(शिवाः)** मंगलकारी **(आपः)** जलों को **(अयक्ष्मं करणीः)** निरोगता करने वाले **(आपः)** जलों को और **(ता)** उन **(भेषजीः)** भय जीतने वाले **(अपः)** जलों को **(आ)** सब ओर से **(दत्त)** उस परमेश्वर ने दिया है। **(यथा)** जिससे **(एव)** निश्चय **(ते)** तेरे लिए **(मयः)** सुख **(तृप्तते)** बढ़े। जल की महत्ता बताने वाले कुछ मंत्रों के बाद हम आगे चलते हैं। जल आपूर्ति तथा उपयोग- हमारे देश में

सिन्धु, गंगा और ब्रह्मपुत्र तथा इनकी सहायक नदियाँ ही स्वच्छ जल के बड़े स्रोत हैं। ये नदियाँ हिमालय से निकलती है तथा इनकी सहायक नदियाँ विन्ध्याचल तथा आबू पर्वत से निकली है। प्रायद्वीपीय भारत में भी कई नदियाँ निकलती हैं जिनमें महानदी, नर्मदा, गोदावरी, कृष्णा, कावेरी और ताप्ती मुख्य है! हमारे देश में ८६ प्रतिशत पानी नदियों, झीलों, सरोवरों और पोखरों का है शेष भूमिगत जल होता है।

जल का उपयोग पीने के साथ-साथ घरेलू कार्यों में भी काफी मात्रा में होता है परन्तु हमारे देश में कुल पानी का लगभग ७० प्रतिशत जल प्रदूषित है। हमारे देश के लगभग ६ लाख गाँवों में शुद्ध पेयजल उपलब्ध नहीं है। जल प्रदूषण के कारण-

(१) जल में मृत जीव-, मल-मूत्र, कूड़ा-करकट आदि छोड़े जाने से जल प्रदूषित हो जाता है।

(२) नदियों और तालाबों में साबून से कपड़े धोने और नहाने से भी जल प्रदूषित हो जाता है।

(३) शहर का मल-मूत्र नदियों में छोड़ देने तथा कल-कारखानों के गन्दे अपशिष्ट उत्पादन का नदियों में चले जाने से नदियों का पानी प्रदूषित हो जाता है। वर्षा के जल के साथ-साथ फसलों पर डाले गए कीटनाशक पदार्थ तथा मिट्टी में मिले अन्य हानिकारक पदार्थ भी जलाशयों एवं नदियों में पहुँचते हैं जिससे जल प्रदूषित हो जाता है। **समुद्री जल प्रदूषण-** वर्तमान में सागरों तथा महासागरों का जल भी प्रदूषित हो रहा है। समुद्रों का जल समुद्र तटीय कारखानों द्वारा तथा शहर के कचरे के कारण प्रदूषित हो रहा है। साथ ही कुल खनिज तेल उत्पादन का ६० प्रतिशत भाग समुद्री परिवहन से एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र तक पहुँचाया जाता है।

जल प्रदूषण का प्रभाव

(१) प्रदूषित जल पीने से विभिन्न प्रकार के रोग उत्पन्न हो जाते हैं जिनमें आँत रोग, पीलिया, हैजा, टाइफाइड और अतिसार मुख्य है।
(२) दूषित जल जलीय जीवधारियों को भी नष्ट कर देता है। जलाशय की तलहटी में एकत्रित सल्पाइड गैस (H_25) गन्धक के अम्ल में बदल जाती है। इसका जलीय जीव-जन्तुओं और वनस्पति पर बुरा प्रभाव पड़ता है।
(३) प्रदूषित जल भूमि की उर्वरता को हानि पहुँचाता है।
(४) प्रदूषित जल का सिंचाई में उपयोग होने से कृषि उत्पादन प्रभावित हो रहा है।
(५) औद्योगिक कारखानों के गन्दे अपशिष्ट पदार्थों के नदियों में जाने से जल में ऑक्सीजन की मात्रा कम होती जा रही है। इसका जलीय जीव-जन्तुओं और वनस्पतियों पर बुरा प्रभाव पड़ रहा है।

जल प्रदूषण की रोकथाम के उपाय

(१) नगरों, महानगरों तथा छोटे कस्बे में जल उपचार संयंत्रों की स्थापना की जाए।
(२) कस्बों, नगरों, महानगरों में सुलभ शौचालय की व्यवस्था हो।
(३) विद्युत शवदाह की स्थापना की जाए जिससे कि अधजले शव तथा कार्बनिक पदार्थ नदियों में प्रवाहित न हो सकें।
(४) सरकार अथवा जनसेवी संस्थाओं द्वारा जन चेतना अभियान प्रारम्भ किया जाए।
(५) मृतक पशुओं के नदियों में विसर्जन पर पूर्ण रोक लगाई जाए।
(६) उद्योगों के दूषित जल को स्वच्छ करके उसको सिंचाई में काम लें।
(७) औद्योगिक अवशेषों का उपयोग खाद बनाने में करें। इतिशम्। ■

यम-नियम (अष्टांग योग) की सीढ़ी बग़ैर आध्यात्मिक लक्ष्य सुलभ नहीं

• मोहनलाल दशौरा 'आर्य'
नारायणगढ़, जनपद : मन्दसौर (म.प्र.)
चलभाष : ९५७५७९८४१२

यम–नियम (अष्टांग योग) की सीढ़ी बगैर आध्यात्मिक लक्ष्य सुलभ नहीं तो आत्मा को जान पाना व परमात्मा (मोक्ष) तक पहुँच पाना तो असंभव ही रहेगा। चाहे कितना ही पूजा पाठ, जाप पाठ, पारायण, अभिषेक कर लो। देवस्थान, मन्दिर, मस्जिद में हजारों–लाखों बार माथा टेक दो, रो लो, धो लो, मन्नतें कर लो। अपने आप को भगवान का सबसे बड़ा, प्रिय भक्त मान लो या सिद्ध पुरुष, ज्ञानी–ध्यानी सन्त समझ लो।

कारण– भला जिस मंजिल में सीढ़ियाँ न हो या सीढ़ियाँ टूटी, उखड़ी हों, गायब हों तो बताओ ऊपर तक कैसे जा सकोगे? यदि बर्तन गंदा है, गोबर–कीचड़ से सना है तो ऐसे पात्र में खीर, हलवा, पकवान कैसे स्वादिष्ट या गुणकारी लग सकेंगे? कुएँ का कचरा साफ नहीं किया, मरा हुआ कुत्ता नदी पानी में से बाहर न निकालोगे, पानी नहीं बदलोगे और उसमें रोज गंगा जल लोटे भर–भर कर डालोगे तो क्या कुएँ का गन्दा पानी पवित्र हो जाएगा? दुर्गुणों का कचरा कुकर्मों का कुत्ता (मरा)।

इसी तरह यदि साधक, भक्त का दैनिक जीवन यम–नियम के विपरीत चल रहा है। यम–नियम (अष्टांग) योग समझता ही नहीं या उनका पालन प्रेक्टिकल में नहीं करता है अथवा नहीं कर पाता है तो जीवन यात्रा कैसी रहेगी? वैसी ही जैसे आँखों पर पट्टी बाँधकर यात्रा पूरी कर लेने का उद्देश्य हो। साधना और स्वाध्याय करने वाला भक्त अष्टांग योग की सीढ़ियाँ जानता है, नहीं जानता है तो जान लेना चाहिये। मान लेना चाहिये और उनका पालन करने का व्रत, प्रयास चाहिये। ये सीढ़ियाँ हैं– पाँच यम– सत्य, अहिंसा, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह। पाँच नियम– शौच, सन्तोष, तप, स्वाध्याय और ईश्वर प्रणिधान। इनके पालन करने से आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि तक पहुँचा जा सकता है। आत्मा और परमात्मा से परिचय हो सकता है और इतनी पवित्रता, शुद्धता, सरलता, साधना होने पर ईश्वर प्राप्ति (मोक्ष) का मार्ग सरल हो जाता है। हम देखते हैं, जानते हैं, मानते हैं कि बड़े–बड़े ऋषि,

मुनि, महापुरुष ऐसे ही ज्ञान प्राप्त कर चुके हैं। स्वाध्याय, साधना करने वाले साधक यम, नियम (अष्टांग योग) जानते हैं फिर भी संक्षेप में इस प्रकार है–

सत्य : जीवन को सम्यक रूप से समझने का प्रयास पुरुषार्थ है। इंसान को मन कर्म वचन से सत्य का पालन करना क्योंकि सभी सत्य विद्याओं और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं, उनका आदि मूल परमेश्वर है।

अहिंसा : मन–कर्म–वचन से किसी को पीड़ा न देना। प्राणी मात्र पर दया व रक्षा करना। शोषण, हत्या या दु:ख न देना अहिंसा है।

अस्तेय : चोरी न करना। किसी का हक न छीनना तथा मेहनत और ईमानदारी से जीवन जीना अस्तेय है।

ब्रह्मचर्य : इन्द्रिय संयम और सदाचार का नाम ब्रह्मचर्य है। इसका पूर्ण नैतिकता से पालन करना।

अपरिग्रह : अपने नेक पुरुषार्थ से आवश्यकतानुसार धन साधन कमाना। आवश्यकता से अधिक व अवैध तरीके से अधिक संग्रह न करना।

शौच : तन और मन की शुद्धि (पवित्रता) का नाम शौच है। तन–मन के मलिन होने से मनुष्य दुष्कर्म की ओर प्रवृत्त होता है। पथ भ्रष्ट हो जाता है। साधना में बाधा पड़ती है।

सन्तोष : अपने पूर्ण पुरुषार्थ के बाद जो नेक प्राप्ति होती है उसमें सन्तोष करना। अवैध आय के लिए हाथ–पाँव नहीं मारना।

तप : अपने मन और तन को त्याग मय बनाना। दोष, बुराई, गुनाह से बचकर जीवन के सत्य मार्ग पर चलने का व्रत और प्रयास ही तप है। बिना उद्देश्य के शरीर सुखा देना नहीं।

स्वाध्याय : वेद, उपनिषद् आदि सद्ग्रन्थों का अध्ययन करना तथा स्वयं का अध्ययन निरीक्षण करते रहना स्वाध्याय है। इससे कलुषित विचार व दुष्कर्म पर ब्रेक लगता है।

ईश्वर प्रणिधान : ईश्वर के प्रति श्रद्धा, आस्था, भक्ति व समर्पण के भाव रखना और अपने सत्कर्म, भक्ति का समर्पण करना।

यदि धीरे–धीरे इन यम–नियमों (दस बातों) का अभ्यास साधक करता रहेगा तो उसका जीवन देव पुरुष सा पवित्र दोष रहित हो जाएगा। वह राग–द्वेष, ईर्ष्या, मद, अहंकार, लोभ–लालच, स्वार्थ व अनेक पाप–दुष्कर्म से मुक्त होकर आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि पर आसानी से चलकर साधना की शीर्ष मंजिल पा लेगा।

अब जरा यम–नियमों से विचलित होने वाले साधकों के विचार जान लीजिये।

सत्य : भई धन्धे व पेट की खातिर थोड़ा बहुत झूठ (असत्य) तो चलता है।

अहिंसा : वैदिक हिंसा हिंसा न भवती? ला इलाहा इल्लला रसूले रहमान के बाद हिंसा पाप नहीं। मांसाहार भी तो दुनिया में कई करते हैं। आमलेट, मच्छी आदि तो पौष्टिक है। शिकार भी तो मनोरंजन है।

अस्तेय : केवल ईमानदारी (वेतन) से पेट भी नहीं भरता। थोड़ा बहुत ऊँचा–नीचा तो करना ही पड़ता। आटे में नमक तो सभी डालते ही हैं, फिर ऊपरी कमाई से दान, परोपकार भी तो करते हैं।

ब्रह्मचर्य : आज तो परिवार नियोजन के अनेक साधन हैं और सब छूट है। मन इन्द्रियों को कहाँ–कहाँ रोके। संयम मुश्किल है।

अपरिग्रह : खाली पेट ही थोड़े मरना है, बच्चों व भविष्य के लिए परिग्रह तो जरूरी है। अर्थ युग है पीछे क्यों रहे।

शौच : टीवी, सिनेमा, फैशन के वातावरण से मन व काम की भागदौड़ में तन कैसे पवित्र रख सकते? यह तो कलयुग है भाई।

सन्तोष : दुनिया इतनी तीव्र गति से आगे बढ़ रही है। सन्तोष कैसे करें।

तप : शरीर सुख सर्वोपरि। खाओ–पीओ, मौज करो। कल किसने देखा है।

स्वाध्याय : किसे फुर्सत, क्या फायदा, कौन मानता, हमें सब पता है।

ईश्वर प्रणिधान : ईश्वर को किसने देखा, है भी या नहीं। परलोक किसने देखा? मेहनत, काम नहीं करेंगे तो भगवान क्या कर लेगा?

उपासना, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान व समाधि तो सन्त, योगी, साधु और संन्यासियों के काम हैं। हमें समय कहाँ?

कथनी-करनी में अन्तर

अब बताइये ऐसे विचार रखने वाले तथाकथित साधक दान, पुण्य, परोपकार करें, पूजा–पाठ, अभिषेक पाठ, पारायण करें, भोग–भण्डारे करें, दान पेटियाँ भरे तो क्या ईश्वर (देव) स्वीकार करेगा? यह अपने आपको धोखा नहीं तो क्या है? यह तो वही गन्दे पात्र में खीर लेना या सड़े पानी में गंगाजल डालना हुआ। जैसे कि पकवान कितने ही सुगन्धित, स्वादिष्ट और पौष्टिक हों, ऊपर से गांजा, भांग, चरस, धूम्रपान, तम्बाखू (पाउच) होना ही है वरना भोजन अधूरा। मजा नहीं आता।

जो साधक अष्टांग योग अपनाते हैं, उन पर चलने का प्रयास करते हैं, वे हृदय से बधाई के पात्र हैं। उनको धन्यवाद के साथ नमन करता हूँ। शेष को भ्रांतियाँ दूर कर ठीक से पालन–चलन की अपील करता हूँ। कुछ गलत लिखा हो तो क्षमा प्रार्थी हूँ क्योंकि मैं भी अल्पज्ञ ही हूँ। सर्वज्ञ तो केवल ईश्वर है। ■

श्री कजोड़मल जांगिड का देहावसान

श्री कजोड़मल जांगिड़ (पंवार), मूल निवास सुन्दरपुरा सीकर, राजस्थान तथा वर्तमान निवास १३३ 'शिल्प संसार', महाराणा प्रताप कॉलोनी, हिरण मगरी, सेक्टर १३, उदयपुर (राजस्थान) का देहावसान २८ अक्टूबर २०२० को हो गया। लॉकडाउन काल में समाज बंधुओं और इष्टजनों ने दिवंगत आत्मा को अपने निवास से ही हार्दिक श्रद्धा सुमन अर्पित किये। परिवारजनों ने मूल निवास पर उपस्थित होकर दिवंगत आत्मा को श्रद्धांजलि अर्पित की। आप समाज सेवा मे विभिन्न पदों पर रहते हुए मिलनसार, धार्मिक प्रवृत्ति, हँसमुख स्वभाव के एवं आतिथ्य सत्कार में अग्रणी और धर्मपरायण व्यक्तित्व के रूप में अपने जीवन काल मे रहे।

आप अपने पीछे **श्रीमती छोटी देवी (धर्मपत्नी), कैलाश, श्रवण, सुबोध, शशिकांत (पुत्र), मंजू–गोविंदजी (पुत्री–दामाद), शिल्पेश, निखिलेश, नीलेश, लक्ष्य, अभिजीत (पौत्र)** का भरा-पूरा परिवार छोड़ गए हैं। आपके परिजनों द्वारा जांगिड ब्राह्मण महासभा व वैदिक संसार को 501-501 रुपये दान स्वरूप भेंट किये गये। वैदिक संसार परिवार दिवंगत आत्मा के प्रति अपने श्रद्धासुमन अर्पित करता है।

वासन्ती नवान्नयेष्टि (होली)

कृपया होली सादगी के साथ मनाएँ

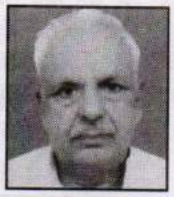

● आचार्य रामज्ञानी आर्य
(पूर्व प्रधानाचार्य)
लार टाउन, देवरिया (उ.प्र.)
चलभाष : ८०५२९८०१९६

भारत देश एक कृषि प्रधान देश है। हमारे देश की यही विशेषता रही है कि यहाँ छ: ऋतुएँ होती हैं। संसार के किसी भी देश में छ: ऋतुएँ नहीं होती। सर्दी, गर्मी और वर्षा तीन ही ऋतुएँ संसार में पाई जाती हैं। फिर भी सर्दी, गर्मी की सन्धि में वसन्तोत्सव प्राय: सभी देशों में किसी न किसी प्रकार मनाया जाता है। यह खुशी का त्योहार होता है। हमारे देश में अभी वसन्त पंचमी का त्योहार मनाकर ऋतुराज का स्वागत किया था। प्रकृति की छटा में काफी परिवर्तन आ गया है। वसन्त अपने पूर्ण यौवन पर है। प्रकृति ने धरती पर नव पल्लवों नवविकसित कुसुमों की बहार बिखेर दी है। चारों ओर प्रफुल्लता का वातावरण नृत्य कर रहा है। वन उपवन नगर ग्रामों में नव जीवन संचार हो रहा है। वृक्षों ने पुराने पल्लव झाड़ना प्रारम्भ कर दिये। नव कोमल कलिकाएँ प्रकट होने लगीं। पक्षियों ने भी पुराने पंख त्याग नवीन पंख ग्रहण किये। पशुओं ने पुरानी रोमावली त्याग कर नवीन रोमावली का चित्र–विचित्र परिधान ग्रहण करना प्रारम्भ कर दिया है। मानव जीवन में भी एक नया उल्लास उत्साह बिखरने लगा है। एक शब्द में यदि कहें कि सारी प्रकृति ने ही अथवा पुराना चोला त्याग कर नवीन चोला ग्रहण कर लिया है और समस्त वातावरण में नवजीवन संचार हुआ है। फाल्गुन पूर्णिमा के अवसर पर प्राचीन आर्यों का एक मुख्य पर्व वासन्ती– होली–नवान्नयेष्टि के रूप में अनादि वैदिक काल से मनाया जाता रहा है। इसे वासन्ती होली, होलक, होला, होलिका भी कहते हैं। यह पर्व भी शारदीय नवशस्येष्टि (दीपावली) की भाँति अति प्राचीन वैदिक कालीन वसन्त ऋतु में मुख्य गेहूँ, जौ, चना आदि उपज को यज्ञ में अर्पित करके ग्रहण करने का एक विशेष पर्व है। संस्कृत भाषा का होलक जिसे आजकल होला कहते हैं। अर्थ अधपका भुना हुआ अन्न है। **तृणाग्नि भृष्टार्द्धि पश्च क्षयाधान्यै होलक होला इतिभाषा** (शक कल्पद्रम कोष) इसी प्रकार **'भाव प्रकाश'** में लिखा है कि **अधिपक्व शसीन्यैस्तृणा भृष्टैश्च होलक:** अर्थात् तिनको की अग्नि से भुने हुए अधपके शमीधान्य फल वाले अन्न की बाली को होलक कहते हैं। इससे स्पष्ट है कि होलका से होलिकोत्सव अथवा होला से होली नाम नवान्नयेष्टि का ही बिगड़ा रूप है। इसलिए होलिका के नाम से कण्डा लकड़ी, तृण, घास आदि जला–जला कर उसमें जौ की नवीन बाली अधभुनी कर होला बनाते और उसी का प्रसाद ग्रहण करते हैं। नवान्नयेष्टि यज्ञ ग्रामों में बड़े विशाल रूप से सामूहिक रूप से होता था। और उसमें नवान्न का होला बनाकर सर्वप्रथम उसका आमोद–प्रमोद खुशी का उत्सव मनाते और वसन्ती रंग द्वारा एक–दूसरे को रंगकर शिष्टता, सभ्यता पूर्वक सभी मतभेद भुलाकर एक–दूसरे को गले मिलते थे और संगीत द्वारा इसे प्रदर्शित करते थे। किन्तु पुराणकारों ने इस राष्ट्रीय नवान्नयेष्टि होलिका पर्व के नाम पर एक कथा हिरण्यकशिपु की कथित बहिन **'होलिका'** की गोद में प्रहलाद को बिठाकर अग्निदाह करा दिया। जिससे होलिका जल गई और प्रहलाद बच गए। उसी आग को देखकर भक्तों ने धूल फेंक कर बुझा दिया और भक्त प्रहलाद भगवान का कीर्तन करते हुए बाहर निकले। यह कथा पद्म पुराण में पाई जाती है। इन पौराणिक भक्तों को पूछें कि उक्त नास्तिक राक्षस हिरण्यकशिपु की बहन जो जल गई और प्रहलाद भक्त को जलाना चाहती है, तो उसे ही होलिका माता की जय कहकर आप नास्तिक राक्षस राजा हिरण्यकशिपु के ही अनुयायी और उस दल के ही सिद्ध क्यों नहीं होते? इससे तो अधिक उपयुक्त और उचित था। दूसरी ओर राक्षसी होलिका के जल जाने पर राक्षसों ने भक्त प्रहलाद और उसके आस्तिक देवताओं को गालियाँ दी थी। और वही गालियाँ अथवा कबीर से बोलना यह राक्षसी कृत्य नहीं तो क्या है? आज यज्ञ वेदी पर कूड़ा कर्कट, गन्दगी तथा चोरी से लाया गया काष्ठ (लकड़ी) महीनों पहले इकट्ठा करके उसमें आग लगाना और माह भर जो पैदा हुए कीटाणुओं को जलाकर दुर्गन्ध पैदा कर देना, उसी में जौ की बालें भूनना कहाँ की बुद्धिमत्ता है? दूसरे दिन धुलहरी (धुलेंडी) के नाम पर धूल, मिट्टी कीचड़ कोलतार अथवा सड़े नाबदान का मलमूत्र लेकर वीभत्स रंगों द्वारा मुखौटा रंगना कपड़ों को बर्बाद करना इस कृत्य का होलिका पर्व से कोई सम्बन्ध नहीं है। इस अवसर पर भांग, शराब, गांजा अथवा अन्य नशे में धुत हो, माँ–बहन, भावज आदि–आदि का कभी–कभी गाली, अश्लील शब्द बकना इसे खुशी व होली का प्रदर्शन नहीं कहा जा सकता है। यह सब पुराणों की देन है। भविष्येत्तर पुराण में इस उक्त प्रकार निर्लज्जता से होली मनाने का वर्णन विस्तार से पाया जाता है। वहाँ लिखा है कि **'गालिदान तथा हास्य ललनवानर्तमुटम'**। अर्थात् गाली देना, हँसना, बकवास, लड़कियों का नाच, मनमाने वेश बनाकर वेश्याओं का नाच अपनी इच्छानुसार नि:शंक होकर करना इस प्रकार इस पर्व का वर्तमान कुत्सित रूप अत्यन्त बिगड़ा रूप जो आज समस्त देश में प्रचलित है। यह पुराण अथवा पौराणिक अन्धविश्वास की देन है। जिसके परिणाम स्वरूप अनेक स्थानों पर प्रतिवर्ष झगड़े हो जाते हैं। चलती हुई रेल, मोटरों में ईंट–पत्थर मिट्टी फेंकना यह सब कुछ होलिका पर्व का अंग नहीं हो सकता। सबसे बड़ी विडम्बना यह है कि किसी सामाजिक बुराई पर यदि धर्म और नैतिकता की मुहर लगा दी जाए उस अवस्था में उसे दूर करना और अधिक कठिन हो जाता है। ऐसी स्थिति में वैदिक आर्यों द्वारा होली आर्य पर्व पद्धति के अनुसार करके शिष्टता, सभ्यता पूर्वक वासन्ती रंग का प्रयोग कुछ अनुचित नहीं कहा जा सकता तथा मनोरंजन के लिए धर्मपूर्वक बड़े–बड़े सम्मेलन करने शिष्टतापूर्वक प्रसन्नता भी व्यक्त की जा सकती है।

आइये, हम लोग होली शिष्टतापूर्वक और सभ्यतापूर्वक एक–दूसरे से गले मिलते हुए, पुराने पतझड़ के सदृश वैर–वैमनस्य भाव मिटाकर **'वसुधैव कुटुम्बकम्'** की भावना जागृत करें। आज के दूषित वातावरण में हमें गम्भीरता पूर्वक इन सब पर विचार करना चाहिये। और आपको इस अवैदिक दूषित पद्धति में परिवर्तन करना चाहिये। ■

गतांक पृष्ठ ४१ से आगे

सैद्धान्तिक-चर्चा, भाग-८

स्मृति शेष

● पं. कमलेश कुमार अग्निहोत्री
सत्य सनातन धर्म प्रबोधक मण्डल
पुष्कर बंगलोज, कर्णावती (गुजरात)

मनीषी : मुझे यह कहते हुए अत्यन्त कष्ट की अनुभूति हो रही है कि अनेक मूर्तिपूजकों द्वारा ऐसी भी मूर्तियाँ पूजी जाती हैं कि जिनके नाम पर निरपराध प्राणियों का वध किया जाता है। क्या आपको यह ज्ञात नहीं है कि शिवजी की मूर्ति के लिए भांग, भैरवजी की मूर्ति के लिए शराब और माताजी की मूर्ति के लिए पशुबलि की आवश्यकता समझी जाती है? क्या आप अब भी मूर्ति को आत्मकल्याण में सहायक मानेंगे?

मैं दृढ़ता पूर्वक यह कह रहा हूँ कि मूर्तिपूजा की मान्यता ने मनुष्य की अध्यात्म सम्बन्धी वैचारिक शक्ति समाप्त कर दी है, जिसके परिणाम स्वरूप अनेक नर-नारी पत्थर, पीपल, पेड़, कब्र, पुस्तक, नदी, सरोवर, चित्र आदि के सम्मुख अपना सिर झुकाते और इनसे सांसारिक सुखों की याचना करते हैं। इस 'जड़पूजा' ने मानव मस्तिष्क को कितना कुण्ठित कर दिया यह सम्बन्धित व्यक्तियों द्वारा 'मूर्ति' के साथ किये जाने वाले व्यवहार से सहज ही में जाना जा सकता है। उदाहरणार्थ- मूर्ति को सुलाया, जगाया और झुलाया जाता है। इतना ही नहीं, शालिगराम जी की मूर्ति का तुलसी के पौधे से विवाह भी कराते मैंने देखा है। नासमझी का इससे अधिक और क्या प्रमाण चाहिये।

भगत : आप सत्य कह रहे हैं, मैं स्वयं यही करता था जो अभी आपने बताया। मूर्ति पूजा के औचित्य पर मैंने कभी विचार ही नहीं किया।

साधक : मूर्तिपूजा के महत्व से सम्बन्धित विचार तो मैंने भी अब तक नहीं किया। मैं तो केवल इतना ही जानता हूँ कि मूर्तिपूजा करने वाले करोड़ों व्यक्तियों में उच्च कोटि के अनेक विद्वान भी हैं, और नित्य नए मन्दिरों तथा मूर्तियों का निर्माण हो रहा है। इसलिए मूर्तिपूजा की उपयोगिता एवं आवश्यकता मानने पर मुझे विवश होना पड़ता है।

मनीषी : आपकी यह मान्यता बुद्धि संगत नहीं है। देखिये- वर्तमान में करोड़ों व्यक्ति ईश्वर की सत्ता पर विश्वास नहीं करते, उनमें भी अनेक उच्च कोटि के विद्वान् हैं। तो क्या ईश्वर के अस्तित्व को नहीं माना जावे? आप गम्भीरता से विचार कीजिये और आपको विदित होना चाहिये कि मन्दिर-मूर्ति निर्माण के साथ रोजी-रोटी का सम्बन्ध है। इनके कारण लाखों परिवार पल रहे हैं और बहुत व्यक्ति बिना किसी परिश्रम के वैभव सम्पन्न बने हुए हैं। अत: आर्थिक दृष्टि से जो अपने लिए मूर्तिपूजा को आय का अच्छा साधन समझते हैं वे इसे उचित बतावें और समर्थन दें, यह तो स्वाभाविक है।

अधिक व्यक्ति जो करे वे सभी कार्य करने योग्य नहीं माने जा सकते। उदाहरणार्थ- इस समय धरती के अधिकांश मनुष्य मादक द्रव्यों और अभक्ष्य पदार्थों का सेवन करते, झूठ बोलते, ईर्ष्या-द्वेष की भावना रखते, इत्यादि... क्या वे अनुकरणीय कहलाने योग्य हैं? आप सत्य मानिये, **मूर्तिपूजा एक व्यवसाय है, आत्मिकोन्नति का साधन नहीं।**

ईश्वर के आनन्द की अनुभूति कराने में तो **'अष्टांगयोग'** सहायक होता है, जिसकी जानकारी मैंने कल श्री **'भगत'** जी को दी थी।

साधक : सामान्य स्त्री-पुरुष अष्टांगयोग को नहीं समझ सकते और न आचरण से स्वीकार कर पाते। ऐसी स्थिति में सर्वसाधारण के लिए मूर्तिपूजा ही भगवद प्राप्ति का एक सरल साधन है।

मनीषी : मैं स्पष्ट कर चुका हूँ कि मूर्तिपूजा का ईश्वरोपासना से कोई सम्बन्ध नहीं है। फिर भी आप इसका ईश्वर प्राप्ति में योगदान बता रहे हैं।

साधक : देखिये- जैसे आरम्भ में विद्यार्थी क, ख, ग आदि अक्षर सीखते और कालान्तर में बड़ी पुस्तकें पढ़ लेते हैं, वैसे सामान्य व्यक्ति मूर्तिपूजा करते-करते आगे चलकर ईश्वर तक पहुँच जाते हैं।

मनीषी : अभी थोड़ी देर पहले तो आपने कहा था कि मूर्तिपूजा करने वाले करोड़ों व्यक्तियों में उच्च कोटि के अनेक विद्वान भी हैं और अब कह रहे हैं कि 'सामान्य व्यक्ति मूर्तिपूजा करते-करते आगे चलकर ईश्वर तक पहुँच जाते हैं।आप अपने हृदय पर हाथ रखकर कहिये, आपने मूर्तिपूजा करते हुए इतना समय बिताया, क्या आप ईश्वर तक पहुँच गए? श्री **'भगत'** जी भी बताएँ।

भगत : मैं तो अब तक मूर्ति के पास ही रहा, ईश्वर तक नहीं पहुँच पाया।

साधक : श्री **'भगत'** जी ठीक कह रहे हैं, मुझे भी लगभग चालीस वर्ष हो गए, मूर्ति पूजा करते-करते, मैं भी जहाँ का तहाँ ही हूँ।

मनीषी : फिर आप यह किस आधार पर कह रहे हैं कि मूर्तिपूजा ईश्वर प्राप्ति में सहायक होती है?

साधक : हम अपने विद्वानों से यही सुनते और मान्य ग्रन्थों में पढ़ते रहते हैं, और तो मेरे पास कोई आधार नहीं है।

मनीषी : सुनिये! **अहिंसा, सत्य, अस्तेय-** किसी भी प्रकार की चोरी न करना, **ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह** का विधिवत पालन और **पवित्रता, सन्तोष, तप, स्वाध्याय,** ईश्वर के प्रति सर्वात्मना समर्पित भाव (इन्हें दर्शन की भाषा में **'यम-नियम'** कहते हैं) ये ईश्वर प्राप्ति के क, ख, ग हैं आपकी तथाकथित मूर्तिपूजा नहीं।

आपने विद्यार्थियों का उदाहरण दिया। इस सम्बन्ध में मेरा कहना यह है कि विद्यार्थी सदा एक ही कक्षा में नहीं रहते। (यदि रहें तो उन्हें मन्दबुद्धि माना जाता है) वे उत्तरोत्तर प्रगति करते हैं। जबकि मूर्तिपूजक जीवन भर मूर्ति तक ही सीमित रहते हैं। आध्यात्मिक स्तर पर अपना कुछ भी विकास नहीं कर पाते। यदि किसी की आत्मिकोन्नति होती भी है तो उसमें उनका सद्ज्ञान, सच्चरित्र, स्वकर्त्तव्यपालन आदि और तत्सम्बन्धी पुरुषार्थ सहायक बनता है, मूर्तिपूजा का फल नहीं।

साधक : आज की **'सैद्धान्तिक चर्चा'** से मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि आप मूर्ति को नहीं मानते। **(शेष भाग आगामी अंक में)** ■

हम मोदीजी और सरकार को झुकाएँगे और झुकाकर ही रहेंगे

● गोविन्दराम आर्य
उप प्रधान, मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा, भोपाल
देपालपुर, जिला इन्दौर (म.प्र.)
चलभाष : ०९४२४०१२४७१

मोदीजी व मोदीजी की सरकार निश्चित रूप से झुकेगी! झुकेगी!! झुकेगी!!! अगर झुकाना हो तो देश की समस्त राजनीतिक पार्टियाँ, देश के सभी किसान भाई देश की समस्त संस्थाएँ, हम सब मिलकर मोदीजी व मोदी सरकार को झुकाएँ, मोदीजी निश्चित रूप से झुकेंगे और उनकी सरकार भी नतमस्तक होकर झुकेगी। मोदीजी व उनकी सरकार केवल झुकेगी ही नहीं, अपने आप में झुककर गर्व महसूस भी करेगी। इतना ही नहीं, देश की समस्त संस्थाएँ, देश की जनता को धन्यवाद भी देंगे और मोदीजी उनको और उनकी सरकार को झुकाने के लिए खुशी, खुशी हृदय से झुकाने वाले सभी का आभार भी मानेंगे। इतना ही नहीं झुकाने वाले मोदीजी व उनकी सरकार एवं झुकाने वाली सभी बीजेपी सहित राजनीतिक पार्टियाँ, सभी किसान बन्धु, सभी संस्थाएँ, देश की जनता सभी, मोदीजी व केन्द्र सरकार व राज्य सरकारों के साथ पूरा देश मिलकर तीन दिन का जश्न भी दीप जलाकर मनाएँगे।

विश्व के देश जो भारत के साथ हैं व जो भारत के विपक्ष में है, सभी आश्चर्य होकर भारत को देखेंगे व आश्चर्य चकित हो जाएँगे। पक्ष व विपक्ष कैसा होना चाहिए, विश्व समुदाय भारत से सीखने की इच्छा जाहिर करेंगे तो आइए वह कौनसा ऐसा मुद्दा है, जिससे पक्ष और विपक्ष ऐसे मुद्दे पर एकमत होकर एक साथ सब मिलकर जश्न मनाए? वह मुद्दा है। देश में गाय आदि मूक पशुओं की हत्या तत्काल बन्द की जाएँ, इन मूक पशुओं को काटने के, कत्ल करने के कारखानों को तुरन्त कत्ल कर दें, अविलम्ब समाप्त कर दें। हम सभी किसान बन्धु राजनीतिक पार्टी व देशवासी ऐसे मुद्दे को उठाएँ, कृषि कानून समाप्त हो, ऐसा मुद्दा नहीं उठाएँ, क्योंकि कृषि कानून तो किसानों के हितों में ही नहीं बल्कि पूरे देश के हित में है। जो मुद्दा उठाना चाहिए वह नहीं उठा रहे हैं। वोट की राजनीति से विपक्षी पार्टियों से प्रेरित होकर देश के कुछ लोग जो राष्ट्रहित व जनहित में भी नहीं है। ऐसे मुद्दे किसान के नाम से उठाकर राष्ट्र का नुकसान कर रहे हैं।

महत्वपूर्ण मुद्दा किसान हित में यह है कि गाय बचेगी, मूक पशु बचेंगे तो खेती बचेगी, खेती बचेगी तो किसान बचेगा व किसान बचेगा, तो देश बचेगा, देश बचेगा तो हम सब बचेंगे।

गाय आदि मूक पशुओं के जीवन बचाने पर वैदिक शास्त्र व अन्य मत, पंथ व शास्त्रों के विचार उत्तम हैं। लगभग दो अरब वर्ष सबसे पुराना ग्रन्थ वेद में गाय एवं अन्य मूक पशुओं का जीवन बचाने विषयक सैकड़ों मंत्र आए हैं। अथर्ववेद में १-१६-४ में जो दुष्ट हमारे गाय, घोड़े, पशुओं तथा मनुष्यों की हत्या करता है। उसे हमें शीशे की गोली से बींध देना चाहिए। इसी तरह ऋग्वेद ८-१०१-१५ व अथर्ववेद में भी गायों को एवं पशुओं को अपनी सन्तान की तरह पालो, सृष्टि प्रकरण, १८-१५६ अग्निपुराण आदि इसी तरह मनुस्मृति, बोद्ध धर्म में ब्राह्मण धम्मिक सूत्र में, जैन धर्म, गुरु नानक, बाइबल, इसाइयाह ६६-३ पैगम्बर साहब नाशियत हादी पुस्तक से फतवे हुमायूनी भाग १ प्र. ३६० में गाय की कुर्बानी इस्लाम धर्म का नियम नहीं है। बैल को मारना एक मनुष्य के कत्ल के समान है। संविधान धारा४८ में गाय को मारना निषेध है।

हायकोर्ट राजस्थान ने केन्द्र सरकार से सिफारिश की है कि गाय को भारत सरकार द्वारा शाकाहारी पशुओं में भारत का राष्ट्रीय पशु घोषित किया जाए। नेपाल ने अपने संविधान में गाय को राष्ट्रीय पशु घोषित किया है। देश के महापुरुषों एवं विदेशी महापुरुषों की दृष्टि में गाय एवं मूक पशुओं की हत्या करना पाप है। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने **'गो करुणा निधि'** लिखी, लोकमान्य तिलक ने कहा था, देश आजाद होगा तब सबसे पहले एक कलम की नोक से गो हत्या एवं मूक पशुओं की हत्या बन्द कर कठोर कानून बनाएँगे। आओ हम कृषि कानून का विरोध समाप्त कर सरकार से अनुरोध करें कि गाय व मूक पशुओं की हत्या करना शीघ्र बन्द करें। गाय को शाकाहारी पशुओं में राष्ट्रीय पशु घोषित किया जाए।

ऐसा आन्दोलन करने से हम सभी सफल होंगे, इससे विश्व के देशों को भी सीख मिलेगी कि राष्ट्रहित में विपक्ष को ऐसे मुद्दे सरकार के सामने रखना चाहिए। वर्तमान में जो मुद्दे उठा रहे हैं, उठते आ रहे हैं। वे अधिकतर कुर्सी हित के ही होते हैं।

वर्तमान में राजनीतिक प्रेरित जो कुर्सी हित के आन्दोलन से व भारत बन्द से देश कमजोर होता है। राष्ट्र का व हम सबका नुकसान ही होता है तो हम ऐसा क्यों करें। गाय, भैंस, बकरी, भेड़, घोड़ा, ऊँट आदि पशु हमारी खेती से व हमारी किसान भाइयों की जीविका से जुड़े हैं। उनके जीवनदान के लिए हम आन्दोलन करें और ऐसे आन्दोलन परोपकारी होकर कृषि हित में ही नहीं अपितु राष्ट्रहित व किसान हित में एवं हमारे सभी वर्ग के लोगों के हित में होते हैं। ऐसे मुद्दों को सब मिलकर उठाएँ। सरकार एक दिन या दो दिन की आपस की चर्चा से ही आपकी बात मान भी लेगी और आपको धन्यवाद भी देगी। आपका आभार भी मानेगी, ऐसे मुद्दों को लेकर किए जाने वाले आन्दोलनों के लिए न तो चक्काजाम करना पड़े, बस नहीं जलाना पड़े, आगजनी व शासकीय वस्तुओं में तोड़फोड़ भी नहीं करना पड़े, कई दिनों तक अपने ही लोगों का रास्ता रोककर सड़क पर सोना भी नहीं पड़े, जनहानि भी नहीं होगी, भारत बन्द आदि राष्ट्र विरोधी कार्य नहीं करना पड़े। राष्ट्र हित में व जनहित में कार्य करें, राष्ट्र को कमजोर करने के लिए कार्य नहीं करें।

अत: हम कृषि कानून वापस लो आन्दोलन को समाप्त कर यह मुद्दा उठाएँ कि गाय को शाकाहारी पशुओं में राष्ट्रीय पशु घोषित किया जाए व मूक पशुओं जो हमारे कृषि जीवन से जुड़े हैं उनकी हत्या व कत्ल अविलम्ब बन्द करें। ■

व्यसन मुक्ति अभियान

तम्बाकू : एक विष

तम्बाकू में एक प्रकार का नहीं, चार प्रकार का विष पाया जाता है- (१) निकोटिन (२) कोलतार (३) आर्सेनिक और (४) कार्बन मोनोऑक्साइड। अस्तु, इनका सेवन करने से इन विषों का शरीर में पहुँचना स्वाभाविक ही है। विष मनुष्य के लिए प्रतिकूल तत्व है। उसका धर्म मनुष्य को अमृतत्व से मृत्यु की ओर बढ़ाता है। **जिसका शरीर विषाक्त होगा, उसका मन विष-रहित रह ही नहीं सकता। जिसका मन विषैला होगा, उसकी बुद्धि उल्टी हो जाएगी। बुद्धि की विपरीतता से मनुष्य की नैतिक मृत्यु हो जाती है और वह अपराधों एवं अपकर्मों की ओर उन्मुख होने लगता है।**

भौतिक से लेकर आत्मिक उन्नति तक, किसी भी प्रकार की उन्नति के लिए बुद्धि-तत्व का सतेज होना नितांत आवश्यक है। जिनकी बुद्धि कुन्द होती है, उनके लिए उन्नति कर सकना सम्भव नहीं। उन्नति का अवसर पहचान सकना, उसकी योजना बना सकना, उसके लिए उपयुक्त मार्ग निकाल सकना और उस पर अपनी कर्मशक्ति को नियोजित कर सकना, बुद्धि-तत्व की कुशाग्रता से ही सम्भव हो सकता है। बुद्धि-तत्व बड़ा ही सूक्ष्म एवं सुकुमार होता है। इसकी रक्षा तथा वृद्धि विशुद्ध सात्विक साधनों से ही की जाती है। तम्बाकू सर्वांग में तामसी पदार्थ है। इसके सेवन से बुद्धि-तत्व को हानि पहुँचना सुनिश्चित तथ्य है। सफलता प्राप्त करने के लिए जिस बौद्धिक कुशाग्रता, एकाग्रता, अव्यग्रता, स्फूर्ति, तत्परता एवं स्थिरता की आवश्यकता रहती है, तम्बाकू का सेवन उसमें बाधक बनता है। तम्बाकू से कैंसर होने का खतरा अधिक रहता है।

प्रकृति सम्मत जीवनयापन आध्यात्मिक प्रगति के लिए दूसरी शर्त है। कृत्रिमता का कणमात्र भी उस ईश्वरीय पथ में पहाड़ जैसा अवरोधक है। संसार के सारे नशे कृत्रिमता की पराकाष्ठा है। यह मनुष्य की अनिवार्य आवश्यकता, साधारण आवश्यकता अथवा सौख्य आवश्यकता आदि किसी भी आवश्यकता में नहीं आते, किन्तु मनुष्य को अपना विषयी बनाकर अनिवार्य आवश्यकताओं के भी आगे जा बैठते हैं। जहाँ आध्यात्मिक प्रगति के लिए मनुष्य का हर प्रकार से निर्व्यसन एवं निर्विकार होना अनिवार्य है, वहाँ तम्बाकू जैसा मादक पदार्थ मनुष्य को अनिवार्य रूप से शारीरिक, मानसिक तथा बौद्धिक तीनों प्रकार से मंद एवं मलीन बनाता रहता है।

आध्यात्मिक प्रगति के लिए ब्रह्मचर्य की उपेक्षा किसी प्रकार भी नहीं की जा सकती। ब्रह्मचर्य का संचय ही तो विवेक तत्व को तेजस्वी बनाता है, जो कि आत्मदर्शन में दीपक का काम किया करता है। तम्बाकू सेवन करने वाले का ब्रह्मचर्य सुरक्षित रह सकना सम्भव नहीं। तम्बाकू मादक एवं उत्तेजक पदार्थ है, जो कि क्रोध की ही तरह कामवृत्ति को भी बढ़ावा देता है। रक्त की अनावश्यक उष्मा उस शांति एवं शीलता को आने ही न देगी, जो कि काम-विकार के शमन में सहायक होती है।

व्रत-उपवास, पूजा-पाठ, ध्यान-धारणा आदि का निर्वाह आध्यात्मिक यात्रा के लिए बल-सम्बल की व्यवस्था करता है। निराहार व्रत, उपवासों में भी तम्बाकू की तलब रोके नहीं रुकती, पूजा-पाठ में एकाग्रता नहीं आने देती और ध्यान-धारणा में भी उसकी आवश्यकता व्यवधान डालती है जिससे साधक के सारे नियम-निर्वाह भंग एवं भ्रष्ट हो जाते हैं। इस तम्बाकू का तुच्छ व्यसन मनुष्य की आध्यात्मिक यात्रा में बड़ा अवरोध बना रहता है।

अस्तु, तन, मन, धन के साथ बुद्धि-विवेक तथा आत्मा का ह्रास करने वाली तम्बाकू को संकल्प पूर्वक त्यागकर मनुष्य को आत्मविश्वास, आत्मबल एवं मानसिक महानताओं की वृद्धि के साथ मधुर एवं मांगलिक जीवन का द्वार खोल लेना चाहिये। ■

● **शिव कुमार**

जी-१३ए, भारी पानी कॉलोनी, रावतभाटा (राज.)

मूल रचनाकार : स्व. श्रीयुत मुंशी दरबारीलाल 'कविरत्न'

हिन्दी की वर्ण मंजु मञ्जरी

गतांक पृष्ठ ४२ से आगे

● **चौ. बदनसिंह 'पूर्व विधायक'**

१३/१०८, चारबाग, शाहगंज आगरा (उ.प्र.)

चलभाष : ९९२७४१६२००

व्यंजन वर्ण : (५) 'च'

मनहरण: चारु चन्द्र चन्द्रिका चटक चौगुनी चितौनि,
चंचरीक चम्पक चमेली कौ चुनौती है।
चन्दन चरित चाव चेवलीन चुनरी में,
चकित च चितवति चरव चखनौती है।
चोखी चाल चलिवे पै चम्पत चतुल गज,
चित्रिनी चितौनि की चपेट चौगुणौती है।
चंचल चतुल चक्ष चोंप चोप चर्चरीक,
कवि दरबारी लाल मदन मनौती है।

अर्थ : 'च' हिन्दी वर्ण माला का छठा व्यंजन है। इसका उच्चारण स्थान तालु है। महाकवि दरबारीलाल ने मनहरण छन्द जो छप्पय छन्द का एक भाग है, के द्वारा चित्रिणी नायिका की नेत्र-चितवन एवं मधुर चाल का सवर्णन किया है। वे उस नायिका की नेत्र चितवन की चमक चन्द्रमा की चमक से सौ गुनी अधिक बताते हैं। वह चमक जिस सुन्दर सुगन्धित श्वेत पुष्पकारिणी पुष्पधारिणी चमेली पर भौंरा टूट-टूट कर आसक्त होता है। उस चमेली को भी चुनौती देकर परास्त करती है। चन्दन की सुगन्धी से सराबोर रेशमी चुनरी में नेत्रों की चितवन फिर-फिर बार-बार देखती है। नेत्रों की ललक सबको चकित कर देती है। चित्रिणी नायिका की सुन्दर चाल के आगे मनोहर हाथी जो अपने चाल से प्रसिद्धि पाए हुए हैं, उनकी चाल भी फीकी पड़ जाती है। और उसकी आकर्षक चितवन उसमें चौगुनी चपत लगा देती है। उसके भँवर स्याह बालों का विन्यास होने से उनकी सुसजावट से चंचल नेत्र उमंगित होकर कामदेव से भी मनौती करवाते हैं। नायिका नेत्र चितवन चमेली को, मधुर चाल मनोहर गज चाल को परास्त करने पर कामदेव भी अपनी इच्छा पूर्ति (कामना पूर्ति) हेतु उसकी खुशामद करता है और कवि दरबारीलाल का मनोहरण छन्द वर्णन पाठकों का मन हरण करता है। ■

महासभा प्रधान नेमीचन्दजी शर्मा का प्रथम मध्यप्रदेश आगमन

मध्यप्रदेश की औद्योगिक राजधानी इन्दौर की धरा पर महासभा प्रधान ने किया ध्वजारोहण

महासभा स्थापना की मूल अवधारणा जांगिड ब्राह्मण समाज में वैदिक धर्म सिद्धान्तों का प्रचार–प्रसार को पूर्ण करते

नवनिर्वाचित राष्ट्रीय प्रधानजी का स्वागत... अभिनन्दन... एवं वरिष्ठ कार्यकर्ता समागम आयोजन सम्पन्न

अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा, दिल्ली के नवनिर्वाचित राष्ट्रीय प्रधान श्री नेमीचन्दजी शर्मा के स्वागतार्थ तथा मध्यप्रदेश निवासी वरिष्ठ कार्यकर्ताओं के सम्मानार्थ **'वैदिक संसार'** के तत्वावधान में वैदिक संसार के प्रकाशक एवं जांगिड ब्राह्मण प्रदेश सभा मध्यप्रदेश के पूर्व प्रदेशाध्यक्ष सुखदेव शर्मा द्वारा एक आयोजन दिनांक २५–२६ जनवरी २०२१ को आर्य समाज, दयानन्दगंज, इन्दौर पर कोरोना महामारी के कारण लघु रूप में आयोजित किया गया। आयोजन पूर्ण गरिमा तथा वैदिक धर्म प्रचार–प्रसार के उद्देश्य की पूर्णता के साथ निर्विघ्न हर्षोल्लास पूर्वक सम्पन्न हुआ।

महासभा प्रधान के रूप में श्रीमान नेमीचन्दजी शर्मा का यह प्रथम मध्यप्रदेश आगमन था। आपने आयोजन की अध्यक्षता कर आयोजन को गरिमा प्रदान की। इन्दौर प्रवेश के पश्चात् सीधे इन्दौर संसदीय क्षेत्र के सांसद महोदय श्री शंकर लालवानीजी के कार्यालय विभिन्न स्थानों से पधारे समाजजनों के साथ पहुँचकर फूलों का गुलदस्ता भेंट कर शिष्टाचार भेंट की। सांसद महोदय द्वारा यथेष्ट सम्मान प्रदान करते हुए वार्तालाप किया तथा इन्दौर संसदीय क्षेत्र के नागरिकों की ओर से मोतियों की माला पहनाकर प्रधानजी का स्वागत किया व सामूहिक चित्र खिंचवाया। आपने ८ बार इन्दौर संसदीय क्षेत्र का प्रतिनिधित्व कर चुकी जन–जन की प्रिय पूर्व लोकसभा अध्यक्ष श्रीमती सुमित्रा महाजन 'ताई' से भी फूलों का गुलदस्ता भेंट कर शिष्टाचार भेंट की। जहाँ पर इन्दौर नगर के पूर्व महापौर कृष्णमुरारीजी मोघे से भी आपकी भेंट तथा वार्ता हुई।

आर्य जगत् की सुविख्यात भजनोपदेशिका विश्वकर्मा कुलगौरव सुश्री अंजलि आर्या के मुखारविन्द से गणतन्त्र दिवस की पूर्व सन्ध्या पर भजन सन्ध्या तथा २६ जनवरी को प्रात: महासभा प्रधानजी के करकमलों से ओ३म् ध्वज तथा राष्ट्रीय ध्वज ध्वजारोहण पश्चात् अंजलिजी के साथ राष्ट्रीय प्रार्थना और राष्ट्रगान का गायन उपस्थितों द्वारा किया जाकर ध्वजारोहण पश्चात् सुश्री अंजलि आर्या के ब्रह्मत्व तथा श्री नेमीचन्दजी के मुख्य यजमानत्व व पधारे विशिष्ट अतिथियों के यजमानत्व में यजमानों को यज्ञोपवीत धारण करवाकर देवयज्ञ सम्पन्न किया जाना, देवयज्ञ पश्चात् अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा की स्थापना के पूर्व का अतीत, महासभा का इतिहास और दिशाविहीन वर्तमान को लेकर विशेष रूप से प्रकाशित वैदिक संसार के जनवरी २०२१ के **'ऐतिहासिक अंक'** का विमोचन प्रधानजी, अंजलिजी तथा अतिथि महानुभावों के करकमलों द्वारा किया जाना एवं भजन सन्ध्या और देवयज्ञ में ब्राह्मणत्व को जानना उसे आत्मसात करना, यज्ञोपवीत की गरिमा को लेकर भजन व उपदेश आयोजन के प्रमुख आकर्षण रहे।

मुख्य अतिथि के रूप में श्री मोहनजी जांगिड उपाध्यक्ष आर्य समाज गाँधीधाम व जांगिड ब्राह्मण प्रदेश सभा गुजरात के प्रदेशाध्यक्ष उपस्थित रहे। विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री गुरुदत्तजी शर्मा महामन्त्री आर्य समाज गाँधीधाम व अध्यक्ष जांगिड ब्राह्मण समाज गाँधीधाम, श्री नन्दलालजी जांगिड जयपुर पूर्व प्रदेशाध्यक्ष सहकारी कर्मचारी संघ राजस्थान, श्री नरेशजी दम्मीवाल जोधपुर वरिष्ठ समाज सेवी, श्री रमेशचन्द्रजी खरनालिया औरंगाबाद वरिष्ठ समाजसेवी, श्री गोविन्दरामजी आर्य इन्दौर सम्भाग प्रभारी म.भा. आर्य प्रतिनिधि सभा भोपाल, श्री गितेश जांगिड जयपुर सम्पादक विश्वकर्मा गौरव ने उपस्थित रहकर आयोजन को गरिमा प्रदान की।

यज्ञ के पश्चात् समस्त उपस्थितजनों तथा मध्यप्रदेश के समाजजनों की ओर से वैदिक संसार परिवार द्वारा राष्ट्रीय प्रधान नेमीचन्दजी तथा अतिथियों का स्वागत–अभिनन्दन किया गया। ग्वालियर, शाजापुर, देवास, भोपाल, हरदा, खण्डवा, बुरहानपुर, खरगोन, बड़वानी, झाबुआ, धार, नीमच, रतलाम, उज्जैन तथा इन्दौर के वरिष्ठ कार्यकर्ताओं का सम्मान गायत्री मन्त्र पट्टिका पहनाकर राष्ट्रीय प्रधान के करकमलों द्वारा अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा दिल्ली की ११४ वर्ष पूर्व स्थापना के समय बनाए गए १० नियम, जिसकी मूल भावना आर्य समाज के १० नियमों की है, उपरोक्त १० नियम अंकित स्मृति चिह्न प्रदान कर किया गया। आयोजनकर्ता की ओर से फूलों एवं फूलमालाओं का उपयोग नहीं करना प्रेरणादायक तथा सराहनीय कार्य था।

अतिथियों एवं कार्यकर्ताओं की भोजन व्यवस्था करणावत भोजनालय तथा विश्राम व्यवस्था करणावत होस्टल, आर्य समाज दयानन्द गंज तथा आर्य समाज मल्हारगंज व नृसिंह वाटिका पर की गई। आयोजन व्यवस्था में श्री गोविन्दरामजी आर्य, श्री रमेशचन्द्र पंवार इन्दौर, श्री मुनिदेवजी शर्मा पूर्व जिलाध्यक्ष ग्वालियर, श्री नारायणजी विश्वकर्मा पूर्व जिलाध्यक्ष हरदा, श्री पीठालालजी जांगिड पूर्व जिलाध्यक्ष शाजापुर, श्री माँगीलालजी दुगेसर पूर्व जिलाध्यक्ष झाबुआ, गोविन्द पण्डित जिलाध्यक्ष ग्वालियर, श्री महावीरजी शर्मा जिलाध्यक्ष हरदा, श्री विजयजी शर्मा जिलाध्यक्ष देवास, श्री यशवन्तजी धीर जिलाध्यक्ष नीमच, श्री नाथूलालजी शर्मा पूर्व जिलाध्यक्ष बुरहानपुर, श्री मोहनलालजी शर्मा धरमपुरी, श्री रामप्रसादजी आर्य गलौंडा, श्री विकास जी शर्मा (झारखण्ड), श्री भगवान सहायजी गोठड़ीवाल इन्दौर तथा आपके सुपुत्र श्री ओमप्रकाश गोठड़ीवाल, श्री मनोज गोठड़ीवाल व सुपौत्र का सराहनीय सहयोग प्राप्त हुआ। वैदिक संसार परिवार राष्ट्रीय प्रधान नेमीचन्दजी शर्मा तथा समस्त पधारे अतिथियों, कार्यकर्ताओं व सहयोगियों का हृदय की गहराइयों से हार्दिक आभार व्यक्त करता है। ■

DOLLAR
MAN

BIGBOSS

FIT HAI BOSS

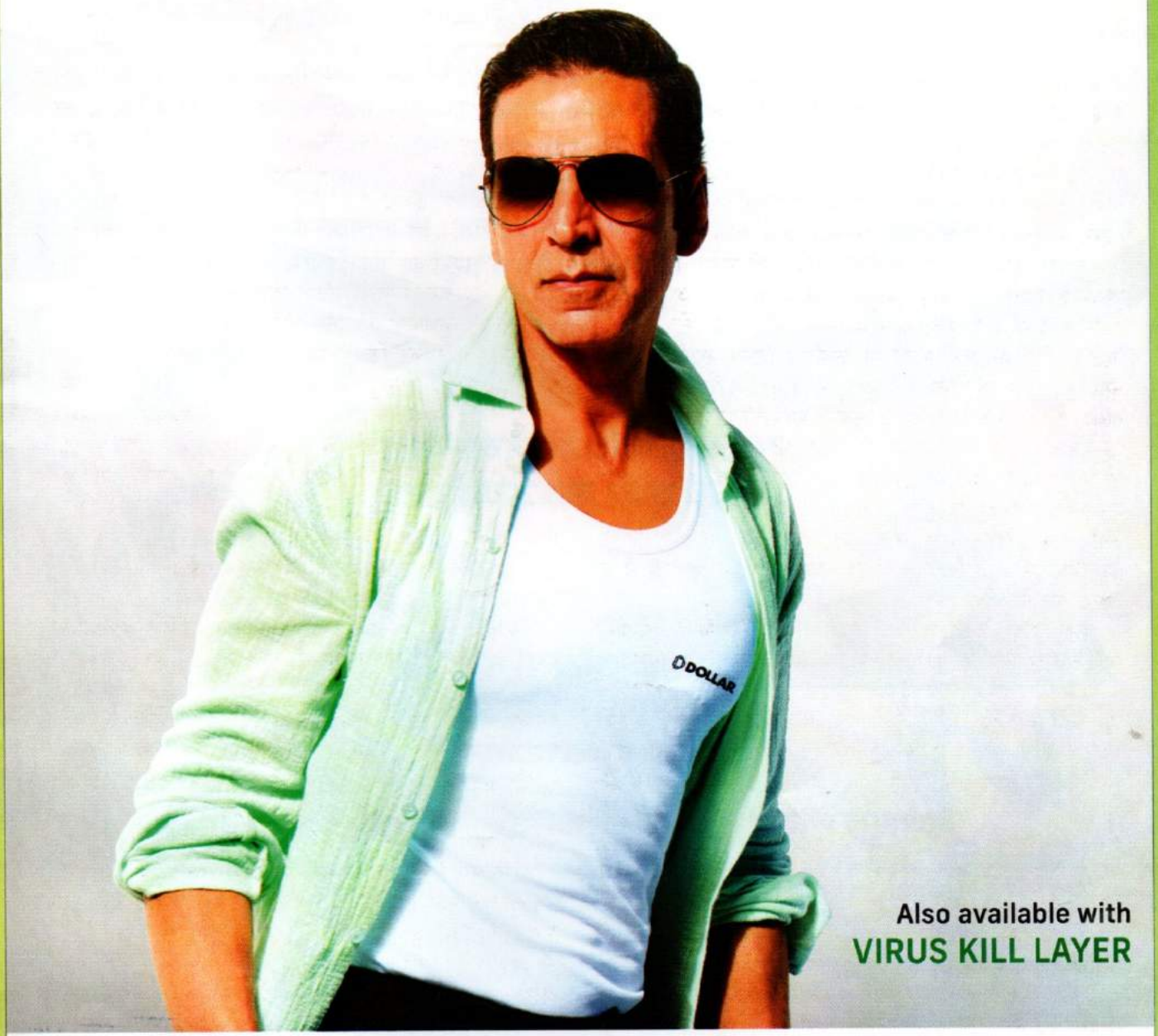

Also available with
VIRUS KILL LAYER

| www.dollarglobal.in | Buy Online: www.dollarshoppe.in | Also available at all leading shopping portals
Dollar products are available in over 800 cities/towns and 100,000 MBOs across India | Govt. Certified STAR EXPORT HOUSE

एम.पी.एच.आई.एन.-२०१२/४५०६९ • सम्पादक : गजेश शास्त्री • डाक पंजीयन : एम.पी./आई.डी.सी./१४०५/२०२१-२३

आइये, इस गणतंत्र दिवस पर प्रदेशवासियों की सहभागिता की सुदृढ़ बुनियाद पर हम
ऐसे आत्मनिर्भर मध्यप्रदेश के निर्माण का संकल्प लें, जो देश में समानता, सद्भाव और सबसे तेज प्रगति की मिसाल बने।

देश के लिए बलिदान होने वाले वीर सपूतों को शत्-शत् नमन।

शिवराज सिंह चौहान
मुख्यमंत्री

D18185

आत्मनिर्भर हों जन-जन
नवचेतना नवऊर्जा का
गणतंत्र

श्री नरेन्द्र मोदी
प्रधानमंत्री

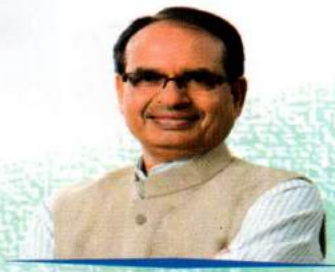

श्री शिवराज सिंह चौहान
मुख्यमंत्री

प्रदेशवासियों को 72वें गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ

खुशहाल जीवन और आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ते कदम...

- आत्मनिर्भर मध्यप्रदेश का रोडमैप जारी। यह पहल करने वाला मध्यप्रदेश देश का पहला राज्य। नीति आयोग ने की इस पहल की प्रशंसा।
- मनरेगा योजना में अब तक 86 लाख 37 हजार मजदूरों को रोज़गार, इनमें 36 लाख 87 हजार महिलाएं। प्रतिदिन लगभग 20 लाख श्रमिकों का नियोजन। देशभर में सर्वाधिक।
- प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना क्रियान्वयन में मध्यप्रदेश प्रथम।
- कृषि क्षेत्र में मध्यप्रदेश देश का "मोस्ट इम्प्रूव्ड" राज्य।
- सुशासन को मूर्तरूप देने के लिए एकल नागरिक डेटाबेस।
- कोविड-19 का टीकाकरण अभियान शुरू।
- मिलावटखोरी अब संज्ञेय अपराध।
- 'वन नेशन-वन राशन कार्ड' योजना शुरू, 21 राज्यों की उचित मूल्य की दुकानों पर राशन उपलब्ध।
- 781 करोड़ की अटल प्रोग्रेस-वे परियोजना का क्रियान्वयन।
- प्रदेश के इतिहास में 2789.55 लाख यूनिट बिजली सप्लाई का नया रिकार्ड।
- प्रदेश में पर्यटन को बढ़ावा देने के लिये पर्यटन कैबिनेट का गठन।
- ग्वालियर और ओरछा यूनेस्को की ऐतिहासिक शहरी परिदृश्य (Historical Urban Landscape) की ग्लोबल रिकमेन्डेशन योजना के तहत चयनित।
- शंकर शाह और रघुनाथ शाह की स्मृति में जबलपुर में स्मारक निर्माण की कार्यवाही प्रगति पर।
- धार्मिक स्वातंत्र्य अब बना कानून।

मध्यप्रदेश जनसम्पर्क द्वारा जारी

स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक : सुखदेव शर्मा, इन्दौर द्वारा इन्दौर ग्राफिक्स, २४, कुँवर मण्डली से मुद्रित एवं १२/३, संविद नगर, इन्दौर-१८ से प्रकाशित